भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

नव प्रभा

बीईएल कार्पोरेट कार्यालय
की गृह पत्रिका

भारत की आज़ादी में हिंदी की भूमिका

विशेषांक

अप्रैल–सितंबर 2022
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका, अंक – 13

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS

दृष्टि, ध्येय, मूल्य और उद्देश्य

दृष्टि

पेशेवर इलेक्ट्रॉनिकी में विश्व–स्तरीय उद्यम बनना।

ध्येय

रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी और पेशेवर इलेक्ट्रॉनिकी के अन्य चुने हुए क्षेत्रों में गुणता, प्रौद्योगिकी और नवीनता के जरिए ग्राहक–केन्द्रित, वैश्विक प्रतिस्पर्धी कंपनी बनना।

मूल्य

- ग्राहक को सर्वोपरि रखना।
- पारदर्शिता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से कार्य करना।
- व्यक्तियों पर विश्वास करना और उनका सम्मान करना।
- टीम भावना को पोषित करना।
- अत्यधिक कर्मचारी – संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास करना।
- लोचता और नवीनता को प्रोत्साहित करना।
- अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने का प्रयत्न करना।
- संगठन का हिस्सा होने पर गर्व होना।

उद्देश्य

- गुणता, सुपुर्दगी और सेवा की मांगों को पूरा करते हुए अत्याधुनिक उत्पादों व समाधानों को प्रतिस्पर्धी कीमतों में प्रदान करते हुए ग्राहक–केन्द्रित कंपनी बनना।
- लाभप्रद विकास हेतु आंतरिक संसाधनों को सृजित करना।
- संस्थागत अनुसंधान व विकास, रक्षा / अनुसंधान प्रयोगशालाओं तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी के जरिए रक्षा इलेक्ट्रॉनिकी में प्रौद्योगिकीय नेतृत्व हासिल करना।
- निर्यात पर जोर देना।
- लोगों के लिए सतत् शिक्षण व टीम–कार्य के जरिए उनकी पूरी क्षमता को प्राप्त कराने हेतु सुविधापूर्ण परिवेश सृजित करना।
- ग्राहकों को उनके धन का पूरा प्रतिफल प्रदान करना और शेयरधारकों हेतु संपदा सृजित करना।
- कंपनी के निष्पादन को अंतर्राष्ट्रीय रूप से सर्वोत्कृष्ट श्रेणी के साथ सतत् रूप से निर्देश–चिह्नित करना।
- विपणन क्षमताओं को वैश्विक मानकों तक बढ़ाना।
- स्वदेशीकरण के माध्यम से आत्म–निर्भरता का प्रयत्न करना।

विषय–सूची

01	हिंदी साहित्य और हमारी आजादी–अटूट बंधन	01
02	जन आंदोलनों की सफलता में हिंदी पत्रकारिता	04
03	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का बहुआयामी योगदान	06
04	आजादी की गाथा दोहराती हिंदी भाषा	10
05	वैदिक साहित्य में महिलाओं का चित्रण – तटस्थ विश्लेषण	11
06	स्वतंत्रता में हिंदी काव्य का अतुल्य योगदान	16
07	हिंदी बिना आज़ादी न मिलती	18
08	आजादी में हिंदी की भूमिका	19
09	बरसात की एक रात	20
10	अभाव	24
11	आज़ादी में हिंदी का सर्वोपांग योगदान	25
12	भारत की आजादी में हिंदी	27
13	भारत की आजादी में हिंदी की महत्ता	28
14	आकाशीय बिजली– कारण, प्रभाव और निवारण	30
15	ड्रोन – विज्ञान का विस्मयकारी आविष्कार	34
16	जंगली जानवरों की रेल दुर्घटना से बचाव के लिए ए आई तकनीक	37
17	आत्मनिर्भर भारत	40
18	वर्ग पहेली	41
19	राजभाषा गतिविधियां	42
20	प्रोत्साहन योजना तथा अन्य राजभाषा पुरस्कार योजनाओं के विजेता	59
21	हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें	62
22	हिंदी पोस्टर प्रतियोगिता	64
23	साहित्यकार परिचय – डॉ धर्मवीर भारती	66

राजभाषा दृष्टि
RAJBHASHA VISION

संस्थान के कार्यकलाप के हर क्षेत्र में राजभाषा हिंदी को सरल रूप में अपनाना।

To adopt Official Language Hindi in every sphere of activity of the Company in its simple form

राजभाषा ध्येय
RAJBHASHA MISSION

प्रतिबद्धता, प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिंदी में मूल कार्य करने की संस्कृति को आत्मसात करना और राजभाषा हिंदी को मौखिक, लिखित और इलेक्ट्रॉनिक सम्प्रेषण के माध्यम के रूप में अपनाना।

To imbibe a culture of doing original work in Hindi through Commitment, Motivation and Incentive and to adopt Rajbhasha Hindi as the spoken, written and electronic medium of communication.

भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संदेश

भाषा मानवीय संवेदना को प्रकट करने का मूर्त रूप है और हिंदी के रूप में हमें एक ऐसा सशक्त माध्यम मिला है जो न केवल संप्रेषण का प्रभावी माध्यम है बल्कि इसे भारत सरकार द्वारा राजभाषा और जनमानस के हृदय में विराजमान संपर्क भाषा घोषित किया गया है। विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां हमारे देश की पहचान हैं। सभी भाषाओं का इतिहास समृद्ध है, उनका अपना समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं लेकिन पूरे देश को एक माला में पिरोने का काम संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने बखूबी किया है।

कार्यालय में अपना अधिक से अधिक कामकाज राजभाषा हिंदी में करना न केवल अपने सरकारी दायित्व का निर्वहन करना है बल्कि यह हमारा नैतिक दायित्व भी है क्योंकि देश को आजाद करने में हिंदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आप जानते हैं कि बीईएल राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को लेकर बहुत गंभीर और सजग है। संस्थान प्रमुख होने के नाते मेरी भी पूर्ण निष्ठा राजभाषा हिंदी के अनुपालन को कंपनी में सुनिश्चित करने की है।

कार्पोरेट हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** प्रत्येक छमाही में प्रकाशित की जा रही है जिसका हर अंक विशेष विषय पर आधारित होता है और मुझे खुशी है कि यह अंक **देश की आजादी में हिंदी की भूमिका** पर आधारित है। राजभाषा के प्रचार के लिए किए जा रहे विभिन्न प्रयासों में हिंदी पत्रिका भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है। मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि पत्रिका का हर अंक अधिक परिष्कृत रूप में और नए स्वरूप और नई–नई जानकारी के साथ पाठकों के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है। आशा है कि विभिन्न जनोपयोगी और समाजोपयोगी विषयों की सामग्री उपलब्ध कराने से हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों का ज्ञान वर्धन होगा।

जयहिंद, जय हिंदी

कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति

आनंदी रामलिंगम
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

विक्रमन एन
महाप्रबंधक (एच.आर.)
सदस्य

रामन आर
महाप्रबंधक (आं.ले.प.)
सदस्य

दामोदर भट्टड
महाप्रबंधक (वित्त)
सदस्य

हरिकुमार आर
महाप्रबंधक (टी. पी.)
सदस्य

हेमावती मुत्तुसामी
प्रभारी महाप्रबंधक (एस.पी.)
सदस्य

केशव राजू एच एस
अ.म.प्र. (सतर्कता)
सदस्य

दिब्येंदु बिद्यांता
अ.म.प्र. (एच.आर.)
सहयोजित सदस्य

मनोज यादव
अ.म.प्र. (एम.एस.)
सदस्य

कृष्णप्पा टी आर
व.उ.म.प्र. (सी.सी)
सदस्य

श्रीनिवास एस
कंपनी सचिव
सदस्य

नीरज कुमार चड्ढा
प्रबंधक (लाइसेंसिंग)
सदस्य

श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)
सदस्य सचिव

मनोज जैन
निदेशक (मानव संसाधन)
अतिरिक्त प्रभार

संदेश

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहिका होती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व को मौलिक रूप से परिभाषित नहीं कर सकता। राष्ट्र की शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति में उस राष्ट्र की भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। किसी भी सुदृढ़ और मजबूत राष्ट्र की पहचान इस बात से होती है कि उसकी अपनी भाषा कितनी समृद्ध है। संविधान निर्माताओं ने संविधान में, अन्य बातों के साथ–साथ, यह प्रावधान किया था कि संघ हिंदी भाषा का विकास करे और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए संस्कृत और अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उनकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

साथियो, संविधान द्वारा हमें जो दायित्व सौंपा गया है, हमें उसका निर्वहन करना है। हम हिंदी के साथ–साथ अन्य सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं। आप जानते हैं कि हम आज हिंदी में ही नहीं, वरन, अन्य भारतीय भाषाओं में भी उत्तम साहित्य सृजन हो रहा है। हमें इस सभी भाषाओं को साथ लेकर हिंदी का विकास करना है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि बीईएल कार्पोरेट कार्यालय की हिंदीं पत्रिका **नवप्रभा** का 13वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है जो **देश की आजादी में हिंदी की भूमिका** विषय पर आधारित है। मैं कार्पोरेट राजभाषा अनुभाग को गृह पत्रिका **नवप्रभा** के प्रकाशन के लिए बधाई और उसकी सक्रियता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

जयहिंद, जय हिंदी

बीईएल के राजभाषा अधिकारीगण

श्रीनिवास राव
कॉर्पोरेट कार्यालय

एच एल गोपालकृष्णा
बेंगलूरु कामप्लेक्स

वी सुरेश कुमार
हैदराबाद

बिमल मोहन सिंह रावत
नवी मुंबई, पुणे

श्यामलाल दास
चेन्नै

रजनी साव
सी आर एल बेंगलूरु

भूपेन्द्र सिंह
पंचकूला

नवजोत पीटर
गाजियाबाद

माधुरी रावत
कोटद्वार

दिनेश उईके
मछिलिपट्नम

संदेश

विक्रमन एन
महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

हम 'ग' क्षेत्र में स्थित हैं, इस कारण हिंदी का पठन–पाठन, प्रशिक्षण, अनुवाद कार्य, हिंदी का प्रचार–प्रसार सहित हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। हम राजभाषा विभाग, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वचनबद्ध हैं। हमारा कार्पोरेट राजभाषा अनुभाग उक्त वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों के अनुसार वर्ष भर विभिन्न कार्यों में सक्रिय रहता है। नवप्रभा वर्ष में दो बार यानी छमाही रूप में निरंतर प्रकाशित की जा रही है जो उसी सक्रियता का प्रमाण है। हर अंक विशेषांक इसकी विशेषता है और यह अंक देश की आजादी में हिंदी की भूमिका विषय को समर्पित है।

जमाना कंप्यूटर का है और भाषा के क्षेत्र में रोज नई–नई प्रौद्योगिकी विकसित की जा रही है। सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए आज हमारे पास एक से बढ़कर एक टूल उपलब्ध हैं। हमें इन टूल का उपयोग कर तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी समृद्ध बनाना है। राजभाषा विभाग द्वारा विकसित साफ्टवेयरों, मशीन अनुवाद कंठस्थ आदि का प्रयोग कर हिंदी पत्राचार को और आसान बना सकते हैं। संकल्प लें कि हम हिंदी का व्यापक प्रचार–प्रसार करेंगे और पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करेंगे।

नवप्रभा के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हिंदी में कामकाज करने के आह्वान के साथ पत्रिका से जुड़े सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

जयहिंद, जय हिंदी

बीईएल में लागू राजभाषा प्रोत्साहन योजनाएं

तुलसीदास पुरस्कार योजना
सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने के लिए पुरस्कार योजना

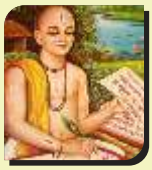

प्रेमचंद पुरस्कार योजना
हिन्दी में कार्य करने के लिए कार्यपालकों तथा गैर–कार्यपालकों के लिए अलग अलग पुरस्कार योजना

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार योजना
कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु नकद पुरस्कार योजना

कबीर पुरस्कार योजना
प्रेरणा देने वाले ऐसे उच्चाधिकारियों के लिए पुरस्कार जो हिन्दी में पृष्ठांकन/ हस्ताक्षर/ टिप्पणी लिखते हैं और अपने प्रभाग/ विभाग में हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हैं

भास्कराचार्य पुरस्कार योजना
हिन्दी में मौलिक पुस्तक लिखने के लिए

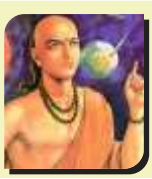

नागार्जुन पुरस्कार योजना
हिन्दी में तकनीकी लेख लिखने के लिए

निराला योजना
हिन्दी में व्याख्यान देने/ सत्र चलाने को प्रोत्साहित करने के लिए

माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार
हिन्दी माध्यम के साथ कक्षा X/ XII/ डिग्री/ डिप्लोमा/ स्नातकोत्तर स्तर में सर्वोच्च अंक अर्जित करने के लिए पुरस्कार

मैथिलीशरण पुरस्कार
कक्षा X / XII / डिग्री/ डिप्लोमा/ स्नातकोत्तर स्तर में प्रथम/ द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी में सर्वोच्च अंक अर्जित करने के लिए पुरस्कार

दिब्येंदु बिद्यांता
अपर महाप्रबंधक
(मानव संसाधन)

संदेश

कार्पोरेट हिंदी पत्रिका **नवप्रभा** का 13वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे गर्व के साथ–साथ खुशी की भी अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका संपूर्ण बीईएल में आयोजित विभिन्न राजभाषाई गतिविधियों की चित्रमय झलकियों के साथ–साथ अधिकारियों और कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को भी प्रतिबिंबित करती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में नवप्रभा की हमेशा से सराहनीय भूमिका रही है। इस पत्रिका के माध्यम से बीईएल की विभिन्न यूनिटों, केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला और कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है जो निश्चित ही एक सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, निबंध, कविताएं, वर्ग पहेली, राजभाषा गतिविधियां, साहित्यकार परिचय, हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें आदि जैसे स्थायी स्तंभ आदि पाठकों को निश्चित रूप से ज्ञानवर्धक और रोचक लगेंगे, ऐसी आशा है।

हम जानते हैं कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और पत्रिकाएं इसकी वाहक। हिंदी पत्र–पत्रिकाएं अधिकारियों और कर्मचारियों के रचनात्मक और गंभीर वैचारिक लेखन का मंच होना चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि **नवप्रभा** का यह अंक भी इस दायित्व का निर्वहन करने में सक्षम होगा।

नवप्रभा के 13वें अंक के संपादन से जुड़े सभी को मैं अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं। साथ ही, मैं सभी पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वे इस पत्रिका के बारे में अपने सुझाव और विचार अवश्य प्रेषित करें ताकि इसे और भी उपयोगी और संग्रहणीय बनाया जा सके।

जयहिंद, जय हिंदी

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
कार्पोरेट कार्यालय

नव प्रभा अंक–13
अर्धवार्षिक गृह पत्रिका

(केवल निजी वितरण के लिए)

मार्गदर्शन
श्री भानु प्रकाश श्रीवास्तव
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

संरक्षण
श्री विक्रमन एन.
महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

परामर्श
श्री दिब्येंदु बिद्यांता
अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादन
श्री श्रीनिवास राव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
डॉ. रहिला राज के.एम.
कनिष्ठ अनुवादक

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार हैं, बीईएल से इसकी सहमति अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय...

वतन की रख़ाक ज़रा एड़ियां रगड़ने दे
मुझे यक़ीन है पानी यहीं से निकलेगा।

देश की स्वतंत्रता और विकास में हिंदी भाषा का योगदान किसी से छिपा नहीं है। हिंदी की महत्ता तभी स्थापित हो गई थी जब वह स्वाधीनता संग्राम के समय समूचे देश को आपस में जोड़ने वाली सबसे सशक्त संपर्क भाषा बन गई थी। उस दौर के सभी नेताओं का मानना था कि अगर कोई भारतीय भाषा देशवासियों को एकजुट करने में सहायक बन सकती है तो वह हिंदी ही है।

राजभाषा के रूप में हिंदी को जो मान्यता दी गयी उसमें स्वतंत्रता–संग्राम के हमारे राजनेताओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि हिंदी के विकास के लिए उन चिन्तकों, मनीषियों और नेताओं ने अभूतपूर्व कार्य किया है जो अधिकतर हिंदीतर प्रदेश के थे। भाषा के बारे में तिलक का विचार था कि हिंदी ही एक मात्र भाषा है जो राष्ट्रभाषा हो सकती है। 'पंजाब केसरी' के नाम से प्रसिद्ध लाला लाजपतराय ने हिंदी का बड़ा समर्थन किया और उन्हीं के प्रयत्न से पंजाब के शिक्षा क्षेत्र में हिंदी को स्थान मिला। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पुरूष के रूप में विख्यात पंडित मदनमोहन मालवीय जी न केवल एक महान हिंदीव्रती थे बल्कि हिंदी आंदोलन के अग्रणी नेता भी थे। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की हिंदी सेवा भी अप्रतिम है। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के कर्ताधर्ता थे और उनसे हिंदी प्रचार के कार्य को बड़ी गति मिली। भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष के रुप में हिंदी को उचित स्थान दिलाने का श्रेय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को ही जाता है। ''यदि भारत में प्रजा का राज चलाना है, तो वह जनता की भाषा में चलाना होगा'' इन शब्दों में जनता की भाषा की वकालत करने वाले काका कालेलकर जी का नाम हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार और विकास में अतुलनीय योगदान देने वालों में आदर के साथ लिया जाता है। श्री केशवचन्द्र सेन पहले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन्होने 'राष्ट्रभाषा हिंदी' के महत्व को हृदय से समझा और स्वीकार किया। राष्ट्रभाषा के प्रहरी के रुप में सेठ गोविन्ददासजी कौन भुला सकता है। अपने युवाकाल में ही कई हिंदी पत्रिकाएं प्रारंम्भ कर सेठजी ने हिंदी के प्रति अपने प्रेम का परिचय दिया था। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से महत्वपूर्ण नेताओं के नाम गिनाये जा सकते हैं, जिन्होंने हिंदी का प्रबल समर्थन किया और हिंदी को विकसित करने में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया।

भारत की आजादी में हिंदी की भूमिका कोई नया विषय नहीं है, लेकिन इस पर बार–बार चर्चा की जानी चाहिए। इसीलिए यह अंक इसी विषय पर समर्पित किया गया है। जिन साथी रचनाकारों ने इसे संभव करने में सहयोग दिया, **नवप्रभा** की टीम उनकी आभारी है। कार्पोरेट राजभाषा अनुभाग का यह विनम्र प्रयास आपको कैसा लगा, हमें ज़रूर बताइए, आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है।

हिंदी साहित्य और हमारी आजादी–अटूट बंधन

क्या आपने कभी पिंजरे में कैद किसी तोते को अंग्रेजी में बोलते हुए देखा है?

क्या आपने कभी पानी से बाहर निकाली गई मछली को अंग्रेजी में छटपटाते हुए सुना है?

कटाक्ष ही सही, परन्तु है यह पूर्ण सत्य। बंधन में पड़ा कोई भी व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाते समय अपनी मातृभाषा का ही प्रयोग करता है। इसी तरह दर्द से कराहता व्यक्ति भी अपनी मातृभाषा में ही चिल्लाता है। अतः मातृभाषा ही किसी व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्ति का प्रथम साधन होती है। इसी मूल आधार पर स्वतंत्रता की पृष्ठभूमि साहित्य, समाचार, पत्रों एवं पत्रिकाओं ने हिंदी भाषा में ही तैयार की। पं. बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू एवं डॉ. राजेंद्र प्रसाद आदि सभी हिंदी पत्रकारिता से संबद्ध रहे। कांग्रेस भी जब दो विचारों में विभाजित हुई, उस समय भी गरम दल का दिशा–निर्देश 'भारतमित्र', 'अभ्युदय', 'प्रताप', 'नृसिंह', केशरी एवं रणभेरी आदि पात्रों ने किया तथा नरम दल का 'बिहार बंधु', 'नागरीनिरंद', 'मतवाला', 'हिमालय' एवं 'जागरण' ने किया।

स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने–अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जोश भरा।

प्रेमचंद की 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' उपन्यास हो या भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'भारत–दर्शन' नाटक या जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त'– सभी देशप्रेम की भावना से भरी पड़ी है। इसके अलावा वीर सावरकर की 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' हो या पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज' या फिर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' ये सभी किताबें ऐसी हैं, जो लोगों में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने में कारगर साबित हुईं।

उपन्यास और कहानी के अलावा कवियों ने अपनी कविता से लोगों में देशप्रेम की ऐसी अलख जगाई कि लोग घरों से बाहर निकल आए और क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़ें स्वाधीनता आंदोलन में ही थीं। भारतेंदु और भारतेंदु मंडल के साहित्यकारों ने युग चेतना को पद्य और गद्य दोनों में अभिव्यक्ति दी। इसके साथ ही इन साहित्यकारों ने स्वाधीनता संग्राम और सेनानियों की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों का खुलकर विरोध किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंग्रेजों द्वारा निरीह भारतीय जनता पर जुल्मोसितम व लूट–खसोट का उन्होंने बढ़–चढ़कर विरोध किया। उन्हें इस बात का क्षोभ था कि अंग्रेज यहां से सारी संपत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे थे। इस लूटपाट और भारत की बदहाली पर उन्होंने काफी कुछ लिखा।

'अंधेर नगरी चौपट राजा' नामक व्यंग्य के माध्यम से भारतेंदु ने तत्कालीन राजाओं की निरंकुशता, अंधेरगर्दी और उनकी मूढ़ता का सटीक वर्णन किया है। अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है–

'भीतर भीतर सब रस चुसै, हंसी हंसी के तन मन धन मुसै।
जाहिर बातिन में अति तेज, क्यों सखि साजन, न सखि अंगरेज।'

भारतेंदु युग मात्र साहित्यिक युग ही नहीं, अपितु स्वतंत्रता एवं राष्ट्रीय जागरण का युगबोध कराने वाला युग था। महात्मा गांधी के लिए यही प्रेरक युग कहा जाना सत्य होगा। स्वतंत्रता आंदोलन के लिए राजनेताओं को जितना संघर्ष करना पड़ा, उससे तनिक भी कम संघर्ष पत्रों एवं पत्रकारों को नहीं करना पड़ा। द्विवेदी युग के साहित्यकारों ने भी स्वाधीनता संग्राम में अपनी लेखनी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी तलवाररूपी कलम को पैना किया। इन कवियों ने आम जनता में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाने तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन का हिस्सा बनने हेतु प्रेरित किया।

माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखकर जनमानस में सेनानियों के प्रति सम्मान के भाव जागृत किए।

'चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं
चाह नहीं मैं गुथू अलकों में विंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के द्वार पर हे हरि! डाला जाऊं!
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं, भाग्य पर इतराऊं
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पे शीश चढ़ाने जिस पथ जाएं वीर अनेक'

देशभक्ति से ओत–प्रोत उनकी यह एक ऐसी रचना है जिसके जरिए कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने आजादी की बलिवेदी पर शहीद हुए वीर सपूतों के प्रति अगाध श्रद्धा दिखाई है और बलिदानों को सर्वोपरि बताया है। एक फूल के माध्यम से उन्होंने अपनी बातों को जिस सशक्तता व उत्कृष्टता के साथ कहा है, वह बेहद सराहनीय है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है जिसने अंग्रेजों की चूलें हिलाकर रख दीं।

'सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी की रानी थी।'

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारतवासियों को स्वर्णिम अतीत की याद दिलाते हुए वर्तमान और भविष्य को सुधारने की बात की–

'हम क्या थे, क्या हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारे मिलकर ये समस्याएं सभी'।
उन्होंने 'भारत–भारती' में लिखा–
'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर–पशु निरा है और मृतक समान है'।

पं. श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए 'हल्दी घाटी' में लिखा–

'रणबीच चौकड़ी भर–भरकर, चेतक बन गया निराला था
राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था
गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था
वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था'।

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा', सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश', इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिदुस्तां हमारा', निराला ने 'भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे।' कामता प्रसाद गुप्त ने 'प्राण क्या हैं देश के लिए। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए'। तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में लिखा–

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए
नाश! नाश! हां महानाश!!! की
प्रलयंकारी आंख खुल जाए।'

इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर', राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण

चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ बंकिमचंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत–प्रोत गीत 'वंदे मातरम' ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया। अब किसी कीमत पर देश के लोगों को पराधीनता स्वीकार नहीं थी।

'वंदे मातरम!
सुजलां सुफलां मलयज शीतलां
शस्यश्यामलां मातरम! वंदे मातरम!
शुभ्र ज्योत्सना–पुलकित–यामिनीम्
फुल्ल–कुसुमित–द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरत्। वंदे मातरम!'

इसी तरह जंगे आजादी में अपनी रचनाओं के माध्यम से विशेष भूमिका निभाने वाले साहित्यकारों की एक लंबी फेहरिस्त है। राधाकृष्ण दास, बद्रीनारायण चौधरी, प्रताप नारायण मिश्रा, पंडित अंबिका दत्त व्यास, बाबू रामकिशन वर्मा, ठाकुर जगमोहन सिंह, रामनरेश त्रिपाठी एवं बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे प्रबुद्ध रचनाकारों ने राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की ऐसी गंगा बहाई जिसके तीव्र वेग से जहां विदेशी हुक्मरानों की नींव हिलने लगी, वहीं नौजवानों के अंतस में अपनी पवित्र मातृभूमि के प्यार का जज्बा गहराता चला गया। एक ओर बंकिमचंद्र चटर्जी ने आनंद मठ व वंदे मातरम् जैसी कालजयी रचनाओं का सृजन किया, तो कविवर जयशंकर प्रसाद की कलम भी बोल उठी–

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।'

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भागीदारी निभाने में पीछे नहीं रहे और मृतप्रायः भारतीय जनमानस में भी उन्होंने अपनी रचनाओं के जरिए एक नई ताकत व एक नई ऊर्जा का संचार किया। प्रेमचंद की कहानियों में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ एक तीव्र विरोध तो दिखा ही, इसके अलावा दबी–कुचली शोषित व अफसरशाही के बोझ से दबी जनता के मन में कर्तव्य–बोध का एक ऐसा बीज अंकुरित हुआ जिसने सबको आंदोलित कर दिया।

प्रेमचंद ने जन–जागरण का एक ऐसा अलख जगाया कि जनता हुंकार उठी। सरफरोशी का जज्बा जगाती प्रेमचंद की बहुत सारी रचनाओं को अंग्रेजी शासन के रोष का शिकार होना पड़ा। न जाने कितनी रचनाओं पर रोक लगा दी गई और उन्हें जब्त कर लिया गया। कई रचनाओं को जला दिया गया, परंतु इन सब बातों की परवाह न करते हुए वे अनवरत लिखते रहे। उन पर कई तरह के दबाव भी डाले गए और नवाब राय की स्वीकृति पर उन्हें डराया–धमकाया भी गया। लेकिन इन कोशिशों व दमनकारी नीतियों के आगे प्रेमचंद ने कभी हथियार नहीं डाले। उनकी रचना 'सोजे वतन' पर अंग्रेज अफसरों ने कड़ी आपत्ति जताई और उन्हें अंग्रेजी खुफिया विभाग ने पूछताछ के लिए तलब किया। अंग्रेजी शासन का खुफिया विभाग अंत तक उनके पीछे लगा रहा। परंतु प्रेमचंद की लेखनी रुकी नहीं, बल्कि और प्रखर होकर स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का काम करती रही। उन्होंने लिखा–

'मैं विद्रोही हूं जग में विद्रोह कराने आया हूं,
क्रांति–क्रांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूं।'

देवराज
गाज़ियाबाद यूनिट

जन आंदोलनों की सफलता में हिंदी पत्रकारिता

आचार्य विनोबा भावे और महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक जन आंदोलन और हिंदी को संपर्क भाषा बनाया। यह हमारे राष्ट्रीय नेताओं का दृढ़ विश्वास था कि कोई देश अपनी भाषा के अभाव में अपनी स्वतंत्रता को मौलिक रूप से परिभाषित और अनुभव नहीं कर सकता है।

इस संदर्भ में महात्मा गांधी ने कहा था, स्वतंत्रता आंदोलन केवल स्वराज का सवाल नहीं है, बल्कि अपनी भाषा का भी सवाल है। हिंदी को भारतीय विचार–धारा के विकास का स्वाभाविक क्रम माना जाता था। उन्होंने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायकों ने हिंदी को राष्ट्रीय एकता से सीधे जोड़ा।

स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने से पहले, गांधी जी ने पूरे भारत में यात्रा की और पाया कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश को जोड़ सकती है।

महात्मा गांधी ने हिंदी को जनता की भाषा कहा क्योंकि यह राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधती है और जन चेतना में इसका एक विशेष स्थान है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी भारत की स्वतंत्रता की यात्रा को तेज करने के लिए हिंदी को एक एकीकृत शक्ति के रूप में केंद्रित किया गया था।

हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, हिंदी ने एक भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदी का समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक मूल्य है, क्योंकि भाषा में कई मूल्यवान लेखन हैं।

'उदंत मार्तंड' श्री युगल किशोर शुक्ल द्वारा 30 मई, 1826 को कोलकाता से प्रकाशित होने वाला पहला हिंदी समाचार पत्र था। उदंत मार्तंड ने हिंदी पत्रकारिता का पथ प्रशस्त किया, जिसने बाद में न केवल सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक परिवर्तन के वाहन के रूप में काम किया, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता की आवाज भी बनी।

काशी से "बनारस अखबार" (1845) किसी भी हिंदी राज्य से प्रकाशित होने वाले पहले साप्ताहिक में से एक था।

1857 के विद्रोह के प्रकोप ने हिंदी पट्टी में नई राजनीतिक चेतना को जन्म दिया और ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के क्रूर अत्याचार के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया।

नई राजनीतिक जागरूकता और अपनी भाषा हिंदी की उन्नति के लिए उत्सुकता के साथ, भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी क्षेत्रों में सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक सुधारों को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया गया था।

वह हिंदी पाठकों के लिए रास्ते खोजने के लिए समकालीन समाचार पत्रों, पुस्तकों और पत्रिकाओं के माध्यम से जाते थे। उन्होंने काशी से मासिक "कवि वचन सुधा" प्रकाशित करके हिंदी लेखकों को प्रेरित किया।

शुरुआत में इसने कवियों की एकत्रित कृतियों को प्रकाशित किया, लेकिन बाद में यह पाक्षिक–अनुमोदित गद्य–कृतियाँ भी बन गई। हिंदी भाषी क्षेत्रों में 'सुधा' प्रकाशित कर भारतेंदु ने सनसनाहट पैदा कर दी थी।

जब हम सब अज्ञानता की नींद में डूबे हुए थे, तो उन्होंने जन चेतना लाई और लैंगिक समानता की वकालत की। उन्होंने भारत के स्व–शासन, उसकी पूर्ण संप्रभुता का सपना देखा और वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पहले था।

भारतेंदु ने खुलासा किया कि भारत मित्र एक राजनीतिक पत्रिका थी, हालांकि इसमें आनुवंशिकी के विषय शामिल थे। हिंदी साहित्य और पत्रकारिता में भारतेंदु

युग को एक स्वर्ण युग माना जाता है और यह न केवल हिंदी भाषी लोगों में जागरूकता का प्रतीक है, बल्कि ब्रिटिश दमन के खिलाफ तीखी प्रतिक्रिया भी है।

"सरस्वती" को सबसे लोकप्रिय पहला हिंदी मासिक माना जाता है, जिसे चिंतामणि घोष ने प्रयाग से 1900 में इंडियन प्रेस में प्रकाशित किया था। इसे नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा मान्यता दी गई थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 में "सरस्वती" के संपादक का कार्यभार संभाला और हिंदी पुनर्जागरण के तीसरे चरण की शुरुआत उनके सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से हिंदीवालों के बीच जागरूकता अभियान से हुई। मुख्य उद्देश्य जीवन के हर क्षेत्र में सामंती और औपनिवेशिक व्यवस्था को खत्म करना था।

द्विवेदी युग के दौरान हिंदी पुनर्जागरण पुनरुत्थान का युग था जब कविता में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं को धीरे–धीरे प्रतिबिंबित किया गया था; जबकि गीत सामाजिक उत्तेजना का विषय थे।

1907 में प्रयाग से मदन मोहन मालवीय द्वारा साप्ताहिक "साहित्य" निकाला गया और उसी वर्ष माधव राव सप्रे द्वारा नागपुर से "हिंद केशरी" शुरू किया गया। कानपुर के एक युवा उत्साही, गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1910 में एक तेजतर्रार और क्रांतिकारी साप्ताहिक "प्रताप" शुरू किया, जो विद्रोही युवाओं का मुखपत्र था, जो अंग्रेज–मुक्त भारत के लिए तरस रहे थे।

1920 में, शिव प्रसाद गुप्ता ने स्वतंत्रता संग्राम को सुविधाजनक बनाने के लिए काशी से "अज" शुरू किया। 19 अगस्त 1921 को गांधी जी ने "नवजीवन" का हिंदी संस्करण शुरू किया। आचार्य शिव पूजन सहाय ने 1922 में मासिक पत्रिका "आदर्श" के संपादन के साथ शुरुआत की। उसी वर्ष, दुलारे लाल भार्गव के संपादकीय में लखनऊ से एक साप्ताहिक पत्रिका "माधुरी" का शुभारंभ किया गया। हिंदी साप्ताहिक "मतवाला" का प्रकाशन 26 अगस्त 1923 को कोलकाता से शुरू हुआ, जिसमें सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेव प्रसाद सेठ, शिवपूजन सहाय, बेचन शर्मा "उग्र" और नवजादिक लाल श्रीवास्तव जैसे प्रख्यात हिंदी साहित्यकार जुड़े।

प्रेमचंद की राजनीतिक–साहित्यिक पत्रिका ने भारतीय लोगों के लिए ब्रिटिश शासन की विषमताओं और विसंगतियों को उनके साहित्य के साथ–साथ उनके "हंस" के संपादकीय में भी दिखाया।

प्रेमचंद उन हिंदी लेखकों में से एक हैं जिन्होंने अपने नियमित लेखन के माध्यम से अंग्रेजों की कार्रवाई की निंदा की।

आजादी की लड़ाई के दौरान देश ने कई हिंदी पत्रिकाओं और समाचार पत्रों का उतार–चढ़ाव देखा है और उनमें से अधिकांश ने सामाजिक और राजनीतिक पुनर्जागरण के लिए एक प्रभावी हथियार के रूप में काम किया है। हिंदी पत्रकारिता राष्ट्रवादी विचारधारा के गठन और प्रसार के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की रीढ़ रही है और जनता के बीच मजबूत राष्ट्रीय भावना और चेतना को उभारा है। इसके योगदान को भारतीय जनता ने हमेशा सलाम किया है।

एत्तडि प्रशांत रेड्डी
हैदराबाद

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का बहुआयामी योगदान

भारत अपनी स्वाधीनता का 75वां वर्ष अमृत महोत्सव की तरह मना रहा है। आज़ादी की प्राप्ति के लिए महान क्रांतिकारियों, विचारकों, नेताओं, परिस्थितियों, समय या घटना, स्थान आदि कई कारकों का योगदान रहा है। भारतीय भाषाएं स्वाधीनता की वैचारिक क्रांति में मील का पत्थर साबित हुई। भारत एक विविधता से भरा देश रहा है। भाषाई विविधता ने आज़ादी की लड़ाई को क्षेत्रीय बंधनों में कहीं न कहीं सीमित कर दिया था। 1857 की क्रांति की विफलता के कई कारणों में से एक भाषायी विविधता भी थी। विभिन्न रियासतों के राजाओं की सेनाओं के बीच भाषायी अंतर थे। हालांकि कम समय में क्रांति ने व्यापक रूप धारण कर लिया था। यदि विद्रोह का दिन, समय आक्रमण की तैयारियों के बारे में सब को समान रूप से जानकारी का अभाव न होता तो सफलता निश्चित होती। पंजाब और दक्षिणी प्रान्तों के अधिकतर क्षेत्रों में क्रांति की सूचना का ही अभाव था। देश के अहम शासक होल्कर सिंधिया जोधपुर के राणा अन्य कई लोगों ने क्रांति का समर्थन नहीं किया। अंग्रेजों ने इन्हें यह कहकर भड़काया कि क्रांति की सफलता के बाद बहादुर शाह जफर का राज होगा और दमनकारी नीतियां चरम पर होंगी। जिसकी वजह से रणनीतिक व कूटनीतिक समन्वय नहीं हो पाया और देशीय सेनाएं अंग्रेजों से हारती गईं।

स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का राष्ट्रचयन और उपयोगिता – संपूर्ण राष्ट्र को एकता के एक स्वर में बांधना और भी महत्वपूर्ण हो गया था क्योंकि देश के नागरिक धर्म, विभिन्न जाति व जनजातियों और समुदायों में बंटे हुए थे। अंग्रेज पहले से ही सामाजिक खाई को पाटने नहीं दे रहे थे और उसमें भी फूट डालो – राज करो का हवन कर रहे थे। इसलिए, स्वाधीनता के लिए सभी धर्म, जाति, जनजाति, क्षेत्रों आदि लोगों को एकता के मंच पर लाना आवश्यक था। स्वाधीनता चाहिए तो एकता आवश्यक थी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक स्वर में स्वाधीनता का गुंजन आवश्यक था। स्वाधीनता आंदोलन में सभी भारतीय नागरिकों तक एक स्वर एक आवाज़ एक भाषा में आज़ादी के विचारों को फैलाना था ताकि आंदोलन से अधिक से अधिक जनसंख्या जुड़ सके। ऐसे में स्वाधीनता की वैचारिक क्रांति के प्रचार–प्रसार को बनाए रखने के लिए भारत के बड़े भू–भाग पर बोली जाने वाली भाषा का चयन तार्किक रूप से आवश्यक हो गया था क्योंकि एक बड़े जन समुदाय तक एक छोटी जनसंख्या आधारित भाषा को ले जाना या सिखाना अत्यधिक कठिन था जबकि बड़े जन समूह द्वारा बोली जाने वाली भाषा को तुलनात्मक रूप से छोटे जन समूहों तक ले जाना थोड़ा आसान था। तब की परिस्थिति के अनुसार बृजभाषा से हिंदी की खड़ी बोली की तरफ भारत का उत्तर मध्य क्षेत्र साहित्यिक गतिविधियों के कारण धीरे–धीरे परिवर्तित हो चुका था। यदि स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी का योगदान तथा आंदोलन के दौरान हिंदी का विकास दोनों ही परिस्थितियों का अध्ययन किया जाए तो यह देखने को मिलता है कि ये दोनों एक दूसरे की पूरक थीं। हिंदी भाषा ने स्वाधीनता संग्राम में और स्वाधीनता संग्राम में हिंदी भाषा के विकास एवं संवर्धन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वतंत्रता संग्राम पर हिंदी पत्रकारिता का प्रभाव –**सन् 1779** एंग्लो–इंडियन समाचार पत्र का मुद्रण और

वितरण स्थापित हो चुका था। 30 मई 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल जी के संपादन में हिंदी के पहले साप्ताहिक समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड का प्रकाशन हुआ। समाचार पत्रों का वितरण घर–घर नहीं होता था। छोटे–छोटे मोहल्लों, बाज़ारों में बनी दुकानों पर समाचार पत्र आया करते थे। छपे हुए समाचार को लोग मंडली में पढ़ते थे। उन समाचारों पर विचार विमर्श करते थे। अपना–अपना विचार रखते थे। समाचारों पर वाद–विवाद और गहन चर्चा बहुत आम थी। इसलिए स्वतंत्रता के लिए हिंदी पत्रकारिता का विकास अति आवश्यक हो गया था। उदंत मार्तण्ड में छपे समाचारों पर लोग विचार–विमर्श करते थे। देश में हिंदी बहुल जनसंख्या ने उदंड मार्तण्ड को हाथों हाथ लिया। समाचार पत्र का प्रकाशन कलकत्ता से होता था। हिंदी भाषी क्षेत्रों में समाचार पत्र को भेजने का

डाक खर्च महंगा था। शुक्लजी ने डाक विभाग से रियायत की मांग की पर अंग्रेजों ने उसके लिए भी मना कर दिया। आर्थिक तंगी ने भी समाचार पत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाले। बढ़ती लोकप्रियता ने अंग्रेजों को भयभीत कर दिया और 4 दिसम्बर 1827 को मुद्रण व वितरण पर रोक लगा दी गई। पत्रिका की प्रगति शील विचारवादी शैली का अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है कि एक बांग्ला भाषी समाचार पत्र चन्द्रिका ने लिखा "अज्ञान तथा रूढ़ियों के अंधेरों में जकड़े हुए हिन्दुस्तानी लोगों की प्रतिभाओं पर प्रकाश डालने और 'उदंड मार्तण्ड' द्वारा ज्ञान के प्रकाशनार्थ' इस पत्र का श्री गणेश हुआ था"।

फिर सन् 1829 में राजा राममोहन राय ने बंगदूत का प्रकाशन किया। इसे हिंदी के अलावा तीन अन्य भाषाओं बंगाली उर्दू और अंग्रेजी में छापा गया। 1845 में बनारस (वाराणसी) से शिवप्रसाद सितारेहिन्द द्वारा बनारस अखबार का प्रकाशन किया। इसके स्थानीय सम्पादक गोविंद रघुनाथ थत्ते थे। समाचार पत्र का झुकाव उर्दू की था। समाचार पत्र को हिंदी भाषियों द्वारा आलोचना का सामना करना पड़ा। इसके उपरांत 1850 में तारामोहन जी साप्ताहिक समाचार पत्र सुधाकर का पूर्णतः हिंदी में सफल प्रकाशन किया। साप्ताहिक समाचार पत्रों के बाद स्वतंत्रता के विचारों के प्रतिदिन प्रचार प्रसार की कमी देखने को मिली। तब 1854 में श्याम सुंदर सेन ने सुधावर्षन का संपादन किया जो काफी सफल रहा। संपादक श्यामसुंदर सेन के हिंदी के प्रथम दैनिक समाचार पत्र 'सुधावर्षन' पर राजद्रोह का आरोप लगा कि पत्र द्वारा बहादुरशाह जफर का एक आदेश प्रकाशित किया गया है, जिसमें अंग्रेजों को भारत बाहर निकलने के लिए आव्हान किया गया है। पर पूरे दिन चली सुनवाई में अदालत को संपादक को छोड़ना पड़ा। इसके बाद ही लार्ड केनिंग द्वारा गैंगिंग एक्ट लाया गया। जिसमें भारतीय समाचार पत्रों पर जनता को सूचना प्रसारण के नाम पर राजद्रोह के लिए भड़काने का आरोप लगाया गया। बम्बई (मुम्बई) के गवर्नर लार्ड एनफिंस्टन ने भी इस एक्ट का पुरजोर समर्थन किया। परिणामस्वरूप यूनाइटेड प्रोविंस (उत्तर प्रदेश) के कई समाचार पत्रों को बंद कर दिया गया। भारतेंदु युग से ही हिंदी साहित्य और पत्रकारिता की स्वाधीनता को लेकर गठजोड़ दिखने लगा था। हिंदी पत्रकारिता भी स्वतंत्रता संग्राम में अपने चरम पर थी। इसी क्रम में आगे 1867 में भारतेंदु हरिशचंद्र ने कविवचन सुधा पत्रिका का विमोचन किया। इसका भारतीयों में बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। पर अभी भी समाज का अति महत्वपूर्ण भाग महिलाएं स्वतंत्रता गतिविधियों से दूर थी। आंदोलन की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए 1874 में भारतेंदु जी ने बालबोधिनी पत्रिका का मासिक प्रकाशन

प्रारंभ किया। 1877 में बालकृष्ण भट्ट द्वारा हिंदी प्रदीप का प्रकाशन इलाहाबाद प्रयागराज से किया। हिंदी प्रदीप ने यूनाइटेड प्रोविंस (उत्तरप्रदेश) तथा आसपास के हिंदी भाषी राज्यों में ख्याति प्राप्त की तथा भारतीयों को स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा में आने के लिए प्रोत्साहित किया। बाल गंगाधर तिलक ने बनारस (वाराणसी) से केसरी का हिंदी संस्करण प्रकाशित किया जिसके माध्यम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को स्वाधीनता संग्राम का हिस्सा बनाया। राजनीतिक दृष्टि से भारतमित्र (1877), उचित वक्ता (1878), सार सुधानिधि (1878), भारतोदय (दैनिक, 1883), भारत जीवन (1884), भारतोदय (दैनिक, 1885), शुभचिंतक (1887) और हिंदी बंगवासी (1890) विशेष महत्वपूर्ण हैं। हम "अभ्युदय" (1905), "प्रताप" (1913), "कर्मयोगी", "हिंदी केसरी" (1904–1908) आदि के रूप में हिंदी राजनीतिक पत्रकारिता को कई डग आगे बढ़ाते पाते हैं। प्रथम महायुद्ध की उत्तेजना ने एक बार फिर कई दैनिक पत्रों को जन्म दिया। कलकत्ता से "कलकत्ता समाचार", "स्वतंत्र" और "विश्वमित्र" प्रकाशित हुए, बंबई से "वेंकटेश्वर समाचार" ने अपना दैनिक संस्करण प्रकाशित करना आरंभ किया और दिल्ली से "विजय" निकला। 1921 में काशी से "आज" और कानपुर से "वर्तमान" प्रकाशित हुए। इस प्रकार हम देखते हैं कि 1921 में हिंदी पत्रकारिता फिर एक बार करवटें लेती है और राजनीतिक क्षेत्र में अपना नया जीवन आरंभ करती है। हमारे साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में भी नई प्रवृत्तियों का आरंभ इसी समय से होता है। हिंदी पत्रकारिता का प्रभाव इस उदाहरण से देखा जा सकता कि एक बार पूना में प्लेग फैलने पर तिलक और आगरकर ने अपने एक लेख में कमिश्नर वाल्टर चार्ल्स रैंड की आलोचना की। तिलक और आगरकर को जेल में डाल दिया गया। तिलक को गुरु मानने वाले चापेकर बन्धुओं ने रैंड और उसके अंगरक्षक लेफ्टिनेंट आयर्सट की गोली मार हत्या कर दी।

क्रान्तिकारियों, राजनैतिक दलों तथा संस्थाओं द्वारा हिंदी का उपयोग – आधिकारिक तौर पर देखा जाए तो 1803 में विलियम फोर्ट कॉलेज की स्थापना ने ही हिंदी भाषा को भारतीय शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करने पर जोर दिया। ईसाई मिशनरियों के भी अनजाने में सही धर्म के प्रचार प्रसार हेतु धार्मिक ग्रन्थों का हिंदी में अनुवाद किया तथा उसे सामान्य लोगों तक ले कर गए। 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई। कांग्रेस की स्थापना के बाद हिंदी का स्वतंत्रता के लिए बहुत प्रयोग देखने को मिले। महात्मा गांधी ने स्वयं हिंदी के प्रचार की और बहुतायत उपयोग की कमान संभाली। 1918 के अधिवेशन में गांधी स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रभाषा के चयन के लिए चार मानदण्ड स्थापित किए, पहला – भाषा सीखने में सुगम हो, दूसरा – राष्ट्र के अधिकतर भूभाग में बोली जाती हो, तीसरा – संस्कृति समाज और धर्म तीनों तत्वों की अभिव्यक्ति करती हो, चौथा – तात्कालिक कारणों से प्रभावित न हो। महात्मा गांधी भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने प्रारंभ से हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने का अथक परिश्रम किया। उनका अनुभव था कि "पराधीनता चाहे राजनीतिक क्षेत्र की हो अथवा भाषाई क्षेत्र की, दोनों ही एक दूसरे की पूरक और पीढ़ी–दर–पीढ़ी सदा परमुखापेक्षी बनाये रखने वाली है"। सन् 1917 में उन्होंने एक परिपत्र निकाल कर हिंदी सीखने के कार्य का सूत्रपात किया। गांधीजी की प्रेरणा से 1925 में कांग्रेस ने यह प्रस्ताव पास किया कि

कांग्रेस का, कांग्रेस की महासमिति का और कार्यकारिणी समिति का कामकाज आमतौर पर हिन्दुस्तानी में चलाया जाएगा। इसी का परिणाम था कि सन् 1925 में अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन भरतपुर में हुआ जिसकी अध्यक्षता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की और उन्होंने हिंदी में बोलकर हिंदी का प्रबल समर्थन किया। बड़े–बड़े हिंदी सम्मेलनों की अध्यक्षता की जिसमें बड़े–बड़े राजनेता साहित्यकार भाग लेते थे। 1925 के कांग्रेस अधिवेशन में घोषणा की गई कि कांग्रेस या तो क्षेत्रीय भाषाओं में काम करेगी या हिंदी का पूर्णतः काम करेगी। 1931 के अधिवेशन में सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपना अध्यक्षीय भाषण हिंदी में ही दिया। इसके अलावा सरोजिनी नायडू, मदनमोहन मालवीय, गोपालकृष्ण गोखले, डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी के उपयोग की पुरजोर वकालत की।

महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, चापेकर बन्धु आदि, गुजरात में महात्मा गांधी, पंजाब में लाल लाजपतराय, बंगाल में हिंदी के बड़े समर्थक थे। ये सभी नेता अधिवेशनों तथा जनसभाओं में हिंदी का उपयोग करते थे। भारतीय साहित्यकारों ने हिंदी में निरंतर प्रयोग कर इसे बड़े जन समुदाय की भाषा के रूप में स्थापित कर दिया था। महाराष्ट्र में बालगंगाधर तिलक ने स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, काका कालेलकर, एन सी केलकर, चापेकर बन्धु, भंडारकर आदि नेताओं ने हिंदी का स्वतंत्रता आंदोलन में उपयोग किया। आज कुछ राज्यों में हिंदी का विरोध देखने को मिलता है। परंतु आज़ादी के समय की बात है। दक्षिण के ही युवा नेताओं ने सी. राजगोपालाचारी से हिंदी को सिखाने तथा प्रचार–प्रसार में सहायता करने की मांग की थी। सी राजगोपालाचारी ने गांधी जी प्रेरणा से राष्ट्रभाषा प्रचार सभा की अध्यक्षता की और तमिलनाडु के युवकों के बीच स्वतंत्रता आंदोलन ने हिंदी की उपयोगिता को सिद्ध किया।

उड़ीसा में हिंदी शिक्षण मंदिर संस्थान ने हिंदी को सामान्य जनमानस के बीच लोकप्रिय किया। बंगाल में रवींद्रनाथ टैगोर, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, सुभाषचन्द्र बोस आदि ने अपने भाषणों में हिंदी का उपयोग किया। बंकिमचन्द्र ने कहा जो लोग हिंदी की सहायता से विभिन्न प्रदेशों के बीच बन्धन स्थापित करने में सफल होंगे, वे ही सच्चे भारत बन्धु कहलाएंगे। असम में राष्ट्रभाषा समिति और हिंदी असमिया साहित्य परिषद ने हिंदी का प्रचार–प्रसार किया। बिहार की एक सभा में डॉ राजेंद्र प्रसाद ने कहा कि जो हिंदी का प्रचार–प्रसार करेगा, उसे राष्ट्रीयता का समर्थक मन जाएगा। उत्तर प्रदेश में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन को हिंदी प्रहरी के रूप में जाना जाता है। उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की और इसकी कई शाखाएं स्थापित की। पंजाब में लाला लाजपत राय ने राष्ट्रीय शिक्षण विद्यालय की स्थापना कर हिंदी द्वारा राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार–प्रसार किया। सरदार भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, चन्द्रशेखर आज़ाद ने अपने क्रांतिकारी आह्वानों में हिंदी का उपयोग किया। रामप्रसाद बिस्मिल ने राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत किताबें हिंदी में लिखी। अंग्रेजी सरकार ने उनकी किताबों को प्रकाशित ही नहीं होने दिया।

निष्कर्षतः इन सब ख्यातलब्ध साहित्यकारों, क्रांतिकारियों और संस्थाओं ने हिंदी का उपयोग अपनी युग प्रवर्तक विचारधारा के प्रचार–प्रसार में किया। भारतीय जननायकों ने अपने विचार के बाणों को हिंदी की प्रत्यंचा पर आधार बना कर आज़ादी के लक्ष्य को भेदा। हिंदी ने वैचारिक क्रांति के प्रवाह और प्रसार को निरंतर बनाए रखा। स्वतंत्रता संग्राम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के विवरण को नई पीढ़ी जब कभी स्मरण करेगी, उसे हिंदी का अनन्य स्थान सदैव दिखेगा। हिंदी ने प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्वाधीनता संग्राम की लौ के लिए ईंधन का काम किया। आज हिंदी के साभार से ही हम लोग अपने स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से परिचित हैं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी के योगदान पर एक संपूर्ण ग्रन्थ की रचना की जा सकती है, इसमें कोई अतिशयोक्ति न होगी।

नितेश तिवारी
गाज़ियाबाद

आजादी की गाथा दोहराती हिंदी भाषा

स्वतंत्रता के पथ पर चलने वाले,
जाने कितने देश प्रेमी कुर्बान हुए,
जिनके बलिदान की है, गाथा अनगिनत
जाने कितने ही, लहूलुहान हुए।
पथ था कठिन, मन में था अटूट विश्वास
नही रुकेगें, नही झुकेगें, आये कोई भी तूफ़ान,

स्वतंत्रता का परचम लहराना था,
भारत से अंग्रेज़ो को दूर भागना था,
अनगिनत वीरों ने स्वेच्छा से दी थी कुर्बानी
कुछ याद है अब भी और कुछ है गुमनामी।
भाषा जो भावों की अभिव्यक्ति है,

जन आंदोलन की शक्ति है,
हिंदी थी जो, सर्वव्याप्त थी
जो स्वर, ध्वनि और गूंज बनकर
आज़ादी के परचिन्ह में सबसे साथ थी,
कहने को थी, एक सूत्र धार
पर किया उसने ऐसा कमाल
कोई भी अछूता नहीं रहा उससे

हिंदी बन गई राष्ट्र की पतवार
आज़ादी के बाद भी हिंदी वर्चस्व रहा
जो शामिल थी आज़ादी के आह्वान में
और आज़ादी के सम्मान में,
भारत अनेकता में एकता का प्रतीक
विभिन्न विषमताओं का मेल
विभिन्न भाषाओं का समावेश
जो स्वतंत्रता आंदोलन से अब तक साथ निभाया है
वह हिंदी है, राजभाषा
जिसने आज़ादी के बाद भी, भारत का गौरव बढ़ाया है।

लीना मौंदेकर
सीआरएल–बेंगलूरु

वैसे हिंदी उतनी भी आसान नहीं....

टीचर – रामस्वरूप बीमार था, फलस्वरूप मर गया।

चलो सब लोग इसका अंग्रेजी में अनुवाद करो...

पप्पू – मास्टर साहब, अगर बीमार रामस्वरूप था, तो फलस्वरूप कैसे मरा???

टीचर – मूर्ख, इसका मतलब है रामस्वरूप बीमार हुआ, परिणामस्वरूप मर गया।

पप्पू – ले अब तीसरा मर गया... जो बीमार है, वो क्यूं नहीं मर रहा....!

वैदिक साहित्य में महिलाओं का चित्रण – तटस्थ विश्लेषण

हम सभी पौराणिक कथाओं में हिंदू धर्म और उसके अनुकरणीय चरित्रों के बारे में सुनते हुए बड़े हुए हैं। उनमें से कई चरित्रों का चित्रण इतना विशाल हुआ करता था कि हम उनकी अविश्वसनीय जीवन शैली से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकते थे। यह विश्वास करना मुश्किल हो जाता है कि ऐसे शक्तिशाली पात्र कभी हमारी पृथ्वी पर रहा करते थे। पौराणिक कथाओं में हमेशा शक्तिशाली महिलाओं को याद किया जाता है। उनकी कहानियां हमें हिम्मत देती हैं। ये महिलाएं न केवल हमारी पौराणिक कथाओं का हिस्सा थीं बल्कि उन्होंने न्यायसंगत दुनिया की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे दृढ़ निश्चयी, बहादुर और रमणीयता की अप्रतिम मिसाल हैं।

भारत और बाहर के लोग, जो महाभारत और रामायण के महाकाव्यों से परिचित हैं, सीता, द्रौपदी, कुंती जैसे महिला पात्रों के बारे में जानते हैं। इन महिलाओं को सम्मान, दृढ़ता और 'आदर्श नारीत्व' का प्रतिनिधि माना जाता है। लेकिन समकालीन लेखक और रचनात्मक कलाकार इन पंक्तियों के बीच छिपी बात को पढ़ रहे हैं और अपने पात्रों में कुछ ऐसी बारीकियों को सामने ला रहे हैं जो उन्हें अधिक मानवीय और अधिक सुलभ बनाती हैं। प्राचीन लिपियों पर इस नए दृष्टिकोण का एक ताज़ा पहलू यह है कि महिला पात्रों पर लेखकों की लेखनी ज़रा तंग दिखती है। हमारे महाकाव्य महज किताबें नहीं हैं, बल्कि किताबों का संग्रह है, जो अलग–अलग लोगों द्वारा अलग–अलग समय पर लिखी गई हैं, इसलिए उस समय के महिला पात्रों के चित्रण में उनके तात्कालीन नैतिक मूल्य ही परिलक्षित होते हैं। पौराणिक महिला पात्रों के बारे में हम जितना अधिक समय पीछे जाते हैं, उतना ही अधिक पता चलता है कि महिलाएं कितनी शक्तिशाली थीं। उदाहरण के लिए, शिव जी की पत्नी पार्वती भोली–भाली ही नहीं थीं। उसके अपने दृढ़ विचार थे, वे अपने फैसले खुद लेती थीं और उनका पालन करती थीं। यह इस बात से सिद्ध होता है कि शिव जी के मना करने के बावजूद वे अपने पिता के 'दक्ष यज्ञ' में बिना किसी निमंत्रण के जाने का फैसला करती हैं।

कई शताब्दियों तक भारत में और दुनिया भर में, साहित्यिक क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व रहा। शास्त्रों से लेकर महाकाव्यों तक, कथाओं से लेकर लोककथाओं तक पुरुष लेखकों ने न केवल महान, धर्मपरायण और शक्तिशाली पुरुषों की कहानियों पर ध्यान केंद्रित किया, बल्कि उन्होंने महिलाओं से उनके महिमामंडन का मौका भी छीना पुरुषों द्वारा बताए गए महिला पात्रों को बड़ी आसानी से दयनीय बनाया गया। उन्हें देवी बनाया गया या राक्षसी प्रवृत्ति का पात्र बनाया गया जो कहानी के प्रवाह के अनुसार बहते चले गए। संतोष इस बात को लेकर होता है कि आज कहानी थोड़ी अलग है। आधुनिक लेखिकाएं पौराणिक और लोक कथाओं की महिला पात्रों को सकारात्मक रूप से नए सिरे से लिख रही हैं जो वास्तव में इसके योग्य थीं। अनुजा चंद्रमौली, साईस्वरूपा अय्यर, कविता केन जैसी कई लेखिकाएं इन कहानियों को दोहराते हुए भारतीय पौराणिक कथाओं में महिला चरित्रों को अंधेरे से प्रकाश की ओर लाते हुए सुर्खियों में ला रही हैं।

वाल्मीकि रामायण (ईसा पूर्व लगभग दूसरी शताब्दी की रचना) को भारत में शिक्षित, अशिक्षित दोनों वर्गों में बड़ा आदर दिया जाता है। विविधताओं के बावजूद, कथानक में महिला पात्रों की भूमिका महत्वपूर्ण है। श्रीराम के जीवन के महत्वपूर्ण चरणों के आधार पर, महिलाओं को निम्नानुसार विभाजित किया जा सकता है– 1. शैशवावस्था में – इस चरण से चार मुख्य महिला पात्रों को चित्रित किया गया, माँ कौशल्या, उनकी दो सौतेली माताएँ – कैकेयी और सुमित्रा और मंथरा व अहिल्या। 2. युवावस्था में – राम की पत्नी

सीता, उनकी बहन उर्मिला और उनके चचेरे भाई, मंडावी और श्रुतकीर्ति। 3. वनवास में – अनसूया, सूर्पणखा, शबरी। रामायण में महिलाओं की कई व्याख्याएं शोध की दृष्टि से मौजूद हैं। मोटे तौर पर, रामायण में दो प्रकार की महिलाओं का चित्रण किया गया है। इसमें धर्मपरायण और आज्ञाकारी बेटियां, बहनें और पत्नियां हैं। वे आम तौर पर अपने जीवन में पुरुषों की इच्छा के अनुसार कार्य करती हैं और इसलिए उन्हें अच्छा, महान और गुणी और यहां तक कि अलौकिक भी माना जाता है। परिस्थितिवश वे आवेग में आकर कार्य करती हैं, जिज्ञासावश कार्य करती हैं, असफल होती हैं या आदेशों का पालन करते हैं या दुखद परिस्थितियों से मिलती हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है सीता द्वारा उनके बहनोई लक्ष्मण द्वारा खींची गई रेखा पार करना जो उनकी सुरक्षा के लिए बनाई जाती है। रेखा लांघने पर उनका अपहरण हो जाता है। एक और उदाहरण अहिल्या का है, जो जिज्ञासावश इन्द्र को देखती हैं और इंद्र भेष बदलकर उनसे व्यभिचार करता है और इस तरह उनका उत्पीड़न होता है। महाकाव्य की दूसरी प्रकार की महिलाएं महत्वाकांक्षी हैं, जो सत्ता चाहती हैं। इसमें राम की सौतेली माँ कैकेयी और मंथरा हैं जो कैकेयी के पुत्र भरत के लिए सिंहासन सुरक्षित करने के लिए उन्हें राज्य से चौदह वर्ष तक वनवास भेज देती हैं। इसका एक और उदाहरण रावण की बहन सूर्पणखा है जिसे प्रेम की लालसा करने के कारण आदर्श पुरुषों के हाथों दंडित किया गया। दोनों ही मामलों में, आदेश का पालन करने में महिलाओं की विफलता का चित्रण किया गया है।

रामायण के साथ हमें दूसरे महान महाकाव्य, महाभारत में भी नारी चित्रण को समझना होगा। रामायण की तुलना में महाभारत में नारी पात्र अधिक प्रचुर मात्रा में है और मुखर है। हालाँकि, इस मामले में जो बात सबसे अलग है, वह यह है कि इसमें पितृसत्तात्मक प्रभाव थोड़ा कम दिखाई देता है और महिला पात्रों का व्यक्तित्व हमेशा उनके पतन का परिणाम नहीं होता है। महाभारत में महिलाएं अधिक मुक्त दिखाई देती हैं। फिर चाहे वैवाहिक संबंध हों, बहुविवाह और बहुपत्नी (पांडु और उनकी पत्नियों और द्रौपदी और उनके पति) की बात हो। यद्यपि महिलाएं बेटियों, बहनों, पत्नियों और माताओं के रूप में अपनी भूमिकाएं बरकरार रखती हैं, वे सीखने में भी सक्षम हैं (द्रौपदी 36 कलाओं में कुशल थीं), राजनीति और युद्ध कला रूप से सक्षम हैं जैसे हिडिम्बा, अंबा आदि। हालाँकि, घटनाक्रमों में आज्ञाकारी और आत्म–बलिदान करने वाली पत्नियों की भी सराहना की जाती है। महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार को उजागर करें तो यदि जरूरी नहीं कि यह गलत संकेत दे रहा हो। रामायण की तरह, अगर महिला के सम्मान को खतरा है (इस मामले में द्रौपदी का चीरहरण), तो महाकाव्य में इसे खतरे के रूप में लिया जाता है पति की मर्दानगी और युद्ध के लिए ललकारा जाता है। महाभारत में महिलाओं, विशेष रूप से द्रौपदी को अक्सर सवाल करते देखा जाता है जैसे अपने पतियों के फैसलों, राजनीतिक मामलों को प्रभावित करने वाली बातों को लेकर। लेकिन रामायण में कहीं भी ऐसा वर्णन नहीं है।

स्वतंत्र विचारों वाली महिलाएं

हिंदू पौराणिक कथाओं से महिला पात्रों की कई कहानियां बताती हैं कि महिलाएं उस समय कितनी मजबूत और स्वतंत्र थीं। सच्चाई यह है कि लोककथाओं में सती और सावित्री काफी विपरीत पात्र हैं। हममें से बहुत से लोग इन कहानियों को पूरी तरह से नहीं समझते हैं और इस तरह इन महिलाओं के बारे में गलत धारणा रखते हैं। लेकिन अगर आप पढ़ेंगे तो पाएंगे कि सती और सावित्री दोनों ही ऐसी महिलाएं थीं जिनकी अपनी स्पष्ट सोच थी जिसके कारण उन्होंने अपने पिता या पति के दबाव के बिना स्वतंत्र रूप से अपने जीवन का चुनाव किया।

औरत जिस आदमी से प्यार करती है उसका चेहरा ऐसे पढ़ लेती है जैसे एक नाविक खुले समुद्र को। वेदों और पुराणों में ऐसी कई महिलाएं हैं जिनके एक से अधिक पति / प्रेमी थे और समाज में उनके प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं

था। अप्सरा उर्वशी का उदाहरण हमारे सामने है। ऋग्वेद में उर्वशी और उनके पति राजा पुरुरवा के बारे में एक बहुत ही रोचक कहानी है। अप्सरा चार साल तक उसके साथ रहने के बाद राजा को छोड़ने का फैसला करती है। राजा का दिल टूट जाता है और उसे वापस आने के लिए भीख माँगता है, लेकिन वह इस तर्क पर मना कर देती है कि वह अमर है और राजा से ऊब चुकी है। ऐसी कहानियों से पता चलता है कि प्राचीन समाज में महिलाओं की स्थिति क्या थी। महिलाओं ने बिना किसी झिझक के अपनी इच्छाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त किया। सती या पार्वती का मामला लें। वह प्रजापति दक्ष की बेटी थी, जिसे शिव से प्यार हो गया था। शिव को पाने के लिए वह तपस्या करती हैं और जब शिव उनसे मिलने आते हैं, तो वह उनके साथ स्वतंत्र रूप से रहने की इच्छा व्यक्त करती हैं।

नारी जिसने देवताओं को सशक्त बनाया

अनेक महिलाएं जो पौराणिक कथाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं, ने देवताओं को उनके लक्ष्य और गंतव्य तक पहुंचने में मदद की। उदाहरण के लिए, उड़ीसा के जगन्नाथ मंदिर को लें। मंदिर में आप जो भी कहानियां सुनते हैं, वह भगवान की सुभद्रा, उनकी बहन के साथ बातचीत और देवी लक्ष्मी के साथ उनके विवाद के बारे में हैं। बुद्ध अपनी पत्नी यशोधरा और नवजात बच्चे को छोड़ने के बाद एक प्रबुद्ध शिक्षक बन गए। हालाँकि, यदि आप बुद्ध की आत्मज्ञान की यात्रा के बारे में कहानी पढ़ेंगे तो आप पाएंगे कि यदि चरवाहे सुजाता ने उन्हें खीर का कटोरा नहीं दिया होता, तो वे कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाते। ऐसी कई दंत कथाएं हैं जिनमें पुरुषों को मनाने और महान बनाने के लिए महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

देवदासियां

जबकि अधिकांश लोग दावा करते हैं कि हमारी प्राचीन संस्कृति में महिलाएं प्रतिबंधित थीं और उनके पास कथित शक्तियां नहीं थीं। हमारे समाज में तीन प्रकार की महिलाएं थीं। भिक्षुनी जो पतिविहीन होती थीं। दूसरी वे महिलाएं थीं जिनका एक पति था और वे जीवन भर उसके प्रति वफादार रहीं। तीसरी देवदासी थीं, जिनके कई प्रेमी थे लेकिन जो किसी से शादी नहीं करती थीं। देवदासियाँ बहुत धनी और शक्तिशाली थीं। उनका कई मंदिरों पर

नियंत्रित था, जहां वे गातीं और नृत्य करती थीं। लेकिन समय के साथ, उन्हें भारत के सभ्रांत वर्ग में हेय दृष्टि से देखा गया। यहाँ तक कि लोग उन्हें वेश्या भी समझते थे। इस प्रकार, यह प्रथा धीरे–धीरे समाप्त हो गई और सैकड़ों महिलाओं का जीविकोपार्जन का ज़रिया छीन लिया गया।

भारतीय समाज में महिलाओं की विकासशील स्थिति

आदमी मकान बनाना जानता है, तो स्त्री उस मकान को घर बनाना जानती है। ऋग्वेद की रचना की अवधि प्रारंभिक वैदिक काल (1800–1000 ईसा पूर्व) है जो हिंदू धर्म और समाज की आधारशिला होने के साथ–साथ प्रथम भी है और महिलाओं की स्थिति का अध्ययन करने का साहित्यिक स्रोत भी। घरेलू अर्थव्यवस्था और समाज दोनों में नारी की उपस्थिति को महत्वपूर्ण माना जाता था हालांकि उन पर पितृसत्तात्मक नियंत्रण के बावजूद मजबूती से जुड़ा कोई विशेष मूल्य नहीं था। इस काल में स्त्रियों को शिक्षा भी दी जाती थी। कई उच्च वर्ग की महिलाएं उच्च शिक्षित थीं और बौद्धिक और दार्शनिक प्रवचनों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। ब्रह्मवादिनी या वैदिक भजनों की महिला संगीतकारों के संदर्भ, जैसे गार्गी, गोशा, मैत्रेयी, अपाला, लोपमुद्रा, विश्वरा, मुद्गालिनी और इंद्राणी को पूरे विस्तार से शामिल किए गए हैं।

साहित्यिक गतिविधियों और घरेलू अर्थव्यवस्था के अलावा जीविकोपार्जन के अन्य विकल्प भी महिलाओं के लिए बढ़ाए गए। इनमें शिक्षण, संगीत और नृत्य के साथ–साथ सेवोन्मुख कार्य भी शामिल हैं। विश्वपाल, शशियासी, दनु, सरमा और वधीमती जैसी महिला योद्धाओं को युद्ध के मैदान में वास्तविक लड़ाई में भाग लेने का वर्णन मिलता है (ऋग्वेद 1.32.9, 5.61.6, 5.61.9,10.39,

40)। इसके अलावा, महिलाएं यदि चाहें तो अविवाहित भी बनी रह सकती थी (1.117; 2.17; 10.39.3; 8.21.15)। वेदों और पवित्र ग्रंथों की सीमित पहुंच के बावजूद विदूषी महिलाओं के साथ–साथ गुरु माताओं की संख्या भी उल्लेखनीय है। दूसरी ओर सचाई यह भी है कि परिवार में महिलाओं की भूमिका हमेशा पुरुषों के अधीन रही। महिलाएं पुरुष प्रभुत्व के अधीन थीं। धार्मिक अनुष्ठानों में पति की तुलना में उनकी सहभागिता भी अपेक्षाकृत कम थी। यह स्थिति उत्तर वैदिक काल (1000–600 ईसा पूर्व) में और अधिक बदतर हो गई थी। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में महिलाएं पितृसत्ता की धारणाओं के आगे झुकी हैं या नहीं, यह समझना महत्वपूर्ण है। इन सबके बावजूद इसमें कोई दोराय नहीं कि नारी समाज और परिवार की केन्द्रबिंदु रही है।

1960 के दशक में, महाराष्ट्र की समाजशास्त्री, शिक्षाविद विदूषी इरावती कर्वे ने एक तरह की मिसाल कायम की, जब उन्होंने Yuganta: The End of an Epoch में संकलित अपने विश्लेषणात्मक निबंधों में, मानवतावादी दृष्टि से महाभारत में महिलाओं सहित नायकों की समीक्षा की और इसे नारीवादी दृष्टिकोण कहा। प्रस्तावना में वह कहती हैं, "महाभारत यह नहीं दर्शाता है कि महिलाओं के प्रति शिष्टता का कोई रवैया था।" आज की पीढ़ी के लेखक, जो महाकाव्यों को समालोचनात्मक रूप से देख रहे हैं, इन विचारों को आगे बढ़ा रहे हैं। पुणे की लेखिका कविता केन की सबसे अधिक

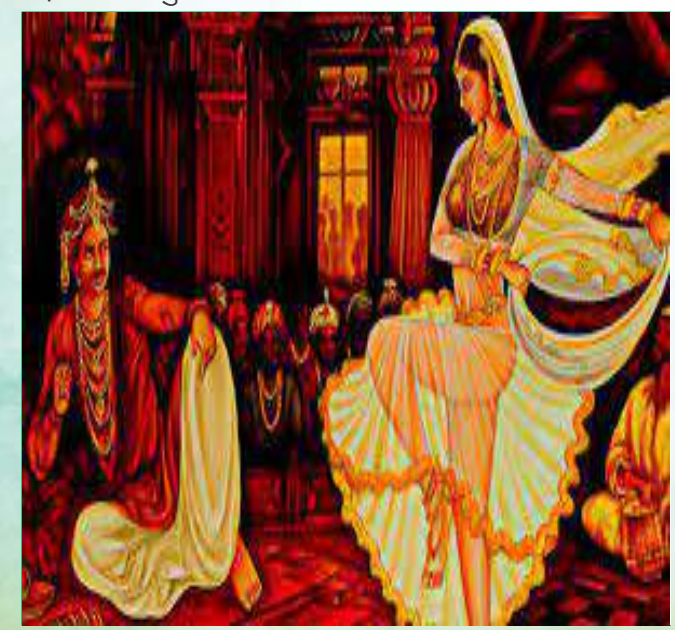

बिकने वाली पहली पुस्तक Karna's Wife: The Outcast's फनममद में महाभारत के अपेक्षाकृत कम चर्चित नायक कर्ण की पत्नी वृषाली को समझने की कोशिश की गई है। एक कुशल क्षत्रिय राजकुमारी होने के बावजूद वह इस महान कृति में शायद ही दिखाई देती है। उसे कर्ण से प्यार हो गया और संकट के समय में वह उसके साथ खड़ी रही। उसके निम्न जाति में जन्म लेने के लिए उसका उपहास किया गया। इसके अलावा, कविता ने महाकाव्यों के अन्य कम पात्रों पर लिखा है, जैसे उर्मिला, सीता की बहन और लक्ष्मण की पत्नी, जो अपने बड़े भाई और भाभी सीता के साथ चाहते हुए भी वनवास नहीं जा सकी थीं। लक्ष्मण को जंगलों में एक कर्तव्यपरायण भाई और मातुल्य भाभी सीता के रक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। उर्मिला सीता की बहन थीं। सीता की ही तरह प्रतिभाशाली और सुंदर भी। उसने अपने पति की अनुपस्थिति में उन 14 लंबे वर्षों में क्या किया होगा? जब उसने उसे एक नई दुल्हन के रूप में पीछे छोड़ दिया तो उसे कैसा लगा होगा? क्या मंथरा को एक निंदनीय व्यक्ति के रूप में चित्रित किए बिना रामायण लिखी जा सकती थी?

महाकाव्यों में महिलाओं के चित्रण के संक्षिप्त विश्लेषण और उनके चित्रण की तुलना के बाद वैदिक साहित्य में महिलाओं की प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति के बारे में कुछ बिंदु प्रकाश में आते हैं। वैदिक ग्रंथ अपनी प्रस्तुति और महिलाओं के चित्रण में तुलनात्मक रूप से उदार प्रतीत होते हैं। एक ओर जहां परिवार और समाज में स्त्री का अधिकार वैदिक युग में पुरुष के अधिकार से बहुत नीचे था, वह तब भी अपने आप में एक व्यक्ति थी, अविवाहित रहने का विकल्प चुन सकती थी और उसे शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। हालांकि रामायण और महाभारत में महिलाओं का चित्रण एक हद तक इसके अधिक निकट है। मनुस्मृति जैसे धर्मनिरपेक्ष ग्रंथों में, महिलाओं को अचानक पुरुष सम्मान और यौन अपराधों के पीछे का कारण माना जाने लगा। इस प्रकार, वैदिक समूह इस बारे में बात करते प्रतीत होते हैं कि समाज के एक हिस्से में महिलाएं क्या और कैसी थीं यानी वास्तविकता की बात की गई। मनुस्मृति और महाकाव्य इस बात पर जोर देते प्रतीत होते हैं कि महिलाओं को क्या होना चाहिए यानी वहां आदर्शवाद की बात की गई। इन ग्रंथों का यह आदर्शवादी दृष्टिकोण

आदर्श महिला का वर्णन करने की कोशिश करता है कि वे विनम्र हैं, मानसिक रूप से सबल हैं, आत्म–बलिदान करने वाली और आज्ञाकारी हैं। रामायण में जहां लड़कियों का विवाह आवश्यक माना गया है और महिलाओं पर पुरुषों का मुखर अधिकार बताया गया है, वहीं ऋग्वेद में इसके विपरीत विवाहित महिला अपने ही घर की मालकिन होती है और अपने ससुराल के लोगों पर अधिकार रखती चित्रित की गई है जो अपने पति से अपने कर्तव्यों की व्याख्या स्पष्ट रूप से करती है। वेदों में महिलाएं पूरी स्वतंत्रता से घूम सकती थीं, आयोजनों में भाग ले सकती थीं। जैसा कि पहले कहा गया है, इन दोनों महाकाव्यों की रचना की वास्तविक तिथि निर्धारित करने के लिए कोई कालानुक्रमिक सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं है। हालाँकि, यह माना जाता है कि ग्रंथ, जैसा कि वे आज दिखाई देते हैं, तीसरी–चौथी शताब्दी (गुप्त काल) में संकलित किए गए प्रतीत होते हैं जिनमें लोककथाओं के माध्यम से पर्याप्त परिवर्धन किया गया। इसके अलावा इनमें स्थानीय नायकों और पारंपरिक कहानियों की छवि भी दिखाई देती है। इसलिए, यह विचार करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि ये ग्रंथ वर्णनात्मक से अधिक उपदेशात्मक थे। महाकाव्यों में क्या कहा गया है, इस पर चिंतन करने के बजाय प्राचीन भारत में सामान्य रूप से समाज और विशेष रूप से महिलाओं की स्थिति पर विचार करना महत्वपूर्ण है। यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि इतिहास का उपयोग लोकप्रिय विचारों में हेरफेर करने के लिए एक उपकरण के रूप में किया गया था। समाज में महिलाओं की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए महाकाव्यों का अध्ययन इतिहास का पूर्ण आधिकारिक स्रोत माना जाता है। लोककथाएं और किवदंतियां समाज और सामाजिक परिवेश और मानदंडों को प्रतिबिंबित करती हैं। वेदों और पौराणिक ग्रंथों में नारीवाद को हमें आज के परिप्रेक्ष्य में देखना होगा तभी हम महिला पात्रों को उनकी भूमिका के सापेक्ष समझ सकेंगे, उन्हें समुचित सम्मान और मान्यता दे सकेंगे।

अभी रोशन हो जाता है रास्ता,
वो देखो एक औरत आ रही हैं।

श्रीनिवास राव
बीईएल मुख्यालय

स्वतंत्रता में हिंदी काव्य का अतुल्य योगदान

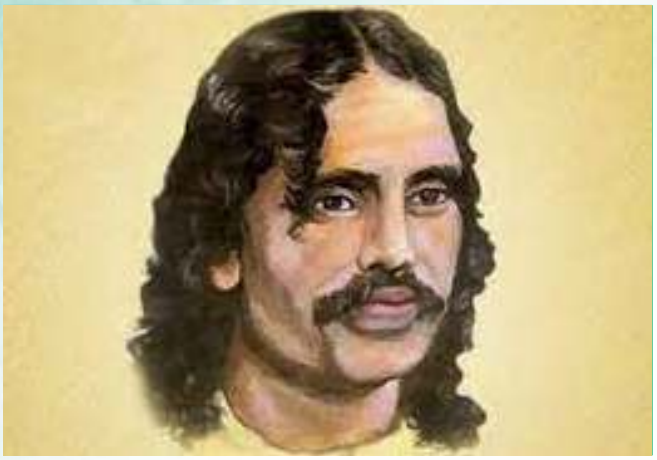

भारत की आज़ादी की बात करें तो निश्चित ही भाषा ने अपना अहम योगदान दिया है। जहां उत्तर भारत में हिंदी ने आजादी के लिए चल रहे आंदोलनों में अपनी अहम भूमिका निभाई वहीं दक्षिण भारत में यही काम वहाँ की स्थानीय भाषाओं ने किया। कोई भी बड़े से बड़ा आंदोलन देख लीजिये, लोगों को पास लाने और उनमें देश भक्ति का संचार करने में हिंदी भाषा ने अपना योगदान कम नही होने दिया। भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों की आजादी से ओतप्रोत रचनाओं तथा उनसे मिली प्रेरणा ने भारत की आज़ादी में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसे कतई भुलाया नहीं जा सकता। इस लेख में उन कवियों और उनकी रचनाओं के कुछ अंशों को जोड़ा गया है।

आधुनिक खड़ी बोली में हिदी कविता के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भारत दुर्दशा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है –

अंग्रेज़ राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।
हा! हा! भारत दुर्दशा देखी ना जाई।।

पंडित माखन लाल चतुर्वेदी की कविताओं ने भी स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना जाग्रत की। 'एक फूल की चाह; शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ –

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं
चाह नहीं सम्राटों के सर पर हे हरि! डाला जाऊं
चाह नहीं देवों के सिरपर चढ़ूं, भाग्य पर इठलाऊं
मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फ़ेंक
मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत प्रयाण गीत ने स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा आजादी के दीवानों को दी थी–

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुंज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो बढ़े चलो
अराति सैन्य सिन्धु में, सुबाडवाग्नी से जलो
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

कविवर श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का झंडा गीत स्वतंत्रता सेनानियों के लिए शास्त्र ही बन गया था। इस गाने की धूम हर घर में फैलने लगी थी। जब भी कोई सभा होती तो तिरंगे की शान में यह गाना अवश्य बजता था।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा
सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा बरसाने वाला
वीरों को हर्षाने वाला
मातृ भूमी का तन मन सारा
झण्डा ऊंचा रहे हमारा।

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की झांसी की रानी, रचना का भी स्वाधीनता आन्दोलन में विशिष्ट योगदान रहा है। यह रचना वीर रस से ओतप्रोत थी।

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बड़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुया द्वन्द्व असमानों में।
ज़ख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

श्री जगदम्बा प्रसाद मिश्र "हितैषी" की ये पंक्तियाँ आज भी बड़े गर्व से गायी जाती है –

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशाँ होगा।।
कभी वह दिन भी आएगा जब अपना राज देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मीं होगी और अपना आसमाँ होगा।।

प० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने स्वयं आज़ादी के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महती भूमिका निभाई।

जब करोगे क्रोध तुम, तब आएगा भूडोल,
काँप उठेंगे सभी भूगोल और खगोल,
नाश की लपटें उठेंगी गगन–मंडल बीच;
भस्म होंगी ये असामाजिक प्रथाएँ नीच!
औ पधारेगा सृजन कर अग्नि से सुस्नान;
मत बनो गत आश! तुम हो चिर अनंत महान!

इन कवियों के अतिरिक्त अनेक कवियों ने भी अपनी कविता के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भूमिका का निर्वाह किया है। इसमें बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', प्रताप नारायण मिश्र आदि अनेक नाम है जिन लोगों ने अपनी कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम की अलख जगाने में अपना योगदान देते रहे।

अमित कुमार
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

गांव से एक लड़का शहर पढ़ने आया.
एक लड़की ने पूछा- तुम्हारा निकनेम क्या है?
लड़का- हैं? वो क्या होता है?
लड़की- मतलब तुम्हें घर पर सब किस नाम से बुलाते हैं?
लड़का- कामचोर!

हिंदी बिना आज़ादी न मिलती

भारत एक विशाल देश है। हिंदी भाषा का जन्म लगभग हजार वर्ष पहले हुआ था। हिंदी भारत की मूल है। हिंदी भाषा हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है। भारत देश में हिंदी भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है और इसका स्थान विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में आता है इसलिए हिंदी भाषा को 14 सितंबर 1949 के दिन आधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया। भारत ही एक ऐसा देश है, जिसकी संपर्क भाषा और राजभाषा एक ही है, जो यह साबित करता है देश में हिंदी का कितना महत्व है।

भारत जब अंग्रेजों के अधीन था तब भी राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं ने देश की अपनी एक राष्ट्रभाषा होने की जरूरत को बड़ी गहनता से महसूस किया था। उन्होंने आजादी के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार पर भी बल दिया। उन्होंने कहा है– "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है"।

आजादी के पूर्व हिंदी ने अगर भारतीय नवजागरण की चेतना का वहन किया तो आजादी के बाद राष्ट्र निर्माण प्रेरणा का माध्यम भी बनी। साहित्य और ज्ञान के विविध क्षेत्रों में हिंदी में नए और मौलिक काम हुए। हिंदी सदियों से इस देश की संपर्क भाषा का काम करती रही है और प्रशासन में भी इसका उपयोग होता रहा है और इसे विशेष स्थान मिला है। देश की आजादी के बाद जब यह औपचारिक रूप से आजाद भारत की राजभाषा अंगीकार की गई, इससे इसकी अखिल भारतीयता को औपचारिक और सांवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ। तब से इसका प्रचार–प्रसार केंद्र सरकार की भी ज़िम्मेदारी हो गई। देश की स्वतंत्रता और विकास में हिंदी भाषा का अहम योगदान है। हिंदी से ही हिंद है। अब हिंदी राजभाषा की गंगा सेविश्व भाषा का महासागर बन रही है। विद्यार्थियों को आधुनिकता एवं अंग्रेजीयता से अलग होकर हिंदी की रोचकता और महत्ता को जानने–पहचानने की जरूरत है। आज हिंदी शब्दों की संख्या के आधार पर भी विश्व की सबसे अहम भाषा बन रही है।

हिंदी स्वतंत्र भारत की राजभाषा है। महात्मा गांधी, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, काकासाहेब कालेलकर जैसे महान व्यक्तियों के अथक परिश्रम के बाद ही वर्तमान हिंदी को यह सम्मान मिला है। अतः हम यही कहेंगे कि अनेक भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है लेकिन इन भाषाओं के साथ अपनी मातृभाषा का ज्ञान होना भी जरूरी है। वर्तमान में सरकार अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रही है हिंदी भाषा की महत्ता को अधिकतम सीमा तक बनाए रखने के लिए। अपनी मातृभाषा और अपने देश की महत्ता पर कुछ देशभक्ति गीत इसके उदाहरण हैं–

- वंदे मातरम...
- सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा...
- आई लव माई इंडिया...
- चक दे इंडिया...
- मेरा मुल्क मेरा देश...

हिंदी और हिंदुस्तान संबंधी कुछ और भी उक्तियाँ नीचे प्रस्तुत है–

हिंदी संबंधी–

"जन जन को जो मिलाती है, वो भाषा हिंदी कहलाती है"

हिंदुस्तान संबंधी–
"मरने के बाद भी जिसके नाम में जान है
ऐसे जांबाज़ सैनिक हमारे भारत की शान है"

जय हिंद, जय हिंदी...

एस. हंसवल्ली
बीईएल, चेन्नै

आजादी में हिंदी की भूमिका

बिशु प्रभाकर
कोटद्वार

हुई इन्तहा जब जुल्मों की,
तब देश की आत्मा ने दी आवाज
उठो, जागो और संघर्ष करो, मेरे बच्चों!
गुलामी की जंजीरों से मुझे मुक्त करो।
सुन भारत माता की करूण पुकार
कश्मीर से कन्याकुमारी तक
हर भारतवासी का जमीर था जागा
माता के आत्म सम्मान के लिए सब ने यह था ठाना
खुद को मिटाकर भी, अंग्रेजों को देश से है भगाना
देश के हर प्रांत, हर गली– मोहल्ले से
सड़कों पर समूह, लोगों का निकल आया

मगर एक–दूसरे को,
बातें अपनी नहीं समझा पाया
भारत माता को कैसे है,
अंग्रेजों की कैद से आजाद कराना
थी न कोई अपनी एक भाषा
संवादविहीन थे सभी
तब हिंदी ने आकर एक सेतु बनाया
गांधी, नेहरू, पटेल, सुभाष और
भगत सिंह आदि सबको,
एक साथ था बैठाया
हिंदी में अखबार छपे, तब
घर–घर पर्चा बंटवाया,
भारत छोड़ों अंग्रेजों, करो या मरो,
इंकलाब जिंदाबाद!, वंदे मातरम!,
तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा
इन नारों से हर प्रांत था गूंजा।
हिंदी ने देश के हर प्रांत को एक साथ था जोड़ा,
सन् 1947 में अंग्रेजों ने तब देश को छोड़ा
भारत माता ने गुलामी की जंजीरों था तोड़ा।

कहानी

बरसात की एक रात

संजय एक 22 वर्षीय युवा सॉफ्टवेयर इंजीनियर, पुणे स्थित टीसीएस जैसी नामचीन कंपनी में काम कर रहा था। वैसे तो वह लातूर जिले से था पर नौकरी मिलने के बाद उसकी पोस्टिंग पूना में हो गई थी। कंपनी में तनख्वाह बहुत अच्छी थी, तभी संजय पूना में आ बसा था। पुणे में वह किराए के मकान में रह रहा था।

रोज सुबह उठकर दफ्तर जाना, देर रात तक काम करना, दफ्तर से लौटने पर कभी रोटी–सब्जी, तो कभी सिर्फ दाल चावल बनाके सो जाना, यही उसकी दिनचर्या हो गई थी।

शनिवार और रविवार छुट्टी के दिन थे, तो वह आराम से उठता, उस दिन कपड़े धोना, इस्त्री करना जैसे काम करता और फिर वह टहलने निकलता। पुणे की सड़कों पर घुमना उसे बहुत अच्छा लगता। कभी–कभी सिंहगड किले या पर्वती पर जाना, या कभी नजदीकी जगह पर ट्रेकिंग के लिये जाना उसे बहुत पसंद था। मां और भाई से देर रात तक वीडियो कॉल कर बातें करता और फिर सो जाता, और फिर सुबह कार्यालय निकल पड़ता। इस तरह से उसकी जिंदगी बहुत सरल और खुशनुमा बीत रही थी।

जुलाई का महीना था। बारिश का मौसम शुरु हो चुका था। कभी हल्की तो कभी मूसलाधार बारिश हो जाती थी। आज कोई अर्जेंट काम आने से संजय देर रात तक दफ्तर में काम करता रहा। उसके कार्यालय में वही एक बैचलर था, तो उसका बॉस हमेशा कोई जरुरी काम आने पर उसे ही सौंप देता था। संजय भी बड़ी खुशी के साथ हर काम करता। बॉस भी हमेशा उसके काम की सराहना करता। उस दिन भी ऐसा ही हुआ, देर रात तक काम करने के बाद जब वह अपने दफ्तर से नीचे आया तो उसने देखा कि बाहर मुसलाधार बारिश हो रही है। उसने अपना रेन कोट चढ़ाया, बाइक चालू की और यह बुदबुदाते हुए घर निकल पड़ा कि पता नहीं कब से यह बारिश हो रही थी, दफ्तर में काम करते हुए इस बात का पता ही न चला!.

वह मन ही मन सोच रहा था। बहुत जगहों पर घुटने तक पानी जमा हो चुका था। सड़कों पर आवाजाही भी कम हो गई थी। मूसलाधार बारिश से सड़कें लगभग सूनी हो गई थी। हमेशा लोगों के लिए दौड़ने वाली राज्य परिवहन की लाल परी (बसें) डिपो में ही खड़ी थीं। शायद बहुत जगह पानी जमा होने के कारण बसें न चलाने का निर्णय लिया गया होगा।

वह लगभग स्वारगेट के नजदीक आया होगा तभी उसे एक लड़की बस स्टॉप पे खड़ी हुई दिखाई दी। वह अपने बाईक से आगे चला गया,पर न जाने उस के मन में क्या बात आयी उसने अपनी बाईक स्लो की और मुड़ के पीछे देखा। सड़क पर कोई नहीं था बारिश ने रौद्र रूप धारण किया था। बिजली बार बार चमक कर भारी बारिश होने की चेतावनी दे रही थी। उसने बाईक घुमाई बस स्टॉप के करीब आकर उसने देखा की लड़की पूरी तरह भीगी हुई है, बल्कि उसके पास छाता भी था, पर इस तूफानी बारिश में छाता का कोई उपयोग नहीं था। वह बस स्टॉप के एक कोने मे सिमटी हुई, डरी हुई खड़ी थी। संजय बाईक से उतरा उसने उसके करीब जा के पूछा" कहा जाना है आपको?" उसने कोई जवाब नहीं दिया उसने संजय की बात को अनसुना कर दूसरी ओर देखने लगी। संजय ने उसे फिर से सवाल किया "कहा जाना है आपको"? इस बार उस लड़की ने संजय को अपनी डरी हुई कपकपाती आवाज से कहा पिंपरी। संजय ने चारों ओर देखा एक भी आदमी नजर नहीं आ रहा था। सड़के भारी बारिश के कारण सुनसान हो गई थी। संजय ने उसे समझाया कि ज्यादा बारिश होने से बसें नहीं चल रही

हैं। रात भर यहां बारिश में रुक कर क्या करोगी, कोई करीबी रिश्तेदार हो तो बोलो। उसने कहा, "नहीं, मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है, मैं यहीं बस स्टॉप पर ही खड़ी रहूंगी।" संजय ने उसे गौर से देखा, वह पूरी तरह भीगी हुई थी। कपड़े भीगे हुए थे और उसके चेहरे से, बालों से पानी की बूंदे नीचे गिर रही थीं। उसकी पर्स भी भीग गई थी। संजय को उस पर तरस आया। उसने कहा, "नजदीक ही मेरा मकान है, आप चाहें तो कुछ समय के लिए साथ आ सकती हैं।" पर उसने संजय को सीधे सीधे ना कह दिया।

संजय उसकी मजबूरी समझ सकता था। अकेली लड़की भला किसी अजनबी के साथ क्यों जाएगी। कुछ सोचकर संजय ने उसे अपना परिचय दिया, "मेरा नाम संजय पाटिल है, मैं यहीं टी सी एस नामक कंपनी में सॉफ्टवेअर इंजीनियर का काम करता हूं।" उसने अपना आई.डी. कार्ड निकाल कर उसे दिखाया, उसने भी अपने मोबाइल की टॉर्च लाईट में उसका आई.डी.कार्ड पढ लिया। फिर भी वह अपनी ना पर अड़ी रही। बारिश और भी तेज हो चुकी थी। अब तो जोर की हवा भी चलनी शुरू हो गई थी। संजय ने उसे बताया कि मौसम शायद इससे भी जादा खराब हो सकता है। पर उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ लिया। संजय ने अपनी आखिरी कोशिश करते हुए दोबारा पूछा और बाईक को किक मार दी। उसी वक्त उस लड़की ने आवाज दी "रुक जाओ मैं आ रही हूं"! इतना कहकर वह संजय की पिछली सीट पर बैठ गई।

संजय नज़दीक ही किराए के फ्लैट में रहता था। थोड़ी ही देर में दोनों संजय की सोसायटी में पहुंच गए। संजय का घर दूसरी मंजिल पर था। दोनों सीढ़ियों से संजय के फ्लैट तक पहुंच गए। संजय ने अपने बैग से चाबी निकाली, दरवाजा खोला, लाइट चालू की और मुड़कर लड़की को अंदर आने को कहा। उसने देखा कि लड़की अंदर आने का बाद यहां–वहां देख रही थी। उसके चेहरे पर असहज भाव थे जो स्वाभाविक था। वह ठंड से कंपकपा रही थी। संजय ने गौर से देखा, वह सांवले रंग की थी और सुंदर थी। उसके बाल कमर तक आए हुए थे। इसका मतलब था उसे बाल बढ़ाना अच्छा लगता था। आंखें थोड़ी नीले रंग की थी, भौंहें पतली और काली थीं। गीले कपड़ों में वह और भी आकर्षक लग रही थी।

संजय ने खुद को संभाला। उसने उस लड़की से नजर हटाकर अंदर अपने बेडरूम में रखे अलमारी की ओर बढ़ा, अलमारी से टॉवेल, टी शर्ट और ट्रैक पैंट निकालकर उस लड़की को दी और बाथरूम को ओर हाथ दिखा कर कहा "अंदर जाकर गरम पानी से नहा लो, अच्छा महसूस होगा। यह टी शर्ट और पैंट है, पहन लेना।" इतना कहकर वह भी दूसरे बाथरूम में चला गया। गरम पानी से नहा कर वह बाहर आया। उसने देखा कि अभी तक वो लड़की बाहर नहीं आयी थी। संजय किचन में चला गया, गैस स्टोव पे चाय रखी। घर में आने के बाद पानी गिरने से फर्श गीली हो गई थी। संजय उसे पोंछने लगा। इतने में लड़की बाथरूम से बाहर आई। उसने संजय को देख कर कहा "मैं कर दूं क्या!" संजय ने उसकी तरफ देखा नहीं और अपना काम चालू रखा। उसने उसे सोफे पर जा कर बैठने को कहा। और उस लड़की को अपने मां को फोन करने के लिए कहा। उसने अपना मोबाइल निकाला पर वो भीग गया था और डिस्प्ले भी उड़ गया था। संजय ने उसे अपना मोबाइल दिया और फोन करने को कहा। खुद अंदर किचन में चाय लेने चला गया। अब लड़की भी कुछ ठीक महसूस कर रही थी, डर कम हुआ लग रहा था। उसनी अपने मां से बात की मूसलाधार बारिश और संजय के मिलने तक उसने सारी कथा मां को सुनाई। संजय उतने में गरमा गरम चाय लेके आ गया। लड़की ने मोबाइल संजय की ओर बढ़ाया और मां से बात करने को कहा। संजय ने उसकी मां से बात कर उसकी सुरक्षित होने विश्वास दिलाया। अब उस

लड़की का डर पूरी तरह निकला गया था। दोनों सोफे पे बैठ कर चाय पीने लगे।

संजय ने अब उससे उसका नाम पूछा। उसने मुस्कुराते हुए कहा वैशाली। और उसने एक ही प्रश्न में अपनी मां, पिताजी, छोटे भाई के बारे में बता दिया। अब उसने संजय से उसके बारे में पूछा "अब तुम्हारे और घरवालों के बारे में बताओ"! संजय ने कहा अभी नहीं बाद में और वह चाय के कप उठाकर किचन में चला गया। अब वो दाल चावल लगाने लगा। लड़की ने देखा संजय उसे टाल के किचन में चला गया था और अब वो भी किचन की ओर चल पड़ी। उसने संजय से कहा "मैं कुछ मदद करु क्या !" संजय फिर से उसे टाल गया और अपने काम में लग गया। वैशाली रूठ कर मुड़ी और सोफे पे आकर बैठ गई। संजय ने उसे टीवी लगाने के लिए कहा जिससे उसका टाइम पास हो सके।

बीस मिनट में संजय ने गरमा गरम दाल चावल बना लिया। उसने वैशाली को आवाज दी,उतने में वो भागकर किचन में आई, क्या हुआ,कोई मदद चाहिए? संजय ने उसे दाल वाला बर्तन हॉल में रखने के लिए कहा,उसे नैपकिन दिया और खुद चावल का बर्तन लेकर हॉल में आ गया। बारिश और तूफान की वजह से फर्श ठंडी हो चुकी थी। उसने फर्श पर मैट डाल दिया और दोनों खाना खाने बैठ गए। फ्लैट में बड़ी बालकनी थी जहां से ठंडी हवा की लहरें अंदर आ रही थी जिससे बदन पर रोमांच सा महसूस हो रहा था। दोनों को जोर की भूख लगी थी। बस कुछ ही देर में दोनों ने खाना खत्म कर दिया। संजय ने सारे बर्तन किचन प्लेटफार्म पर रख दिए और सोने की तैयारी में जुट गया। उसने वैशाली को अपना बेडरूम दे दिया और कहा "कुछ चाहिए तो मुझे आवाज देना"। पर अब की बार वैशाली ने उसे फिर से टोका, "तुमने अपने बारे में तो कुछ बताया नहीं"। संजय अब सोफे पर फिर से बैठ गया और अपने परिवार के बारे में बताना शुरू किया। "पिताजी को गुजरे कई साल बीत गए हैं, मां और भाई लातूर में हैं। भाई बी कॉम फाइनल ईयर में है। घर की सारी जिम्मेदारी मुझ पर है। मुझे जैसे ही यह काम मिला, मैं तुरंत यहां आ गया। अब अपनी नौकरी और परिवार को संभाल रहा हूं।"

संजय और बता ही रहा था कि इतने में लाइट चली गई। वैशाली संजय के पास ही बैठी थी उसने अनजाने ही डर के मारे संजय का हाथ पकड़ लिया। संजय हंस पड़ा और वैशाली से कहा डरना नहीं ऐसी तूफानी बारिश में लाइट तो जाएगी ही। उसने वैशाली का हाथ छुड़ा दिया। अपने मोबाइल के टार्च लाइट में अंदर जाकर मोमबत्ती निकाल लाई। उसने एक मोमबत्ती अपने बेडरूम में जहां वैशाली सोने वाली थी, वहां पर लगा दी और एक हॉल में लगाई। अभी भी वैशाली डरी हुई थी। संजय मगर शांत था।

रात के ग्यारह बज चुके थे, अगले दिन उसे ऑफिस भी जाना था। संजय ने वैशाली को बेडरूम में जाकर सोने को कहा। उसने कहा मैं सुबह ऑफिस चला जाऊंगा मेरी एक मीटिंग है तुम तैयार होकर चली जाना और हां, दरवाजा ठीक से खींच लेना ताकि दरवाजा का लैच ठीक से लग सके। वैशाली ने सिर्फ गर्दन हिलाई, संजय ने बेडरूम का दरवाजा बंद कर दिया। बारिश और भी तेज हो चुकी थी। वह बाहर आकर हॉल के सोफे पर लेट गया। काम की थकाहट से उसे सोफे पे लेटते ही नींद आ गई।

करीब साढ़े ग्यारह के समय कोई उसे उठा रहा है ऐसा भ्रम हुआ,पर उसने ध्यान नहीं दिया। अब फिर उसे एहसास हुआ कि सचमुच कोई उसे उठा रहा है। वह नींद से उठ कर बैठ गया, उसने देखा वैशाली उसके सिर तले बैठी है।

संजय उठकर बैठ गया, क्या हुआ? संजय ने पूछा। मुझे डर लग रहा है। अब संजय जोर जोर से हंसने लगा। वैशाली उसकी हंसी देखकर और भी शर्मिंदगी महसूस करने लगी। फिर संजय ने पूछा कहां सोओगी, तो उसने कहा, यहीं तुम्हारे पास! यह बात सुनकर संजय के पसीने छूट गए। लेकिन वैशाली ने स्पष्ट किया कि यहीं, इसी हॉल में। अब फिर से संजय हंस पड़ा, वैशाली ने कहा कि मैं अपना घर छोड़ के किसी के घर पे अब तक नहीं रही

हूं यह पहली दफा है जब वो किसी के घर में रह रही है। संजय हंसते–हंसते अंदर चला गया और मोबाइल टॉर्च की मदद से उसने अलमारी से एक सोलापुरी चादर और ब्लैंकेट निकाली। चादर उसने मैट पर बिछाई और ब्लैंकेट ओढ़ने के लिए दिया। अब संजय ने झूठे गुस्से से कह दिया "हां भई, अब सो जाओ, बिलकुल उठना नहीं, मुझे जरूरी मीटिंग में जाना है।"! और वह सो गया।

संजय सुबह 5 बजे उठ गया। बाहर अभी भी अंधेरा ही था। वैशाली के पास रखी हुई मोमबत्ती थोड़ी मंद हुई थी। संजय ने उसके चेहरे की ओर देखा। मोमबत्ती के प्रकाश से उसका चेहरा उजला हुआ था। सांवला रंग उस पर निखर रहा था, जुल्फें उलझी हुई थीं और कुछ रेशमी बाल उसके चेहरे पर छाए थे। ब्लैंकेट ओढने की बजाए बाजू में कर दिया था। संजय ने ब्लैंकेट को ठीक कर वैशाली पर डाल दिया। ब्लैंकेट डालते वक्त वैशाली का हाथ उससे छू गया और एक बिजली सी संजय के शरीर में दौड़ गई। बारिश थोड़ी कम हो गई थी, पर बाहर अभी भी ठंडी हवा बह रही थी जो संजय के मन को रोमांचित कर रही थी। उसके मन में उसके गालों को छूने की इच्छा बलवती होने लगी,उसके रेशमी बालों को गालों पर से हटाने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया, पर संजय का हाथ एकदम उसके गालों के करीब आकर रूक गया। संजय पीछे चला गया, आंखें बंद की और खुद को संभालने की कोशिश करते हुए खुद को समझाया कि यह गलत है।

इतने में लाइट आ गई। रात को लगाया हुआ लाइट का बटन ऑन ही रह गया था। सारे घर में और उस के निर्मल मन में उजाला हो गया था। वैशाली की नींद खुल जाएगी, इसलिए उसने उठकर तुरंत हॉल के लाइट का बटन बंद कर दिया। नहाकर उसने ब्रेड आमलेट बना के हाथ में बैग ली और जाने लगा। जाते वक्त उसने फिर से लाइट ऑन कर वैशाली का चेहरा देखा और मुस्कराया और लाइट बंद कर ऑफिस चला गया।

पूरा दिन संजय काम में बिजी रहा, लगभग रात के आठ बजे थे। संजय ऑफिस से निकला, आज बारिश नहीं थी। उसकी बाइक कल वाली बस स्टॉप के समीप आ गई और सारी घटनाएं आंखों के सामने से गुजरने लगी। एक अनजान लड़की को मैंने अपने घर में पनाह दी, एक बार तो मन पर काबू छूट गया था, वो मुस्कराया,वह चोर भी तो हो सकती है? पता नहीं, या किसी और इरादे से मेरे घर आई थी, पता नहीं? पर घर पे चोरी करने के लिए कोई महंगी चीज भी तो नहीं है। एक बेड है, एक अलमारी, उसमें रखे कुछ कपड़े, एक पुस्तकों से बिखरा हुआ टेबल, एक पुरानी कुर्सी और किचन के बर्तन..., मन की बातें भूलने की कोशिश करते हुए उसने बाइक सोसायटी कंपाउंड में पार्क की। फ्लैट के पास आकर लैच की चाबी निकाली। कल रात संजय ने उसे कहा था कि सिर्फ दरवाजा जोर से खींच लेना, जिससे दरवाजा लॉक हो सके।

संजय अंदर आया लाइट लगाकर सोफे पर बैठ गया। उसने चारों ओर नजर डाली, पता नहीं क्यों घर बदला बदला सा लग रहा था। फिर वह आश्चर्य से देखने लग गया, उसने देखा, फर्श साफ सुथरी दिखाई दे रही थी, कोई भी कचरा नहीं था, सोफा कवर करीने से सजाया हुआ था जिस पर हमेशा धूल और झुर्रियां होती थी। फिर संजय बेडरूम में चला गया, बेडशीट भी बदली हुई थी। उसने अलमारी खोली, बेतरतीब से ठुंसे हुए कपड़े व्यवस्थित दिख रहे थे। टेबल की कई महीनों से जमी धूल साफ कर दी गई थी, पेन पेंसिल सभी चीजें अपनी अपनी जगह चले गए थे, पुस्तके क्रम में सजाई गई थीं। उसकी आंखों में जिज्ञासा भरा आनंद दिख रहा था। जैसे ही वह मुड़ा, उसकी नज़र टेबल पर फड़फड़ाती हुए पन्ने पर पड़ी, उस पर कुछ लिखा था।

"धन्यवाद संजय! कल रात मुझे अपने घर पर पनाह देने के लिए शुक्रिया। अकेली होने पर भी आपने मुझसे सभ्यता से व्यवहार किया और मुझे सुरक्षित रखा।

अब मैं जा रही हूं, आपके लिए मैंने दाल–चावल और रोटी बनाके हॉट पॉट में रख दिए है। घर आते ही खा लेना। और हां, मुझे ऐसा रोज करना अच्छा लगेगा.... जैसे कल रात तुमने मेरा साथ निभाया, वैसे ही अगर जिंदगी भर साथ निभा सकते हो क्या?

अगर जवाब हां है, तो नीचे दिए हुए पते पर चले आना और पिताजी से बात करना"

पता

वैशाली अधटराव

संजय ने उस कागज को फोल्ड कर जेब में रख लिया। उसका मन आनंद से नाच रहा था, चेहरा खुशी से खिल उठा था। वह अपनी बाल्कनी में आया, रात की बारिश से अभी भी ठंडी हवाएं बह रही थी। संजय ठंडी बयार अपने शरीर पर महसूस कर रहा था। मिट्टी की सौंधी–सौंधी खुशबू मन को रोमांचित कर रही थी। अब मलमली ख्वाब मन में एक–एक कर आने लगे थे। सृष्टि के सारे रंग उसे आसमान में नजर आ रहे थे।

संजय अपने दोनों हाथ फैलाए मौसम का आनंद ले रहा था, ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त कर रहा था। अनजानी सी महक उसे सम्मोहित कर रही थी, वह महक थी उसके पहले पहले प्यार की.....

किरण देठे
क्षे.का. मुंबई

अभाव

दारिद्र्य में पल–बढ़ कर
दारूण हुई उनकी दशा,
किंतु उन्हें आभास नहीं अभाव का।

उनके हिस्से की सूखी रोटियॉ ही
तृप्त कर देती है उन्हें,
क्योंकि उनकी भूख को भी
दो बार ही दस्तक देने की आदत है।
टूटे बर्तन, कुछ आकार लिए पत्थर
जिनके लिए अनमोल खिलौने हैं,
खुला आसमान, पसरी सड़कें ही
जिनका है साम्राज्य।
जो सड़कों पर करते हैं निर्भीक क्रीड़ा
और प्रसन्न हो जाते हैं उस खेल से,
जो न उनकी समझ में आता है न औरों के।
किंतु दे जाता है
उनके चेहरों पर खुशी का भाव,
मानो कह रहे हों
हम जानते हैं हॅसना भी!!

बिमल मोहन सिंह रावत
पुणे

आज़ादी में हिंदी का सर्वोपांग योगदान

पुरातन काल से ही भारत राष्ट्र का अपना महत्व रहा है परंतु आज भारत का जो स्वरूप आप देख रहे हैं उस भारत ने 1947 में जन्म लिया इसके महत्व को पूर्ण रूप से समझने हेतु भारतीय संस्कृति के स्तंभों राष्ट्र ध्वज, राष्ट्रगीत तथा राष्ट्रभाषा को समझना आवश्यक है।

हिंदी केवल आम भाषा नहीं हैं अपितु भारत की आन, बान और शान है। जिस प्रकार मोतियों को पिरो कर माला बनाई जाती है, उसी प्रकार, हिंदी राष्ट्रीय अस्मिता एवं अस्तित्व को एक सूत्र में पिरोने वाली माला है। आधुनिक युग में अंग्रेजी भाषा ने समीकरण बदल दिए हैं। पाश्चात्य संस्कृति की ओर से प्रस्तुत नित्य नए प्रलोभनों ने भी हिंदी की उपेक्षा के लिए मजबूर किया है। भारत की पहचान में हिंदी का अद्भुत योगदान है क्योंकि भारतीय मानस के स्वावलम्बन, स्वाभिमान एवं आत्मनिर्भरता की आधारशिला हिंदी ही है। विगत कई वर्षो में भारतवर्ष की भौगोलिक स्थिति और अंतर्राष्ट्रीय पटल पर कूटनीति के परिणामस्वरूप भारत आत्मनिर्भरता की डगर की ओर अग्रसर है। आम भारतीयों के मन में सरकारी नौकरियों का लालच और आराम से जीने की परिकल्पना को अब तोड़ने का समय आ गया है। प्रधानमंत्री के आह्वान पर आत्मनिर्भरता की जो नींव डल रही है उसे बनाए रखना है। आम भारतीय हिंदी में बात करना और समझना पसंद करता है। आत्मनिर्भरता की नींव अगर हिंदी रुपी खाद से हो तो सशक्त भारत को आत्मनिर्भर बनाना और अधिक आसान हो जाएगा। जनमानस को यह याद दिलाना है कि भारत की स्वतंत्रता में हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। युवा पीढ़ी को बताना है कि परतंत्र जीवन एक अभिशाप है और देशप्रेमी युवाओं को संगठित करने में हिंदी की प्रासंगिकता एवं महती भूमिका है।

पूरे विश्व में हिंदी महिमामंडित हो रही है तो भारत में इसकी उपेक्षा और तिरस्कार क्यों? वर्तमान में छह सौ मिलियन से अधिक लोग हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं। दुनिया के करीब 200 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। हिंदी भारत की राजभाषा है। विडंबना यह है कि भारत के कुछ वर्गों में उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। भारत की क्षेत्रीय भाषाएं भी भारत की धरोहर हैं किन्तु हिंदी वह पटरानी है जो राज्य को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होती है।

देश की आजादी के पश्चात 14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को अंग्रेजी के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की उपलब्धि है कि आज हिंदी को स्कूलों, कॉलेजों, अदालतों, सरकारी कार्यालयों और सचिवालयों में कामकाज एवं लोकव्यवहार की भाषा के रूप में प्रतिष्ठा मिलने लगी है।

पूर्व उपराष्ट्रपति श्री वैंकय्या नायडू ने हिंदी के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए युवा पीढ़ी से आह्वान किया था कि युवा पीढ़ी हिंदी के लिये दर्द, संवेदना एवं अपनापन जगाए जिसने हमें स्वतंत्र भारत में श्वास लेने का मौका दिया।

आत्मनिर्भर भारत, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का वीजन है। इसे हासिल करने हेतु उन्होंने 20 लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज की घोषणा की है। कोरोना महामारी से लड़ने में और आने वाले इस दशक में आत्मनिर्भरता का परचम भारत को लहराना है।

प्रेमचंद की कालजयी रचनाएँ जैसे रंगभूमि, कर्मभूमि, भारतेंदु हरिश्चंद की स्व–रचना भारत–दुर्दशा, जयशंकर प्रसाद की स्कन्दगुप्त देश प्रेम की अग्नि प्रज्जवलित करने में बहुत सहायक साबित हुए। वीर सावरकर ने जब "1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम" लिखा तो भारत का जनमानस देशप्रेम से ओतप्रोत हो गया था। पंडित नेहरु ने 'भारत एक खोज' के साथ भारत की सभ्यता पर अद्भुत टिप्पणी की। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने जब "गीता रहस्य" लिखी तो जन मानस ने धर्म के साथ स्वतंत्रता की भी बात आगे बढ़ाई। हिंदी भाषा और हिंदी कवियों ने अपने शब्दों को उकेर कर भारत की आत्मा को पुकारा और स्वतंत्र होने की तरफ कदम बढ़ाया।

'स्वतंत्र भारत' को हासिल करने हेतु हिंदी ने अनेकों क्षेत्रों में अपना वर्चस्व बनाया। इनमें निम्न क्षेत्र उल्लेखनीय हैं–

- चिकित्सा
- वस्त्र
- विदेशी कपड़े का बहिष्कार
- खिलौने
- हिंदी गीत और कविताएं

द्वितीय चरण में निम्न क्षेत्रों में काम किए गए –

- रत्न एवं आभूषण में हिंदी की भूमिका
- आयुर्वेद में हिंदी की भूमिका

स्वतंत्र भारत के प्रमुख स्तम्भ हैं –

1	अर्थव्यवस्था	हिंदी को समाहित करके, आम जनमानस को साथ लेकर अर्थव्यवस्था ऊँची छलांग (क्वाण्टम जम्प) लाए।
2	बुनियादी ढाँचा	एक ऐसा बुनियादी ढाँचा, जो विदेशी कंपनियों को आकर्षित कर सके और विदेशी कंपनियां भी अपना उत्पाद हिंदी में बेचे और बढ़ावा दे।
3	प्रौद्योगिकी	समाज में डिजिटल तकनीक का उपयोग हिंदी में करना और बढ़ाना शामिल है।
4	जनसंख्यिकी (डेमोग्राफी)	भारत की जीवन्त जनसांख्यिकी हमारी ताकत है, आत्मनिर्भर भारत के लिए ऊर्जा का स्रोत है। अगर यह हिंदी में समाहित हो जाए तो पूरे विश्व में हिंदी की तूती बोलेगी।
5	मांग	भारत के पास बड़ा घरेलू बाजार और मांग है। अगर इस मांग को हिंदी प्रोत्साहन से जोड़ दिया जाए तो हिंदी का प्रचार और प्रसार सरल हो जाएगा।

चित्र 1 – स्वतंत्र भारत और हिंदी का प्रचार–प्रसार

ऊपर दिए गए हुए चित्र से स्पष्ट है कि हिंदी भाषा के प्रसार, प्रचार और प्रोत्साहन की योजनाएँ स्वतः ही अपने आप हिंदी में जीवन का संचार कर देगी।

हिंदी अजर है, अमर है और अनंत काल तक यही रहेगी। आजाद भारत हिंदी का सदैव ऋणी रहेगा।

जय हिंद, जय भारत....

गौरव त्रिपाठी
सीआरएल,
गा.बाद

भारत की आजादी में हिंदी

"हिंदी भाषा बोलते, आती जिसको लाज,
बन सकता वह देश कब, दुनिया का सरताज"

भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होती है। किसी भी राष्ट्र की पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने में उस राष्ट्र की मातृभाषा की अहम भूमिका रहती है, क्योंकि राष्ट्र भाषा किसी एक प्रान्त की भाषा में बंधकर नहीं रहती है। उसके माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र में विचारों का आदान–प्रदान होता है, जिससे राष्ट्रीय भावना के विचारों का प्रचार–प्रसार सहजता और सरलता से होता है।

हमारे राष्ट्र की स्वतन्त्रता मे राज भाषा हिंदी का अतुलनीय योगदान रहा है, नहीं तो भारत जैसे विशाल राष्ट्र को विदेशी सत्ता से मुक्त करना सहज नहीं होता। भारत की स्वतन्त्रता में हिंदी पत्रकारिता ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वाधीनता आन्दोलन के समय सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बॉधने वाली सबसे सशक्त एवं सम्पर्क भाषा हिंदी ही रही। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान रही है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची वाहक है, यह भाषा हमारी संप्रेषक और परिचायक भी है।

हिंदी भाषा ने ही राष्ट्रीय एकता के मार्ग को प्रशस्त किया उसे यह भी ज्ञान रहा कि भारत का विकास और राष्ट्रीय एकता की रक्षा प्रादेशिक भाषाओं के पूर्ण विकास से ही सम्भव है। हिंदी भाषा में वह शक्ति है जो अपने माध्यम से सम्पूर्ण भारत को जोड़ सकती है।

हिंदी भाषा के सामर्थ्य को तो गांधी जी, सुभाष चन्द्र बोस आदि ने भी समझा। आचार्य विनोबा भावे ने तो हिंदी की महत्ता के संदर्भ में यहां तक कहा कि यदि मैने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर से कन्याकुमारी और असम से केरल तक के गाँव– गाँव में जाकर आजादी का संदेश न पहुँचा पाता ।

अतः निष्कर्ष के आधार पर हम यह कह सकते है कि यदि आजादी के आन्दोलन में हिंदी भाषा को मुख्य आधार न बनाया जाता तो शायद स्वतन्त्रता के लिए और अधिक संघर्ष करना पड़ता।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटन न हिय के सूल"

आदेश पंवार
बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

बिना तकिए सोने से कमर दर्द में आराम मिलता है और इससे रीढ़ की हड्डी भी मज़बूत होती है।

भारत की आजादी में हिंदी की महत्ता

75 वर्ष में भारत की प्रगति और हमारी राजभाषा

"जहां डाल डाल पर, सोने की चिड़िया करती है बसेरा, वह भारत देश है मेरा"

हमारी भारत भूमि कुदरत का एक वरदान है। अनाज पैदावार और खनिज समृद्धि में महान है। इसमें इतने सारे उत्सव, भाषाएं, धर्म और पंथ के बावजूद सभी खुशी, प्यार से और मिलजुल कर रहते हैं। सभी लोग मेहनती और सक्षम हैं। आज 75 वर्षों का लेखा–जोखा करने की वजह भी कुछ खास है कि हमें 1947 में स्वतंत्रता मिली थी और इस साल 74 वर्ष पूरे हो गए हैं और अगस्त माह से आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। हम ब्रिटिश–शासन की गुलामी से मुक्त होकर, गगन में लहराने का आनंद उठा रहे हैं।

स्वतंत्रता पाने के लिए जो कष्ट और बलिदान किए गए उन्हें अगर हम याद नहीं करेंगे तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। वैसे तो, सन 1857 में हमारा प्रथम स्वतंत्रता संग्राम शुरु हुआ। इसमें रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नानासाहेब राव, तुलाराम जैसे अनगित वीरों ने खुलकर भाग लिया था। मां भारती को अपना सर्वस्व अर्पण किया और स्वतंत्रता पाने हेतु प्राण न्यौछावर किए। लगातार संघर्ष और बलिदान की कहानियां, जेल भरो आंदोलन, गदर या विद्रोह आंदोलन, बलिदान का स्मरण, दांडी यात्रा, नमक कानून–भंग ऐसे कई उपायों से भरा संघर्ष भावी भारतीय युवा पीढ़ी को याद दिलाना हमारा परम कर्तव्य बनता है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्वतंत्र भारत में पैदा होने वाले भावी भारतीय इस बलिदान का मर्म जानें और अपनी गरिमा बढ़ाएं।

पराधीनता में भारत देश का जो शोषण हुआ, उससे हम दुर्बल, निर्धन और सिकुड़ कर रह गए। आजादी के बावजूद कई सालों बाद भी मानसिक रूप से हम अभी तक स्वाधीन नहीं हो पाए हैं। "सर कटा सकते हैं लेकिन सर झुका सकते नहीं" का नारा हमारे मन मंदिर को आलोकित और हौसले बुलंद कर देती है। भारत की पहचान पूरे विश्व में हमारे न्याय और गुणी लोगों से प्रेरित है और आगे भी रहेगी। आज कई देशों में हमारे लोग वहां की राजनीति में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। कंप्यूटर युग में कई नवयुवक अमेरिकन ग्रीन वैली और ऑस्ट्रेलिया में हैं। विदेशी मुल्कों में जाकर अपना स्थान बनाकर भारत की गरिमा बढ़ा रहे हैं। साथ ही हमारी मातृभूमि और भारत मां के प्रति आदर और सम्मान बढ़ा रहे हैं। हमं इससे अवगत होना जरूरी है।

हमारे प्रथम पंतप्रधान पंडित नेहरू जी ने पंचवार्षीय योजना से कारखाने और बड़े उद्योग जैसे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड और ऐसे अनेक सरकारी उपक्रमों, उद्यमों का निर्माण किया जिससे सरकार ने ज्यादा रोजगार सृजन का लक्ष्य बनाया। इससे लौह, खनन, पेट्रोलियम और संरक्षण उपकरणों के उत्पादन से लोगों को रोजगार मिला।

अगर हम शुरु से देखेंगे तो हमारी पहली पंचवर्षीय योजना अप्रैल 1951 में शुरू हुई। इन पंचवर्षीय योजनाओं से उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ और सामाजिक न्याय, खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता मिली, इनमें विशेष रूप से कृषि एवं सिंचाई को प्राथमिकता दी गई। भाखड़ा नांगल बांध, दामोदर घाटी, हीराकुंड जैसी बहुउद्देशीय योजनाओं से प्रगति के द्वार खुले। इस तरह, अब तक की 12 पंचवर्षीय योजनाओं में विभिन्न स्तर पर उन्नति हासिल करने का प्रयत्न किया जिससे सामाजिक न्याय और क्षमता वर्धन के साथ आर्थिक विकास का संतुलन करने का प्रयास हुआ। अब इसमें परिवर्तन कर तीन वर्षीय कार्य योजना हेतु नीति आयोग की स्थापना की गई है। इससे देश के विकास

की गति और बढ़ी है। बड़े उद्योग जिसमें सरकारी लागत अधिक होती है, के लिए निजी उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसलिए, सरकार पर निर्भरता कम की जा रही है। व्यापार, उद्योग का उदारीकरण किया जा रहा है, परिवहन, अवसंरचना, बैंकिंग और सहकारिता के क्षेत्र में नए प्रगामी प्रयोग किए जा रहे हैं जिससे विकास की गति बढ़ी है। कृषि कर्ज, जीरो बजट, आयकर में छूट, निःशुल्क शिक्षा, जाति व्यवस्था और न्याय व्यवस्था के परिवर्तन में भी आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। आज सहकारिता प्रेरित कृषि पर ज़ोर दिया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र की बात करें तो नई शिक्षा नीति लागू की गई है, प्रौद्योगिकी और प्रबंध संस्थानों, मेडिकल कॉलेज आदि में वृद्धि हुई है।

नेट, इंटरनेट, फोन और टेलीविजन इन सभी से नव–भारत का निर्माण हुआ है। भ्रष्टाचार, राजनीतिक घोटाले प्रगति में रुकावटें लाते हैं, पर ऐसे मामलों को भी नियंत्रित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार, रेलवे, छोटी कार, सस्ती कार सभी विकासात्मक पहलू हैं।

हरित क्रांति से अनाज उत्पादन में भारत निर्यात करने में सक्षम बन गया है। बहुत सारे कृषि उत्पादनों से निर्यात क्षेत्र में प्रगति हुई है। स्वर्णिम चतुर्भुज योजना और सड़क यातायात से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार आया है। आज भारत विश्व में अग्रणी राष्ट्रों में संभावित महाशक्ति के रूप में देखा जाता है। वैश्विक आर्थिक परिदृश्य पर अग्रसर है और आर्थिक शक्ति के रूप में देखा जा रहा है। हमारा निजी क्षेत्र आज उभर रहा है और बड़ी–बड़ी परियोजनाओं में निवेश कर रहा है। आजादी के समय हम 34 करोड़ थे, आज हमारी आबादी 134 करोड़ से ज्यादा है। आबादी के कारण प्रति व्यक्ति आय पर असर पड़ा है। कोरोना जैसी महामारी के बावजूद बेरोजगारी दर 5.98 के आसपास है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण बालमृत्यु दर घटी है और औसत जीवनकाल बढ़कर 72 साल हो गया है। 1951 में 3.19 लाख कि.मी. के सड़कों का जाल आज 62.16 लाख कि.मी. से ज्यादा हो गया है।

हमारा यह कर्तव्य है कि देश के बलिदान को त्याग को सोचे, समझें और जिम्मेदारी से अपना लक्ष्य पाएं, यही उन्नति और प्रगति का राज होगा। भारत समय के साथ हर क्षेत्र में खुद को बेहतर बना रहा है और नित्य विकास के नए नए मार्ग खोज रहा है। नई तकनीकी अपनाई गई है, विज्ञान और तकनिकी के माध्यम से भारत को डिजीटल बनाया गया है। इसकी वजह से लोग ज्यादा जागरुक हो गए हैं।

कुल मिलाकर, इन 75 वर्षों में हमने निसंदेह प्रगति की है।

राजेंद्र मधुकर सागडे
पुणे

तकनीकी लेख

आकाशीय बिजली– कारण, प्रभाव और निवारण

परिचय– भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड सार्वजनिक क्षेत्र का एक ऐसा उपक्रम है जो रक्षा प्रौधोगिकी क्षेत्र में कार्य करता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ यह अति आवश्यक है कि प्रत्येक उपकरण हर समय अपना कार्य करने में सक्षम हो। हमारे आस–पास के वातावरण का प्रभाव भी इन उपकरणों की कार्य क्षमता पर पड़ता है। उदाहरण के तौर पर तापमान, वायुवेग, नमी, आकाशीय बिजली वातावरण के कुछ अंग है जिनका प्रभाव इन पर पड़ता है और इनका प्रतिकूल प्रभाव हमारे उपकरणों को पूर्णतः नाकाम कर सकता है।

इस लेख के माध्यम से हम आकाशीय बिजली के कारण, प्रभाव व निवारण पर प्रकाश डालेंगे। आकाशीय बिजली न केवल किसी उपकरण के लिए घातक है बल्कि सामान्य जन साधारण के लिए भी जानलेवा साबित हो सकती है। इसी कारण किसी भी उपकरण को डिज़ाइन करते समय आकाशीय बिजली से संबंधित बातों को ध्यान मे रखना अति आवश्यक है।

गरज के साथ बादलों मे आकाशीय बिजली का चित्रण

आकाशीय बिजली के कारण–

आकाशीय बिजली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे वातावरण में बहुत तेज़ और बड़े पैमाने पर बिजली का स्त्राव होता है। इस स्त्राव मे से कुछ स्त्राव पृथ्वी की सतह की ओर निर्देशित हो जाता है। ये स्त्राव विशाल नमी वाले बादलों में उत्पन्न होता हैं जो की 10–12 किमी लंबे होते हैं। इन बादलों का आधार आमतौर पर पृथ्वी की सतह के 1–2 किमी के भीतर होता है, जबकि इनका शीर्ष 12–13 किमी दूर होता है। इन बादलों के शीर्ष का तापमान माइनस 35 से माइनस 45 डिग्री सेल्सियस के बीच रहता है। जैसे ही वातावरण की गर्मी के कारण जल वाष्प में बदल कर बादलों में ऊपर की ओर बढ़ता है, वातावरण के गिरते तापमान के कारण यह संघनित होना शुरू हो जाता है। इस प्रक्रिया में ऊष्मा उत्पन्न होती है, जो पानी के अणुओं को ऊपर की ओर धकेलती है। जैसे ही वाष्प शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे के तापमान पर जाती हैं, उसमे उपस्थित पानी की बूंदें छोटे बर्फ के क्रिस्टल में बदल जाती हैं। ये छोटे बर्फ के क्रिस्टल ऊपर की ओर बढ़ते रहते हैं और आस–पास के द्रव्य को अपने कम तापमान के कारण अपने ऊपर इकट्ठा करते रहते है। यह प्रक्रिया तब तक चालू रहती है जब तक कि बर्फ के क्रिस्टल इतने भारी न हों जाए कि वे पृथ्वी पर अपने वजन के कारण गिरना शुरू कर दें। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें एक साथ, छोटे बर्फ के क्रिस्टल ऊपर की ओर जा रहे हैं और बड़े क्रिस्टल नीचे की ओर आ रहे हैं। यह एक टकराव की स्थिति उत्त्पन्न करता है और यह टकराव इतनी तीव्र गति से होता है की इलैक्ट्रिक डिस्चार्ज की प्रक्रिया को शुरू कर देता है , ठीक उसी प्रकार से जैसे दो भारी वस्तुओं के टकराने से बिजली की चिंगारी उत्त्पन होती है। जैसे–जैसे गतिमान युक्त बर्फ के क्रिस्टल अधिक टकराव करते है, वे और अधिक इलैक्ट्रिक डिस्चार्ज का कारण बनते हैं, जो की एक श्रृंखला प्रतिक्रिया (चैन रिएक्शन) बन जाती है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिसमें बादल की ऊपरी परत पॉज़िटिव रूप से आवेशित हो जाती है, जबकि मध्य परत नेगेटिव रूप से आवेशित हो जाती है। इन दो परतों के बीच विद्युत विभवांतर बहुत बड़ा हो जाता है जो कि करीब एक अरब से दस अरब वोल्ट के क्रम में हो सकता है। इसी विद्युत विभवांतर के कारण बहुत कम समय में, बादलों की परतों के बीच एक लाख से एक मिलियन एम्पीयर के क्रम में एक विशाल करेंट की धारा

प्रवाहित होने लगती है। इस धारा के कारण, परतों के बीच अत्यधिक मात्रा में ऊष्मा उत्पन्न होना चालू हो जाती है, और इससे बादल की दो परतों के बीच वायु स्तंभ गर्म हो जाता है। यह गर्मी आकाशीय बिजली के दौरान वायु स्तंभ को लाल रंग का रूप देती है। जैसे ही यह गर्म हवा का स्तंभ फैलता है, यह प्रघाती तरंगो (शॉक वेव्स) को पैदा करता है, जिसके परिणामस्वरूप गड़गड़ाहट की आवाज होती है। इसी गड़गड़ाहट की आवाज को अंग्रेजी भाषा मे 'थंडर' कहा जाता है। इस परिस्थिति को विधुत तटस्थ (इलैक्ट्रिकल न्यूट्रल) बनाने के लिए पृथ्वी ,बादल की मध्य परत की तुलना में सकारात्मक रूप से चार्ज हो जाती है। नतीजतन, लगभग 15þ–20þ करंट पृथ्वी की ओर भी निर्देशित हो जाता है। यह इसी उच्च करंट धारा का प्रवाह है जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी पर जन–जीवन और संपत्ति को नुकसान पहुचता है।

आकाशीय बिजली के प्रभाव

अक्सर, बिजली गिरने के खिलाफ सुरक्षा उपायों और सावधानियों को भूकंप जैसी अन्य प्राकृतिक आपदाओं के रूप में उतना प्रचार नहीं मिलता है। अगर हम भारतीय मौसम विभाग के आकड़ों को देखे तो 2020–21 में तकरीबन 1–85 करोड़ बिजली गिरने की घटनाओं को रेकॉर्ड किया गया, जो साल 2021–22 मे घटकर 1–49 करोड़ रह गयी। 2021–22 में बिजली गिरने की घटनाओ के कम होने को कोविड–19 महामारी के कारण लगे लॉकडाउन से जोड़कर देखा जा रहा है। लॉकडाउन के समय कम हुआ ऐरोसोल स्तर, प्रदूषण स्तर बिजली गिरने की घटनाओं के कम होने का कारण है और यह इस बात को भी साबित करता है कि कहीं ना कहीं बिजली गिरने की घटनाओं को बढ़ाने में मानव का हाथ भी है। अगर हम जन–जीवन के नुकसान की बात करें तो भारत में हर साल औसतन 2000–2500 लोगों की मौत बिजली गिरने से होती हैं। मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओड़ीशा, वेस्ट–बंगाल, बिहार और उत्तरप्रदेश भारत के कुछ राज्य है जहा ये घटनाएँ सबसे ज्यादा होती है। यदि हम संपति के नुकसान की बात करे तो एक आकाशीय बिजली का घात एक पूरे प्लांट के इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों को नष्ट कर, पूरे प्लांट को बंद करवा सकता है। एंटेना पर बिजली गिरने से सारी संचार प्रणाली सेकेंडो में ठप्प हो सकती हैस युद्ध की स्थिति में बिजली गिरना और अधिक विनाशकारी हो सकता है। रेडार सिस्टम, तोपें, मिसाइल, फाइटर जेट आदि शस्त्रों पर हुआ एक बिजली घात उन्हे तुरंत नाकाम बनाने के लिए काफी है। एक घात युद्ध के परिणाम को बदलने के साथ–साथ अरबों रुपयो की प्रणाली को नष्ट भी कर सकता है। इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों मे सेमीकंडक्टर का प्रयोग बहुत आधिक मात्रा मे होता है। हर एक सेमीकंडक्टर एक निर्धारित वोल्टेज पर ही काम करता है। बिजली घात के कारण बहुत अधिक वोल्टेज इन उपकरणों के सेमीकंडक्टर पर आ जाता है और उन्हे उपयोग के लिए नाकाम बना देता है। इन्हीं सब कारणो के कारण ही हमें बिजली से बचने के सही उपाय, सही समय पर करने चाहिए।

आकाशीय बिजली का निवारण

आकाशीय बिजली संपति और जन–जीवन दोनों पर अपना प्रभाव डालती है। अतः हम इसके निवारण को दो भागों मे विभाजित कर सकते है–

संपति पर आकाशीय बिजली के निवारण के उपाय–

1. तड़ित निवर्तक (लाइटनिंग अरेस्टर)– यह एक ऐसा सुरक्षात्मक उपकरण है, जो आकाशीय बिजली को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह उपकरण मुख्यतः दो प्रकार के होते है। प्रथम प्रकार मे तांबे धातु की एक नुकीली छड़ का प्रयोग लाइटनिंग अरेस्टर के रूप मे होता है। यह छड़ जमीन से एक तांबे के तार से जुड़ी होती है। जब बादल की मध्य परत नेगेटिव रूप से चार्ज हो जाती है और पृथ्वी की सतह पॉज़िटिव रूप से चार्ज हो जाती है, तब ये छड़ जमीन से तार के माध्यम से जुड़े होने के कारण पॉज़िटिव रूप से चार्ज हो जाती है। इस छड़ के नुकीले सिरे पर बहुत अधिक पॉज़िटिव चार्ज का घनत्व होने के कारण, ये छड़ बादलों के नेगेटिव

चार्ज को अपनी ओर आकर्षित करने लगती है। इस प्रकार से बादलों का नेगेटिव चार्ज जमीन की तरफ निर्देशित हो जाता है और हमारी संपति नुकसान से बच जाती है। इस प्रकार की छड़ का सुरक्षात्मक क्षेत्र की गणना के लिए हम 'रोलिंग स्फेयर' पद्धति को उपयोग मे लाते है।

तांबे का नुकीला तड़ित निवर्तक

▶ दूसरा और आधुनिक प्रकार में हम एक 'एक्टिव ई॰एस॰ई॰' उपकरण का इस्तेमाल लाइटनिंग अरेस्टर के रूप मे करते है। यह एक ऐसा उपकरण है जो अपने अंदर से पॉज़िटिव चार्ज का स्त्राव करता रहता है। इस पॉज़िटिव स्त्राव के कारण बादलों का नेगेटिव चार्ज इसकी और आकर्षित हो जाता है। इस प्रकार से ये उपकरण बिजली गिरने की घटना होने से पहले ही बादलों के चार्ज को जमीन की ओर निर्देशित कर देता है। 'एक्टिव ई॰एस॰ई॰' का नुकीली छड़ के अपेक्षा सुरक्षात्मक क्षेत्र ज्यादा होता है।

एक्टिव ई॰एस॰ई॰ तड़ित निवर्तक

सर्ज प्रोटेक्टर

1. सर्ज प्रोटेक्टर– यह एक ऐसा उपकरण है, जिसका उपयोग हमारे इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों के भीतर होता है। यह उपकरण किसी भी तरह की उच्च वोल्टेज व उच्च करेंट को इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण के सर्किट मे प्रवेश नहीं करने देता। इस प्रकार से किसी उपकरण पर बिजली गिरने की स्थिति मे यह उपकरण उसके इलेक्ट्रॉनिक्स सर्किट को बचाने में सहायक होता है।

जन–जीवन पर आकाशीय बिजली के निवारण के उपाय–

1. बाहरी गतिविधियों में भाग लेने से पहले मौसम के पूर्वानुमान की जाँच करें। यदि पूर्वानुमान में गरज के साथ बौछारौ की संभावना हैं, तो अपनी यात्रा या गतिविधि स्थगित कर दें, या सुनिश्चित करें कि उपयुक्त सुरक्षित आश्रय आसानी से उपलब्ध है। सुरक्षित आश्रयों में घर, कार्यालय, शॉपिंग सेंटर, और खिड़कियों के साथ हार्ड–टॉप वाहन शामिल हैं।

2. यदि आप आस– पास बिना किसी सुरक्षित आश्रय के बाहर रह जाते हैं तो कभी भी एक सुनसान पेड़ के नीचे

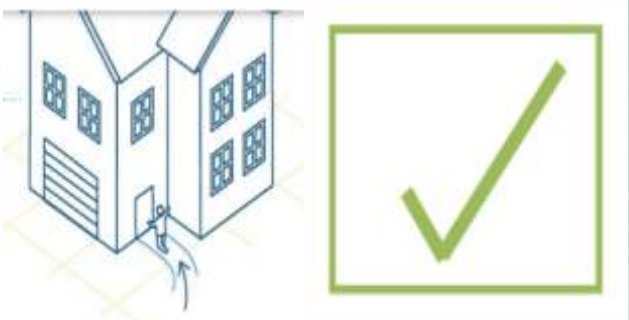

बिजली कड़कने पर सुरक्षित आश्रय में जाएँ

आश्रय न ले। यदि आप जंगल में हैं, तो निचले पेड़ों के पास आश्रय लें। आश्रय के लिए कभी भी चट्टान या चट्टानी ऊपरी भाग का प्रयोग न करें। तुरंत तालाबों, झीलों और अन्य जल निकायों से बाहर निकलें और दूर हो जाएँ। बिजली का संचालन करने वाली वस्तुओं से दूर रहें (जैसे कांटेदार तार की बाड़, बिजली की लाइनें, या पवनचक्की)।

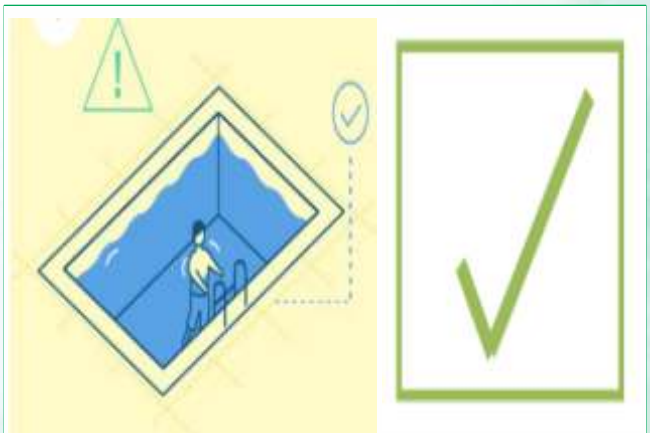

बिजली गरजने पर जल निकायों से बाहर निकलें

3. ऊंची संरचनाओं के पास न रहें। ऊंची इमारतों से दूर रहें, जैसे टेलीफोन के खंभे और पेड़; बिजली आसपास की सबसे ऊंची वस्तु पर ही प्रहार करती है।

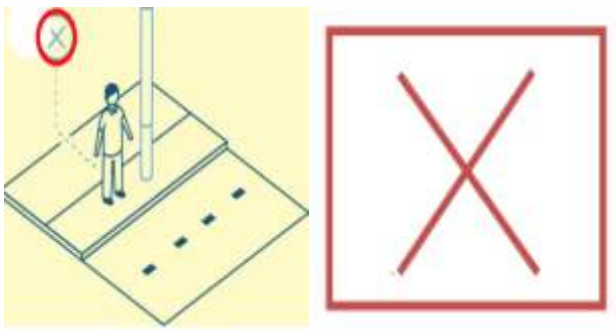

बिजली कड़कने पर ऊंची इमारतों और खंभे से दूर रहें

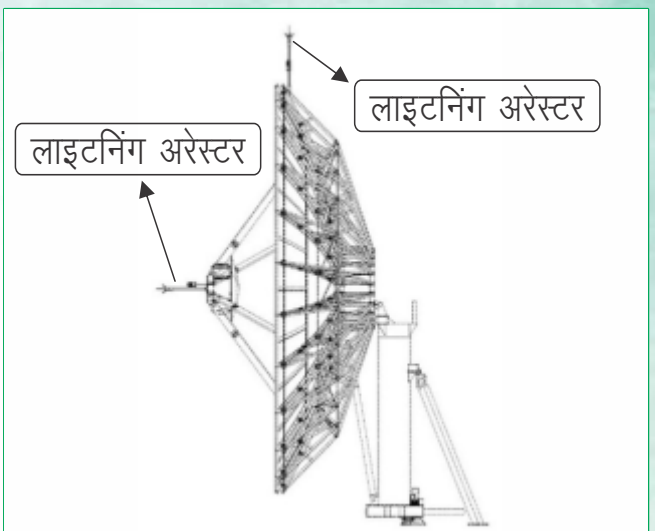

9 मीटर अर्थ स्टेशन एंटेना का चित्रण

हमे यह बताते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि 'भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड' तकरीबन अपने सारे उपकरणों को डिज़ाइन करते समय उपर्युक्त बातों को ध्यान मे रखता है। उदाहरण के तौर पर एंटेना विभाग ने '9 मीटर अर्थ स्टेशन एंटेना' मे अपने स्वयं का डिज़ाइन किया हुआ लाइटनिंग अरेस्टर प्रयोग मे लिया। यह एक ऐसा लाइटनिंग अरेस्टर है जो की न केवल एंटेना को तड़ित घात से बचाने मे सक्षम है बल्कि उसके आस–पास के लोगों और अन्य उपकरणों को भी घात से बचाता है। इस लाइटनिंग अरेस्टर के डिज़ाइन मे 'रोलिंग स्फेयर' पद्धति को उपयोग मे लाया गया है और यह लाइटनिंग अरेस्टर करीब 32 मीटर व्यास के अर्ध गोलाकार सुरक्षित घेरे का निर्माण करता है।

हम सब भी उपर्युक्त लिखी सभी बातों को ध्यान मे रखकर ऐसे उपकरण बना सकते है जिनपर आकाशीय बिजली का कोई असर न हो। अन्य प्राकृतिक आपदाओं की तरह हमे अपने आस–पास के लोगों को आकाशीय बिजली के खतरो के बारे में भी जागरूक करना चाहिए। इसके साथ ही हमे अपने द्वारा करे जा रहे प्रदूषण को भी कम करना चाहिए, जिससे कि हम सब मिलकर इस पृथ्वी को हमारे और हमारी आने वाली पीढ़ियो के रहने के लिए एक सुरक्षित घर बना सके और संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास लक्ष्यों को भारतीय स्तर पर पूरा करने के लिए समर्थन कर सकें।

आकाश गर्ग
सीआरएल, गा.बाद

एनायतुर रहमान
सीआरएल, गा.बाद

हितांशु माहेश्वरी
सीआरएल, गा.बाद

तकनीकी लेख

ड्रोन – विज्ञान का विस्मयकारी आविष्कार

मानव रहित विमानों को ड्रोन कहते हैं। यह रिमोट से संचालित होने वाला एक प्रकार का छोटा विमान होता है। सही अर्थों में यह एक ऐसा रोबोट है जो उड़ सकता है।

ड्रोन का हिंदी अर्थ नर मधुमक्खी है और उड़ने के कारण ही इसे यह नाम मिला है। यह मधुमक्खी के समान ही उड़ान भरता है और एक जगह पर स्थिर होकर मंडरा सकता है।

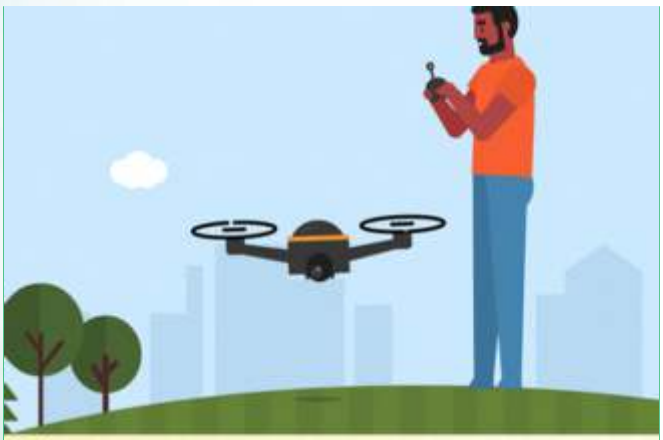

ड्रोन तकनीक का इतिहास

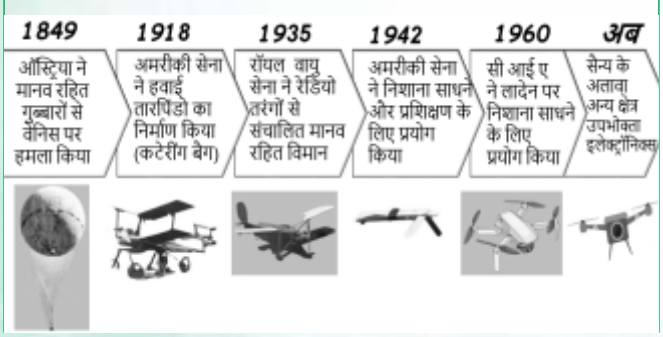

ड्रोन को एक रिमोट अथवा इसके लिए बनाये गये विशेष कंट्रोल रूम से इसे उड़ाया जाता है। ड्रोन का प्रयोग सामान्यता ऐसे दुर्लभ स्थानों में किया जाता है जहां मनुष्य आसानी से पहुंच नहीं पाता है।

ड्रोन अथवा मानव रहित विमान बनाने की कोशिश प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही आरंभ हो गई थी। वर्ष 1918 में संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना ने हवाई तारपिंडो का निर्माण आरंभ किया तथा कटेरिंग बैग नाम से इस यंत्र के कुछ परीक्षण भी किए, लेकिन इसका पूर्ण विकास होने से पहले ही प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो गया था।

मानव रहित यंत्र का परीक्षण ऐसी ही जारी रहा और वर्ष 1935 में ब्रिटेन के रॉयल एयरफोर्स ने रेडियो तरंगों से संचालित और निर्देशात्मक चालक रहित विमान तैयार किया जिसके लिए पहली बार ड्रोन शब्द का प्रयोग किया गया था।

इसके बाद 1942 में संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना ने भी ड्रोन को निशाना साधने और प्रशिक्षण के लिए प्रयोग करना आरंभ किया. 6 अगस्त 1946 को अमेरिका के P–70 flying Protest ड्रोन ने सफलतापूर्वक मुरोक आर्मी। एयर फील्ड में उड़ान भरी थी।

वियतनाम युद्ध के दौरान भी अमेरिका ने बड़ी संख्या में मानव रहित विमान तैनात किए थे तथा इनका प्रयोग पर्ची गिराने और खुफिया गतिविधियों के लिए हुआ था।

सर्वप्रथम 2002 में ड्रोन का प्रयोग पहली बार किसी को निशाना बनाने के लिए किया गया था। 4 फरवरी 2002 को अमेरिका की खुफिया एजेंसी ने ओसामा बिन लादेन को निशाना बनाने के लिए अफगानिस्तान के एक शहर में ड्रोन का प्रयोग किया था।

इसी दौरान इजरायल और ईरान में भी जासूसी के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया जाने लगा। भारत में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड और डीआरडीओ कई श्रेणी के ड्रोन का विकास कर रहे हैं।

ड्रोन के प्रकार

ड्रोन कई प्रकार के होते हैं। मुख्य रूप से ड्रोन को विभिन्न श्रेणियों में रखा गया है –

- नैनो ड्रोन (Nano drone) – वज़न 250 ग्राम तक होता है।

ड्रोन	वज़न
नैनो ड्रोन	< 250 ग्राम
माइक्रो ड्रोन	250 ग्राम से 2 किलोग्राम
इस्मॉल ड्रोन	2 किलोग्राम से 25 किलो
मीडियम ड्रोन	25 किलो से 150 किलो
लार्ज ड्रोन	> 150 किलो

▸ माइक्रो ड्रोन (Micro drone) – वज़न 250 ग्राम से अधिक से 2 किलो ग्राम से कम होता है।

▸ स्मोल ड्रोन (Small drone) – वज़न 2 किलो ग्राम से अधिक से 25 किलो ग्राम से कम होता है।

▸ मीडियम ड्रोन (Medium drone) – वज़न 25 किलो ग्राम से 150 किलो ग्राम तक होता है।

▸ लार्ज ड्रोन (Large drone) – वे ड्रोन जिनका वज़न 150 किलो ग्राम से अधिक होता है।

ड्रोन की उपयोगिता–

ड्रोन कई क्षेत्रों में अपनी उपयोगिता पाता है, जिनमें से कुछ हैं –

▸ सैन्य क्षेत्र में ड्रोन का महत्व

ड्रोन तकनीक का सबसे व्यापक प्रयोग सैन्य क्षेत्रों में ही किया जाता है। अमेरिकी सेना पाकिस्तान के सीमित क्षेत्रों में आतंकवादियों की खोज के लिए ड्रोन का प्रयोग कर रही है जिससे कि उन्हें सफलता भी हासिल हुई है। ड्रोन तकनीक के चलते अमेरिकी सेना ने कई आतंकवादियों को रंगे हाथ पकड़ा भी है। इसीलिए यह अमेरिका ही नहीं बल्कि भारत जैसे देश के लिए भी काफी फायदेमंद साबित होगी जहां की चौबीसों घंटे आतंकवादियों का खौफ बना रहता है। मैं आपकी जानकारी के लिए बता दूं वर्तमान में भारतीय सेना के पास 600 से अधिक ड्रोन है।

▸ राहत एवं बचाव कार्य में ड्रोन का उपयोग

वर्तमान में विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे कि बाढ़, भूकंप आदि के समय राहत और बचाव कार्य के लिए ड्रोन का प्रयोग हो रहा है। अप्रैल 2015 में नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप की तस्वीरें ड्रोन से ली गई थी। भारत के केरल राज्य में आई विनाशकारी बाढ़ की भयावहता जानने के लिए ड्रोन का प्रयोग किया गया था तथा सीमा निगरानी हेतु ड्रोन का भी प्रयोग किया जाता है।

▸ कृषि क्षेत्र में ड्रोन की उपयोगिता

विश्व के बड़े–बड़े देशों में आज किसान ड्रोन के माध्यम से फसलों की निगरानी से लेकर दवा का छिड़काव कर रहे हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कृषि के क्षेत्र में भी ड्रोन ने क्रांतिकारी उपयोग आरंभ किया है।

▸ असामाजिक तत्वों को नियंत्रण करने में ड्रोन का उपयोग

वर्तमान समय में ड्रोन का उपयोग कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए भी सबसे अधिक हो रहा है। आंतरिक सुरक्षा और कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए देश के बड़े–बड़े महानगरों में छतों की तलाशी और बड़े जासूसों पर नजर रखने के लिए ड्रोन का प्रयोग हो रहा है और सुरक्षा के क्षेत्र में इसने विशेष भूमिका निभाई है।

▸ सामानों की होम डिलीवरी में ड्रोन का उपयोग

वर्तमान में गूगल और अमेजॉन जैसी बड़ी कंपनियां ड्रोन के द्वारा सामानों की होम डिलीवरी करने की तैयारी में है। ऐमेज़ॉन ने भारत में ड्रोन विमानों की तैनाती के लिए पैटर्न भी फाइनल कर दिया है। अभी तक यह सुविधा केवल बड़े–बड़े देशों जैसे कि अमेरिका, दुबई आदि में ही देखने को मिलती थी लेकिन अब यह जल्द ही भारत में भी आने वाली है।

▸ अन्य सभी क्षेत्रों में ड्रोन का लाभ

ड्रोन के यही नहीं बल्कि और भी विभिन्न फायदे हैं। जैसे कि ड्रोन को ट्रैफिक नियंत्रण करने के लिए भी प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही सर्वेक्षण, प्रोफेशनल फोटोग्राफी और हवाई मीटिंग में भी ड्रोन का इस्तेमाल किया जा रहा है।

ड्रोन का दुरुपयोग –

ऐसा माना जाता है कि जो तकनीक सही साबित होती है उसे गलत साबित होने में समय नहीं लगता, ऐसे ही ड्रोन तकनीक का भी गलत प्रयोग किया जा सकता है इसके निम्नलिखित नुकसान है –

- ड्रोन एक प्रकार की मशीन है जिस कारण अन्य मशीनों की तरह इसे भी आसानी से हैक किया जा सकता है। इसके नियंत्रण प्रणाली पर हमला करके हैकेर्स इसे हानि पहुंचा सकते हैं और गोपनीय जानकारियां भी हासिल कर सकते हैं।

- ड्रोन उड़ान भरते समय पक्षियों को चोट पहुंचा सकते हैं।

- ड्रोन को यदि असामाजिक तत्वों से जोड़ा जाए तो इसके माध्यम से न सिर्फ जासूसी बल्कि आवश्यकता पड़ने पर हमला भी किया जा सकता है।

- अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन एसोसिएशन ने ड्रोन को वायु क्षेत्र के लिए खतरा माना है तथा इससे जुड़ी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक विचार विमर्श करने को कहा है।

- अपराध जगत में ड्रोन के माध्यम से बड़ी वारदात हो सकती है, जैसे कि किसी सुरक्षित इलाके में विस्फोट गिराना, जेल के अंदर अवैध सामान पहुंचाना, जैविक हथियार से हमला, इत्यादि।

भारत सरकार ने किसी भी सार्वजनिक स्थान पर ड्रोन को अवैध किया है ताकि इसका गलत प्रयोग ना किया जाये। नागरिकों कि सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए किसी भी स्थान पर ड्रोन का प्रयोग करने से पूर्व सरकार से अनुमति अनिवार्य है।

डी आर डी ओ द्वारा बनाए गए ड्रोन है – रुस्तम, निशांत, लक्ष्य, चक्र हेलीकाप्टर, घातक औरा आदि द्य बी ई एल द्वारा बनाए गए ड्रोन है – क्वाड काप्टर, तार से जुड़ा हेक्सा कॉप्टर, यूवी सैनिटाइज़र के लिए रोबोट, ए यू जी – सी एस वी, तरुत्र उ जी वी आदि।

वर्तमान में ड्रोन तकनीक अपने विकास के एक नए दौर के चरम पर है तथा यह जीवन के विभिन्न क्षेत्र में क्रांतिकारी भूमिका निभाने वाली ह। लेकिन यह जांच सुनिश्चित करना काफी महत्वपूर्ण है कि इसका प्रयोग मानव जाति की सहायता एवं उपकार हेतु किया जाए ना कि असामाजिक तत्वों द्वारा ड्रोन का प्रयोग कर मानवीय हितों को क्षति पहुंचाई जाए।

गौरव आनंद
पीडीआईसी, बेंगलूरु

रोहित लाहिरी
पीडीआईसी, बेंगलूरु

अस्मिता सिंघल
पीडीआईसी, बेंगलूरु

जंगली जानवरों की रेल दुर्घटना से बचाव के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक (वनरा)

WANRA (Wild Animal Recognition using AI)

उद्देश्य–

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक के इस्तेमाल से रेलवे पटरियों पर हाथी, दरियाई घोड़े आदि जैसे जंगली जानवरों का पता लगाने के लिए और टकराव से बचने के लिए लोको पायलट को सतर्क करना।

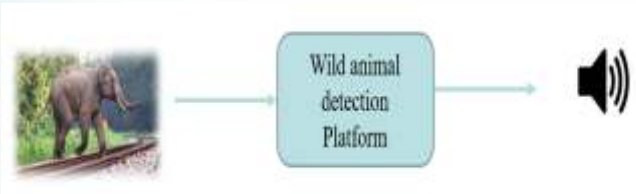

1. परिचय –

- शब्द "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस", विशेष रूप से कंप्यूटर सिस्टम द्वारा मानव खुफिया प्रक्रियाओं के अनुकरण को संदर्भित करता है। इसमें विशेषज्ञ प्रणाली, आवाज पहचान, मशीन दृष्टि, और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) भी शामिल है।
- एआई प्रोग्रामिंग तीन संज्ञानात्मक पहलुओं पर केंद्रित है, जैसे कि सीखना, तर्क करना और आत्म–सुधार।
- एआई एक ऐसी तकनीक है जो मशीन विधि सीखने के सिद्धांत पर काम कर सकती है। यह बेहतर तरीके से काम कर सकता है बशर्ते मशीन नियमित रूप से सीख सके और खुद को नियमित आधार पर अपडेट कर सके।
- वर्तमान परिदृश्य में हाई एंड कंप्यूटिंग प्लेटफॉर्म, परिष्कृत उपकरण और हार्डवेयर की उपलब्धता ने एआई का उपयोग करके प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए वैज्ञानिक बिरादरी की रुचि को प्रेरित किया।
- एआई आधारित तकनीक एक तरफ ऑपरेटर, उपयोगकर्ता या उपभोक्ता के जीवन को सरल बना सकती है, साथ ही इसमें मानव जीवन और जीवित चीजों के लिए जोखिम और खतरा भी शामिल है।
- इसलिए एआई प्रौद्योगिकी में और अधिक गहराई में प्रवेश करने से पहले उचित दिशा–निर्देश तैयार करने की आवश्यकता है।
- कुछ दिशा–निर्देश हैं– इसका उपयोग वॉयस मॉड्यूलेशन और बड़े पैमाने पर विनाश के लिए नहीं किया जाना चाहिए और इस तकनीक को विकसित और सावधानीपूर्वक स्वीकार किया जाना चाहिए।
- एआई तकनीक पर्यवेक्षित और अनुपयोगी के सीखने के सिद्धांत पर काम करती है।

2. पर्यवेक्षित और अनुपयोगी शिक्षा–

2. 1 पर्यवेक्षित अध्ययन

- सुपरवाइज्ड लर्निंग, जिसे सुपरवाइज्ड मशीन लर्निंग के रूप में भी जाना जाता है, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की एक उप श्रेणी है।
- यह एल्गोरिदम को प्रशिक्षित करने के लिए लेबल किए गए डेटासेट के उपयोग द्वारा परिभाषित किया गया है जो डेटा को वर्गीकृत करने या परिणामों की सटीक भविष्यवाणी करने के लिए है।
- जैसा कि इनपुट डेटा को मॉडल में फीड किया जाता है, यह अपने गुणांक को तब तक समायोजित करता है जब तक कि मॉडल को उचित रूप से फिट नहीं किया जाता है, जो क्रॉस सत्यापन प्रक्रिया के भाग के रूप में होता है। पर्यवेक्षित शिक्षण संगठनों को वास्तविक दुनिया की विभिन्न समस्याओं को बड़े पैमाने पर हल करने में मदद करता है, जैसे स्पैम को आपके इनबॉक्स से अलग फ़ोल्डर में वर्गीकृत करना।

2. अनुपयोगी शिक्षण

अनुपयोगी शिक्षण लेबल रहित डेटा का उपयोग करता है। उस डेटा से, यह ऐसे पैटर्न का पता लगाता है जो क्लस्टरिंग या एसोसिएशन की समस्याओं को हल करने में

मदद करते हैं।

2. 3 पर्यवेक्षित अध्ययन

पर्यवेक्षित शिक्षण मॉडल का उपयोग निम्नलिखित सहित कई व्यावसायिक अनुप्रयोगों को बनाने और आगे

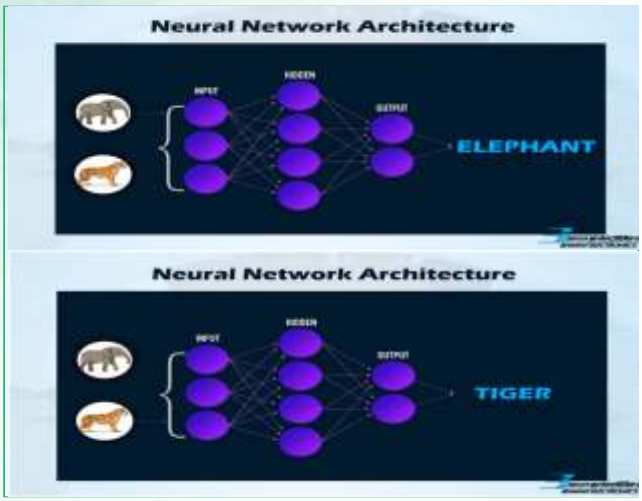

बढ़ाने के लिए किया जा सकता है–

छवि– और वस्तु–पहचान– पर्यवेक्षित शिक्षण एल्गोरिदम का उपयोग वीडियो या छवियों से वस्तुओं का पता लगाने, अलग करने और वर्गीकृत करने के लिए किया जा सकता है, जो विभिन्न कंप्यूटर दृष्टि तकनीकों और इमेजरी विश्लेषण पर लागू होने पर उन्हें उपयोगी बनाते हैं।

पर्यवेक्षित शिक्षण का उपयोग करते हुए सीआरएल–बेंगलूरु ने एआई आधारित प्रौद्योगिकी मॉड्यूल विकसित किए हैं। तकनीकी विवरण के साथ–साथ प्रत्येक मॉड्यूल का अनुप्रयोग इस प्रकार है–

3. एआई का उपयोग कर जंगली जानवरों की पहचान प्रणाली का तकनीकी विवरण

जंगली जानवरों की सुरक्षा हेतु, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स ने एआई का उपयोग करके "वनरा" Wild Animal Recognition नामक एक प्रणाली विकसित की।

WANRA, दिन और रात के स्थिति में टकराव से बचने के लिए एक उचित दूरी से जंगली जानवरों के बारे में लोकोमोटिव पायलट को चेतावनी देकर रेलवे पटरियों पर जंगली जीवों को ट्रेन को टकराव से बचाने में मदद करता है।

पाई–टॉर्च (Pytorch) कार्यान्वयन के साथ एक आंतरिक "डीप लर्निंग न्यूरल नेटवर्क (Deep Learning Neural Network)" को जानवरों की पहचान के लिए डिज़ाइन और विकसित किया गया है।

लोकोमोटिव की छत पर लगे एक Infrared कैमरा का उपयोग रेलवे ट्रैक पर और उसके आसपास वन्य जीवों की स्थिति निर्धारण और उनको पहचानने के लिए किया जाता है। ऑडियो और विजुअल अलर्ट उत्पन्न करने के लिए लोको पायलट के केबिन में ठोस प्रदर्शन उपकरन (Rugged Display) और स्पीकर सुविधा के साथ एज कम्प्यूटिंग हार्डवेयर (Edge Computing Hardware) स्थापित किया जाता है। जानवरों को

चित्र.1 जंगली जानवरों क पता लगाने के लिए जीयूआई

चित्र.2 इंफ्रा रेड कैमरे का उपयोग करके एआई मॉडल द्वारा हाथियों की पहचान

चित्र.3 रात के समय में इंफ्रा रेड कैमरे का उपयोग करके एआई मॉडल द्वारा जंगली जानवरों की पहचान

पहचानने के लिए एक अत्याधुनिक डीप लर्निंग एआई मॉडल (Deep Learning AI model), भारत इलेक्ट्रॉनिक्स ने विकसित किया है जो रेल दुर्घटनाओं के कारण जानवरों का मृत्यु दर कम करता है।

3.1 एआई प्रणाली विवरण–

योलोव 5 (Yolov5) वास्तुकला को चुना गया था। इन्फ्रा रेड हाथी छवि डेटासेट सीआरएल में तैयार किया गया है और जंगली जानवरों की वास्तविक तस्वीरें बन्नेरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान से ली गई हैं। एआई मॉडल के प्रशिक्षण के लिए डेटासेट तैयार करने के लिए एनोटेशन का काम सीआरएल में लेबलिंग मास्टर एआई टूल का उपयोग करके किया गया है। एआई मॉडल को पायथन (Python) प्रोग्रामिंग भाषा का उपयोग करके लेबल किए गए डेटा से प्रशिक्षित किया गया है।

प्रशिक्षित एआई मॉडल हाथियों और अन्य जानवरों को सफलतापूर्वक अलग करता है और हाथियों के लिए सीमा रेखा चित्र के बनाता है यह सीमा रेखा अन्य जानवरों को अलग करेगी।

3.2 हाई पास फिल्टर का उपयोग–

एआई मॉडल (AI model) को Z8 xeon PC का उपयोग करके प्रशिक्षित किया गया है और प्रशिक्षित एआई मॉडल को आगे जेटसन agx xavier किट में पोर्ट किया गया और परीक्षण किया गया।

4. योलोव5 (yolov5), एआई मॉडल का उपयोग करके प्राप्त किए गए परिणाम–

4.1. प्रणाली की प्रमुख विशेषताएं –

- रीयल– टाइम में वीडियो की दृश्यता बढ़ाता है और लोको ऑपरेटर केबिन के डिस्प्ले पर दिखाता है।
- जानवरों की पहचान और वर्गीकरण के लिए पाइटोरच कार्यान्वयन के साथ अत्याधुनिक गहन शिक्षण मॉडल को डिजाइन और विकसित किया गया है।
- ट्रैक पर हाथी और गैंडे जैसे जंगली जानवरों का पता लगाने/पहचानने पर श्रव्य–दृश्य अलार्म उत्पन्न करता है और यह डिस्प्ले पर दिन और रात के समय में रेलवे ट्रैक के पास जंगली जानवरो को दिखाता है
- एक सप्ताह की अवधि के लिए वीडियो डेटा रिकॉर्ड और संग्रहीत भी कर सकता है।
- 1000 मीटर की दूरी तक हाथी और गैंडे का पता लगाता है।

4.2 प्रणाली का विशेष विवरण –

- इंफ्रा रेड डिटेक्टर रिज़ॉल्यूशन– वीजीए (640X 480)
- केबिन डिस्प्ले यूनिट का आकार– 10.1 "आईपी 67 निविड़ अंधकार सूरज की रोशनी बढ़ने योग्य एलसीडी डिस्प्ले–
- केबिन डिस्प्ले यूनिट रिज़ॉल्यूशन– 1024 X 768
- प्रसंस्करण इकाई– एनवीडिया जेटसन एजीएक्स जेवियर औद्योगिक मॉड्यूल
- बिजली की आपूर्ति– लोकोमोटिव के प्रकार के अनुसार इनपुट आपूर्ति 72V या 110V डीसी के लिए डीसी–डीसी कनवर्टर।

विकसित प्रणाली का परीक्षण और सत्यापन दिन और रात के स्थिति में किया गया है जो कि वन्य जीवों को बचाने मे सहायक हैं।

4.3 संदर्भ– इंटरनेट से yolo v5 मॉडल का उपयोग। इंटरनेट से github लिंक का उपयोग।

आभार

जंगली जानवरों को बचाने के लिए एआई आधारित तकनीक विकसित करने के लिए निरंतर समर्थन के लिए मुख्य वैज्ञानिक श्री. एल. रामा क्रिश्नन्न और जंगली

जानवरों के वीडियो को कैप्चर करने के लिए बन्नेरघट्टा राष्ट्रीय उद्यान प्रबंधन के लिए विशेष धन्यवाद। आईआर कैमरे का उपयोग करके जंगली जानवरों की छवियों को कैप्चर करने में मदद करने के लिए प्रिंसीपल वैज्ञानिक श्री. चावेली रमेश को धन्यवाद। तकनीकी सहायता के लिए ज्योतिश्वर जे का धन्यवाद।

वीरेंद्र कुमार मित्तल
सीआरएल, बेंगलूरु

गुल्लीपल्ली राजेश कुमार
सीआरएल, बेंगलूरु

आत्मनिर्भर भारत

अमृत महोत्सव आजादी का,
मनाता हुआ मेरा भारत।
शत प्रतिशत आत्मनिर्भर,
बनने की है मन में चाहत।।

आजादी मिलने के पश्चात,
वर्षों रहे दूसरों पर निर्भर।
मन में कर लिया निश्चय,
जीएंगे अब अपने दम पर।।

स्वयं पूर्णता तो करनी है हासिल,
लक्ष्य नहीं यह अंतिम हमारा।
चाहे सर्वश्रेष्ठता का ख़िताब पाकर,
नेतृत्व स्वीकार करे संसार सारा।।

न रोको कोई कदम हमारे,
अभियान चलाते एक अविरत।
जिससे सारे विश्व केंद्र में,
बसे मुस्कुराता "आत्मनिर्भर भारत"।।

अतीत बने कल को छोड़ पीछे,
स्वर्णमय राष्ट्र है निर्माणाधीन।
गर्व करें हम सारे मिलकर,
धारण करे देश जब रूप नवीन।।

आत्मनिर्भरता का नारा,
गूंजता हुआ हर गांव हर शहर।
सत्य में लाकर इस नारे को,
परचम लहराएं विजय का मिलकर।।

सर्वेश कुलकर्णी
पुणे

वर्ग पहेली भरें, शब्द ज्ञान बढ़ाएँ

1	2		3	■	4		5	6
7		■	8	9		■	10	
	■	■	■		■	■	■	
11	12	13	■		■	14	15	
■	16							■
17			■		■	18		19
	■	■	■		■	■	■	
20	21	■	22		23	■	24	
25				■	26			

बाएँ से दायें		ऊपर से नीचे	
1.	भारतीय राजनीति का निम्न सदन (4)	1.	युद्ध करना (2,2)
4.	काव्य के नौ रस (4)	2.	टैक्स (2)
7.	पराजय (2)	3.	बरछा (2)
8.	नाईजीरिया की पूर्व राजधानी (3)	4.	रक्त वाहिनी नली (2)
10.	माप–जोख (2)	5.	लक्ष्मी (2)
11.	कोमल (3)	6.	बीबी के साथ (4)
14.	गेंद (3)	9.	गड़बड़ी करना (4,3)
16.	ठीक–ठाक संयोग होना (2–2,3)	12.	जोतना (3)
17.	पुरस्कार (3)	13.	हजामत के समय कनपटी के पास का स्थान (3)
18.	भूमि से सम्बंधित (3)	14.	जुबानी याद (3)
20.	बीज के भीतर का गूदा (2)	15.	दो नालवाली (3)
22.	श्रीमन (3)	17.	चुने हुए (2,2)
24.	नक्षत्र (2)	19.	मृत्यु का देवता (2)
25.	नायकत्व (4)	21.	खाली (2)
26.	जिसका कोई निवारण न हो सके (4)	22.	जड़ी हुई (2)
		23.	मुसीबत (2)
		24.	कुंडी में लगाये जाने वाली एक युक्ति (2)

राजभाषा गतिविधियाँ

संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण

दिनांक 21.05.2022 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा बीईएल, चेन्नै यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान बीईएल, चेन्नै के वरिष्ठ अधिकारीगण, मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं रक्षा मंत्रालय के अधिकारीगण उपस्थित थे। निरीक्षण के दौरान राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली पर चर्चा की गई । माननीय संसदीय समिति ने चेन्नै यूनिट के राजभाषा कार्यान्वयन पर संतोष जताया।

दिनांक 14.07.2022 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की पहली उप समिति द्वारा बीईएल, नवी मुंबई यूनिट का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान बीईएल, नमु के वरिष्ठ अधिकारीगण, मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण एवं रक्षा मंत्रालय के अधिकारीगण उपस्थित थे। निरीक्षण के दौरान राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली पर चर्चा की गई। माननीय संसदीय समिति ने चेन्नै यूनिट के राजभाषा कार्यान्वयन पर संतोष जताया।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

इस बार का हिंदी दिवस समारोह विशेष रहा। पं. दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम, सूरत, गुजरात में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा माननीय गृह एवं सरकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें बीईएल से 22 अधिकारियों ने भाग लिया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिए गए निदेशानुसार हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें गृह मंत्री और रक्षा मंत्री जी के संदेश पढ़े गए।

कार्पोरेट कार्यालय

हिंदी माह के पहले कार्य दिवस सीएमडी महोदय द्वारा जारी संदेश का परिचालन किया गया और मानक द्विभाषी ईमेल का संकलन सभी कार्यपालकों को और कर्मचारियों को परिचालित किया गया। आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य पूरे माह के दौरान स्वागत कक्ष में देश की 75 वर्ष–वार महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। हिंदी माह का बैनर प्रदर्शित किया गया। विशेष पहल के रूप में इस बार माह के पहले दिन कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए सरल अनुवाद और पीसी पर की–इन करना, गायन, हिंदी–कन्नड़ा संगम, प्रश्नोत्तरी और अंताक्षरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी का प्रचार–प्रसार कार्यालय से बाहर भी हो, इसलिए एक प्रतियोगिता (अंताक्षरी) कर्मचारियों के परिजनों के लिए और एक प्रतियोगिता (आशुभाषण) बीईएल स्कूल के कक्षा 9वीं और 10वीं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गईं

इन प्रतियोगिताओं में कुल 60 अधिकारियों / कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया जिसमें से 29 लोगों ने पुरस्कार प्राप्त किए। जिन प्रतिभागियों को कोई पुरस्कार नहीं मिला, उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिभागिता पुरस्कार भी वितरित की गई। इसके अलावा, दो प्रतियोगिताओं में कार्पोरेट कार्यालय के प्रशिक्षु और संविदा कार्मिकों को भी शामिल किया गया।

कृष्णा सोबती हिंदी व्याख्यानमाला के तहत 16 सितंबर, 2022 को "5 जी प्रौद्योगिकी" विषय पर हिंदी में तकनीकी व्याख्यान का आयोजन किया गया।

26 सितंबर, 2022 को सीएमडी की अध्यक्षता में कार्पोरेट राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई । इसी दिन वर्ष 2021–22 के दौरान मूल रूप से हिंदी में कार्य करने की विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। समारोह में मुख्य अतिथि एयर वाइस मार्शल डॉ. देवेश वत्स, विशिष्ट सेवा मेडल, कमांडेंट, एसडीआई (भारतीय वायुसेना), सीएमडी, निदेशक (अनु. व वि.), सीवीओ, महाप्रबंधक गण, विभाग प्रमुख और अधिकारियों / कर्मचारियों उपस्थित रहे। 29 सितंबर, 2022 को छोटी–छोटी बातें (प्रशासनिक शब्दों के अर्थ और वर्तनी) पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

बेंगलूरु कॉमप्लेक्स

29 सितंबर 2022 को बी ई एल के जनसंपर्क कक्ष, प्रबंधन भवन में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. अरविंद कुमार, प्रोफेसर (हिंदी), उप नियंत्रक – परीक्षा जैन विश्वविद्यालय, बेंगलूरु थे। श्री विनय कुमार कत्याल निदेशक (बेंगलूरु कांमप्लेक्स) ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर श्री आर.पी. मोहन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं श्री पाहुजा बी.पी., महाप्रबंधक (ई.एस.), श्रीमती दुर्गा जी.के., महाप्रबंधक (सॉफ्टवेयर) भी उपस्थित थे। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन हुआ एवं मंचासीन गणमान्य को गौरवार्पण किया गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में निदेशक ने बताया कि पहले हमें अपने कर्तव्यों के निर्वहन करने का प्रयास करना चाहिए, फिर उसका प्रचार करना चाहिए। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि पहले कर्मचारीगण प्रतियोगिता के नाम पर भाग लेते थे अब सहर्ष प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह हमारे लिए एक उपलब्धि से कम नहीं है। राजभाषा के प्रचार प्रसार के साथ हिंदी में काम करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है जो प्रशंसनीय है। हमें अपने संस्थान द्वारा प्राप्त लक्ष्य को पूरा करने हेतु प्रतिपल तत्पर रहना चाहिए।

मुख्य अतिथि महोदय ने बी ई एल की राष्ट्र के प्रति भूमिका को सराहा और हिंदी के प्रति समर्पित भाव पर प्रसन्नता जताई। उन्होंने अपने उद्बोधन में हिंदी के विकास और विस्तार की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अपनी मातृभाषा का स्वागत करें, जब हम अपनी मातृभाषा को सुरक्षित रखेगें तभी हिंदी भाषा को सुरक्षित रख सकते है। किसी भी भाषा में उस क्षेत्र की संस्कृति समाहित होती है। भाषा को राजनैतिक संरक्षण चाहिए, जिस भाषा को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होता है वह भाषा दिन दूनी रात चौगुनी सफलता प्राप्त करती है। भाषा को राजनीति का विषय नहीं बनाना चाहिए। भाषा सरल होनी चाहिए।

चेन्नै यूनिट

सितंबर माह 2022 में हिंदी माह मनाया गया एवं विविध हिंदी कार्यक्रम, कार्यशाला एवं प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। माह के दौरान कुल 08 हिंदी प्रतियोगिताएं यानी निबंध, हिंदी टिप्पण,देवनागरी, अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, हिंदी वाक्य बनाना और विलोम/ समानार्थी शब्द का आयोजन कार्यालय के स्थायी व संविदा दोनों कार्मिकों के लिए किया गया। हिंदी प्रतियोगिताओं में कुल 53 कार्मिकों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। कर्मचारियों को 56 नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

प्रत्येक तिमाही के दौरान आयोजित होने वाली हिंदी कार्यशाला (स्वयं अभ्यास के साथ) कुल 39 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

यूनिट में हिंदी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। वर्तमान में कुल 13 कार्मिक प्रशिक्षण के लिए शेष है और कुल 105 कार्मिक प्रशिक्षणाधीन है। प्रतिवर्ष बैचवार प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

हैदराबाद यूनिट

हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14.09.2022 को एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संचालन श्री कमालुद्दीन, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण संस्थान, गृह मंत्रालय द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में 50 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस दौरान अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं माननीय गृह मंत्री जी के संदेशों को पढ़ा गया।

हिंदी माह समापन कार्यक्रम– दिनांक 29.09.2022 को मुख्य अतिथि कप्तान नंद किशोर सिंह, संयुक्त सीक्यूएओ, सीक्यूएई(एन), सिकंदराबाद, एवं महाप्रबंधक श्री के श्रीनिवास की उपस्थिति में हिंदी माह समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 120 कर्मचारियों ने भाग लिया। राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियों से कर्मचारियों को अवगत कराया और हिंदी माह कार्यक्रमों का ब्योरा दिया। कर्मचारियों को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक ने राजभाषा कार्यान्वयन प्रयासों की सराहना की और पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। इसी उत्साह के साथ वे साल–भर के लिए भी हिंदी काम–काज में अपना योगदान बनाए रखने के लिए उन्होंने सभी को प्रोत्साहित किया। मुख्य अतिथि ने हिंदी कार्यक्रमों के प्रतिभागियों को बधाई दी। मुख्य अतिथि एवं महाप्रबंधक द्वारा हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता एवं पुरस्कार/प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत चयन किए गए कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। हिंदी अधिकारी सुश्री के दिव्या द्वारा संचालित यह कार्यक्रम व.उ.म.प्र(गु.प्र.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

कर्मचारियों द्वारा मूल रूप से हिंदी में काम के लिए निर्धारण समिति द्वारा संबंधित कार्यालय आदेश में दिए गए दिशा–निर्देशों के अनुसार मूल्यांकन के लिए 34 कर्मचारियों से आवेदन प्राप्त हुए। इनमे से अर्हता प्राप्त 04 को प्रेमचंद पुरस्कार, 28 को जयशंकर पुरस्कार प्रदान किए गए। यह पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र हिंदी माह समापन समारोह के दौरान वितरित किए गए।

विशेष पहल के रूप में कर्मचारियों के सुलभ संदर्भ हेतु यूनिट में उपयुक्त आंतरिक इंट्रानेट पोर्टल पर फोन बुक को पूर्ण रूप से द्विभाषी रूप में उपलब्ध कराया गया है।

मछिलीपट्टणम

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, मछिलीपट्टणम में हर साल की तरह इस साल भी सितंबर माह यह हिंदी माह के रूप में मनाया गया। 2 सितंबर को हिंदी माह समारोह का उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभी विभागीय प्रमुख उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में श्री दिनेश उईके, सदस्य सचिव (रा भा का स) ने हिंदी माह में आयोजित होने वाली सभी गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। इसके बाद रा.भा.का.स. के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री बी. प्रभाकर राव जी ने हिंदी दिवस का महत्व समझाया और सभी कर्मचारियो को हिंदी का कार्यालयीन कामों में ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने को कहा।

हिंदी माह के अवसर पर बी.ई.एल. मछिलीपट्टणम में राजभाषा हिंदी को बढावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

हिंदी माह के अवसर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता और हिंदी प्रश्नोत्तरी का समावेश था। प्रतियोगिताओं में बहुत सारे कर्मचारियों ने भाग लिया।

दि.30.09.2022 हिंदी माह समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सभी हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर श्री बी.के.स्वैन वैज्ञानिक, (एस.क़्यु.ए.ई.) को आमंत्रित किया गया और उंहोने रा.भा. से संबंधित मचिलीपट्टणम यूनिट में हो रही गतिविधियो की सराहना की और रा.भा. के बारे में अवगत कराया।

महाप्रबंधक महोदय श्री बी. प्रभाकर जी ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं का अभिनंदन किया। मुख्य अतिथि का कार्यक्रम में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया। सभी कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने, हिंदी में हस्ताक्षर करने, हिंदी में नोटिंग करने, मेल में हिंदी का उपयोग करने के लिए कहा।

अंत में सभी रा.भा. अधिकारी श्री दिनेश उईके ने हिंदी का उपयोग करने और हिंदी को ज्यादा से ज्यादा बढावा देने का निवेदन करते हुए कार्यक्रम को समाप्त किया।

सीआरएल–बेंगलूरु

दिनांक 24 जून, 2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड द्वारा ज्ञानसिंधु–तकनीकी व्याख्यान की 25वीं रजत शृंखला में "कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स" विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके अलावा दिनांक 08 अगस्त, 2022 को केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला के प्रयोजन से संयुक्त हिंदी माह के दौरान गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और कुल 44 प्रतिभागीगण ने हिस्सा लिया।

सीआरएल में दिनांक 21 जून, 2022 को एक्यूप्रेशर के माध्यम से औषधिरहित उपचार विषय पर हिंदी में तकनीकी व्याख्यान का आयोजन किया गया। वक्ता के रूप में डॉ डी पी शर्मा, स्टेप टू हेल्थ क्लीनिक, बेंगलूर आमंत्रित थे।

हिंदी माह के दौरान सीआरएल के कार्यपालकों के लिए निबंध, वार्तालाप, आशुभाषण, सरल अनुवाद एवं प्रशासनिक शब्दावली और अंत्याक्षरी प्रश्नोत्तरी कुल 6 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में कुल 238 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। हिंदी माह के दौरान प्रशिक्षुओं और संविदा कर्मचारियों के लिए भी हिंदी के संग, आजादी का अमृत महोत्सव का रंग विषय पर आधारित पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। 29 सितंबर को हिंदी माह पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। श्री सौरभ नाईक के मधुर ईश वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम में राभाकास के अध्यक्ष एवं मुख्य वैज्ञानिक (सीआरएल), श्री एल रामकृष्णन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और अपने कर कमलों से कुल 48 पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण–पत्र प्रदान किए। कार्यक्रम के अंत में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुई जिसमें सीआरएल के कार्यपालकों ने "हिंदी जन जन की भाषा" विषयवस्तु पर एक नाटक प्रस्तुत किया, विविधता में एकता विषय पर एक समूह नृत्य और बासुरी वाद्य यंत्र की प्रस्तुति की गई।

पी डी आई सी, बेंगलूरु

कार्यपालकों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने और जागरूकता बढ़ाने के लिए उत्पाद विकास एवं नवोन्मेष केंद्र में सितंबर माह की पहली तारीख से पीडीआईसी के प्रवेश द्वार पर राजभाषा संबंधी पोस्टर व बैनर लगाए गए। राजभाषा संबंधी नियमों की जानकारी पूरे माह के दौरान माध्यम से प्रदर्शित किए गए।

9 सितंबर 2022 को हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता हिंदी और हिंदीतर दोनों वर्गों के लिए आयोजित हुई। 19 सितंबर 2022 को उप महाप्रबंधक एवं उनसे ऊपर श्रेणी के लिए "प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता आयोजित की गई। 24 सितंबर 2022 को "सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता आयोजित की गई।

14 सितम्बर को पीडीआईसी सभागार में हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह व अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक बीईएल के संदेश पढ़े गए। श्री गणेश प्रसाद साहू, निदेशक, एएलआईएसडीए, इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। समारोह के दौरान "आशु भाषण प्रतियोगिता" का आयोजन भी किया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय–कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में दिनांक 01 सितंबर 2022 को हिंदी माह उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यालय के मुख्य द्वार पर हिंदी माह समारोह का बैनर प्रदर्शित किया गया और कार्यालय की प्रमुख स्थलों पर महान व्यक्तियों की हिंदी से संबंधित प्रेरणादायी सूक्तियों को प्रदर्शित किया गया।

दिनांक 14 सितंबर 2022 को "हिंदी दिवस" मनाया गया। श्री मानस रंजन मिश्रा, कार्यालय प्रमुख ने मंगलदीप प्रज्वलित कर हिंदी दिवस का शुभारंभ किया। इसके पश्चात रक्षा मंत्री एवं गृह मंत्री द्वारा भेजे गए हिंदी दिवस पर संदेश का पाठ किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रमुख ने राजभाषा नीतियों पर जागरूकता के लिए विशेष व्याख्यान किया। कार्यालय प्रमुख ने हिंदी में की जा रही सरकारी कामकाज पर विस्तार से चर्चा की और अधिक से अधिक कार्य को हिंदी में करने के लिए सभी सदस्यों को प्रोत्साहित किया।

हिंदी माह के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें निबंध, अंग्रेज़ी से हिंदी एवं हिंदी से अंग्रेज़ी में अनुवाद, हिंदी नारा और हिंदी की–इन प्रतियोगिताएं शामिल है। इन सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन कोविड–19 महामारी संबन्धित दिशा निर्देशों का पालन करते हुए किया गया।

दिनांक 27 सितंबर 2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि, डॉ. सुनील कुमार लोका, उप–निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना (पूर्व क्षेत्र), गृह मंत्रालय ने प्रारम्भ में भारतीय संविधान एवं राजभाषा से संबन्धित धाराओं 343 से 351 तक का उल्लेख किया और किस तरह से हिंदी संघ की भाषा बनी और क्यूँ हिंदी को राजभाषा बनाया गया, इसका विस्तार पूर्वक चर्चा किया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों की मातृभाषा एवं उनसे जुड़ी संस्कृति के बारे में भी चर्चा की। उपस्थित सदस्यों को अपने कर्तव्यबोध एवं नैतिक जिम्मेदारियों का एहसास दिलाते हुए अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया।

नवी मुंबई यूनिट

दिनांक 01.09.2022 को यूनिट के समस्त प्रमुख स्थलों पर हिंदी माह समारोह एवं लेखकों के हिंदी प्रचार संबंधी सूक्तियों के बैनर प्रदर्शित किए गए। हिंदी माह का कार्यक्रम जारी किया गया। इससे पूर्व हिंदी माह समारोह में अधिक से अधिक कर्मचारियों को राजभाषा गतिविधियों से जोड़ने तथा माह के सहज आयोजन हेतु हिंदी माह आयोजन समिति गठित की गई।

दिनांक 14.09.2022 को यूनिट के प्रबंधन प्रखंड के सभागार में "हिंदी दिवस" समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाप्रबंधक द्वारा दीप प्रदीपन कर किया गया। "हिंदी दिवस" पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश, श्री प्रवीण कुमार, अपर महाप्रबंधक (उत्पादन), माननीय रक्षामंत्री जी का संदेश श्री पी. के. पाठक, वरि. महाप्रबंधक(उत्पाद आश्वासन), तथा अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का संदेश श्रीमती विनया प्रनिक मूल, प्रबंधक द्वारा पढ़ा गया। अंत में महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि इसमें दो राय नहीं है कि देश में अन्य भाषा भाषियों के बीच संपर्क के लिए हिंदी ही एक मात्र संपर्क भाषा है। देश के बड़े भू–भाग में हिंदी ही बोली जाती है। कई लोग हिंदी में पत्राचार और एफ.एल.एम. फाइलें भी बना रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारी अपना नोट हिंदी में डाल रहे हैं। पत्राचार में हिंदी ई–मेल को भी शामिल किया गया है। कार्यक्रम का संचालन श्री हिमांशु मौर्य उप प्रबंधक द्वारा किया गया।

पुणे यूनिट

दिनांक 01.09.2022 को यूनिट के समस्त प्रमुख स्थलों पर हिंदी माह समारोह एवं लेखकों के हिंदी प्रचार संबंधी सूक्तियों के बैनर प्रदर्शित किए गए। हिंदी माह का कार्यक्रम जारी किया गया। इससे पूर्व हिंदी माह समारोह में अधिक से अधिक कर्मचारियों को राजभाषा गतिविधियों से जोड़ने तथा माह के सहज आयोजन हेतु हिंदी माह आयोजन समिति गठित की गई थी।

दि. 14.09.2022 को यूनिट में "हिंदी दिवस" समारोह मनाया गया। इसमें अन्य कर्मचारियों/अधिकारियों के अतिरिक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य प्रमुख रुप से उपस्थित थे। महाप्रबंधक महोदय, अध्यक्ष, हिंदी माह आयोजन समिति, अपर महाप्रबंधक (इलेक्ट्रॉनिक्स फ्यूज व ऐम्युनिअशन),अध्यक्ष, अधिकारी असोशिएशन तथा अध्यक्ष, कामगार संगठन द्वारा दीप प्रदीपन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात वरि. उप महाप्रबंधक (सामग्री प्रबंधन) श्री हंसराज द्वारा माननीय गृहमंत्री जी का संदेश पढ़ा गया। वरि. उप महाप्रबंधक (विकास व अभि.) श्री रविंद्र चौधरी द्वारा माननीय रक्षामंत्री जी का संदेश पढ़ा गया। माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का संदेश वाचन श्री अमोद तिवारी, उप महाप्रबंधक (सी.क्यू.ए.) द्वारा पढ़ा गया। तत्पश्चात अध्यक्ष, हिंदी माह आयोजन समिति, श्री ए. आर. काले द्वारा अब तक आयोजित प्रतियोगिताओं तथा आगामी कार्यक्रमों एवं शेष प्रतियोगिताओं के विषय में उपस्थित जनों को अवगत कराया गया।

दि. 30.09.2022 को पुरस्कार वितरण समारोह में महाप्रबंधक महोदय, अपर महाप्रबंधक (गुणता प्रबंधन) तथा अपर महाप्रबंधक (फ्यूज) द्वारा सभी पुरस्कार विजेताओं को प्रमाण–पत्र तथा सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया। इस

अवसर पर महाप्रबंधक महोदय द्वारा कहा गया कि जो लोग इस वर्ष पुरस्कार प्राप्त करने से रह गए हैं, वे अगले वर्ष अधिक तैयारी करें। विजयी प्रतिभागी तथा प्रतिभागिता पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारी/अधिकारी हिंदी कार्य को बढाएं। समिति को हिंदी माह के सफल आयोजन हेतु बधाई एवं धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि जिन्होंने अभी तक हिंदी कार्य आरंभ नहीं किया कल से आरंभ करें। अंत में अध्यक्ष, हिंदी माह आयोजन समिति, श्री ए.आर काले द्वारा महाप्रबंधक महोदय, प्रतिभागियों, अभियांत्रिकी सेवाएं, मानव संसाधन, वित्त व लेखा, जन संपर्क विभाग, सूचना प्रणाली तथा निर्णायक मंडल का हिंदी माह के दौरान सहयोग प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री बी.एम.एस. रावत द्वारा किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय–मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय – मुंबई में सितंबर माह को हिंदी माह के रूप में मनाया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षा सुश्री अनीता भद्रा, उप महाप्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने हिंदी दिवस पर गृह मंत्री व रक्षा मंत्री से प्राप्त संदेश पढे एवं सभी कर्मचारी को हिंदी में अधिकतम कार्य करने हेतु प्रेरित किया। सुश्री अनीता भद्रा, उप महाप्रबंधक, क्षेत्रीय, कार्यालय, मुंबई द्वरा "कार्यालयीन कामकाज में सरल और सुगम हिंदी का प्रयोग बढ़ाना" इस विषय पर व्याखान का आयोजन किया गया। कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने हिंदी माह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में उत्साहपूर्व भाग लिया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव श्री नितीन पाटील ने हिंदी माह समारोह के सभी कार्यक्रमों का संचालन तथा सभी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

गाज़ियाबाद यूनिट

गाजियाबाद यूनिट में हिंदी माह व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्ड यूनिट / एसबीयूओं में प्रमुख स्थलों पर लगाए गए। 14 सितंबर को यूनिट के डिस्प्ले हाल में हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। कॉर्पोरेट के दिशा निर्देशों के अनुसार हिंदी माह 2022 के दौरान वरिष्ठ अधिकारियों व हिंदीत्तर भाषा–भाषियों समेत सभी कर्मचारियों के लिए कुल दस प्रतियोगिताएं जैसे आशु–भाषण, काव्यपाठ, अनुवाद, निबंध लेखन, पोस्टर, लेख, कार्यालयी पत्र व्यवहार, पुस्तक प्रस्तुति, अंत्याक्षरी व मूकनाट्य संकेत आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। अंत्याक्षरी व मूकनाट्य संकेत प्रतियोगिता में कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

29 सितंबर, 2022 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक रेडार व महाप्रबंधक प्रभारी (एन्टेना) द्वारा माखनलाल व मैथिलीशरण पुरस्कार विजयी मेधावी बच्चों सहित सभी प्रोत्साहन पुरस्कार व हिंदी प्रतियोगिता पुरस्कारों के प्रमाणपत्र आबंटित किए गए। पुरस्कार वितरण समारोह में वर्ष 2021–21 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए यूनिट के रेडार एसबीयू को महाप्रबंधक राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

पुरस्कार वितरण समारोह के अंत में महाप्रबंधक (रेडार) श्री जगदीश चन्द ने सभी एसबीयू से प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों व पुरस्कार विजेताओं व विशेषकर पुरस्कृत बच्चों को बधाई दी। उन्होंने सभी कर्मचारियों व कार्मिकों को राजभाषा संबन्धित संवैधानिक प्रावधानों व राजभाषा नीति–नियमों का पालन करते हुए हिंदी में कार्य करने का अनुरोध किया। कार्यपालक निदेशक (एनसीएस) व यूनिट प्रमुख श्री जयदीप मजूमदार ने सभी विजेताओं व प्रतिभागियों व विशेषकर मैथिलीशरण पुरस्कार व माखनलाल पुरस्कार के विजयी मेधावी बच्चों को बधाई दी व राजभाषा/मा.सं. विभाग द्वारा हिंदी माह को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने पर प्रशंसा व्यक्त की। अंत में वरिष्ठ सहायक राजभाषा अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों, कर्मचारियों, हिंदी माह आयोजन समिति के सदस्य व वरिष्ठ अधिकारियों को धन्यवाद प्रस्तुत किया व उपस्थित मेधावी छात्र/छात्राओं को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की।

कोटद्वार यूनिट

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड की कोटद्वार यूनिट में 01 सितंबर से 30 सितंबर, 2022 तक हिंदी माह मनाया गया। हिंदी माह का प्रारम्भ यूनिट के प्रमुख स्थलों पर हिंदी प्रचार–प्रसार संबंधी बैनर लगाने से हुआ। डिजिटल डिस्प्ले पर भी विभिन्न महापुरुषों व साहित्यकारो के हिंदी प्रयोग को प्रोत्साहित करते वाक्यांश प्रदर्शित किए गए। इसके उपरांत माह भर में कर्मचारियों हेतु कुल 09 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं (प्रचार वाक्य, पोस्टर, राजभाषा जागरूकता, स्वरचित कविता पाठ, हिंदी पत्र लेखन, राजभाषा ज्ञान, चित्र अभिव्यक्ति, वर्ग पहेली, प्रतीक द्वारा शब्द निर्धारण) जिसमें 154 कार्मिकों (27 कार्यपालक एवं 127 गैर–कार्यपालक) ने भाग किया।

दिनांक 14.09.2022 को यूनिट में 'हिंदी दिवस' के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका शुभारंभ श्री विश्वेश्वर पुच्चा, महाप्रबंधक (कोट) द्वारा किया गया। उन्होंने हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए सभी को प्रेरित किया। तत्पश्चात अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक, माननीय गृहमंत्री एवं रक्षा मंत्री के हिंदी दिवस पर प्रेषित संदेशों का वाचन किया गया। माह भर हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओ के उपरांत दिनांक 30.09.2022 को 'हिंदी माह' समापन समारोह का आयोजन हुआ। श्रीमती माधुरी रावत, वरिष्ठ सहायक राजभाषा अधिकारी द्वारा यूनिट में अब तक की राजभाषा संबंधी उपलब्धियों का विवरण दिया गया। श्री विश्वेश्वर पुच्चा, महाप्रबंधक (कोट) द्वारा कुमारी मेधा चौहान को कक्षा 10 में हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर मैथिलीशरण पुरस्कार तथा अपना सम्पूर्ण कार्य हिंदी में करने के लिए श्री देवानंद कुकरेती, वरिष्ठ सहायक अधिकारी/प्रबंधन सेवाएं को तुलसीदास पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं एवं वर्ष भर चली प्रोत्साहन योजनाओं के पुरस्कार भी वितरित किए गए। महाप्रबंधक महोदय ने वर्ष भर हिंदी कार्यान्वयन के लिए अभियांत्रिकी सेवाएं विभाग को महाप्रबधक चल वैजयंती से सम्मानित किया।

क्षेत्रीय कार्यालय – दिल्ली

हिंदी माह के अवसर पर महान व्यक्तियों की प्रेरक सूक्तियाँ वाले बैनर, पोस्टर/हार्ड बोर्ड कार्यालय के प्रमुख जगहों पर प्रदर्शित किए गए। कार्यालय में 14 सितंबर को "हिंदी दिवस" उत्साहपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में श्री रवि शंकर सेठ, प्रबंधक (क्षे. का.) व सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा अपर महाप्रबंधक, विंग कमांडर राजेश वालिया (रि.) एवं उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत किया गया और बीईएल गान सुनाया गया। जिसके बाद उपस्थित विशिष्ट अधिकारियों और राभाकास अध्यक्ष द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इसके उपरांत राजभाषा अधिकारी ने क्रमशः अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक, माननीय रक्षा मंत्री जी और माननीय गृह मंत्री जी का हिंदी दिवस पर जारी संदेश पढ़कर सुनाया। हिंदी माह 2022 के दौरान कर्मचारियों के लिए कुल चार प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी भाषा–भाषियों के लिए चार प्रतियोगिताएं जैसे "हिंदी निबंध लेखन" "टिप्पण एवं आलेखन", "कविता पाठ" और "हिंदी अनुवाद" प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

29 सितंबर, 2022 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के आरंभ में राजभाषा अधिकारी ने प्रस्तुति के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं का ब्यौरा दिया। कॉर्पोरेट कार्यालय की प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अधिकारियों और कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए। कॉर्पोरेट कार्यालय की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत एक गैर–कार्यपालकों को प्रेमचंद व बारह कार्यपालक व गैर–कार्यपालकों को जयशंकर प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हिंदी कार्य के लिए प्रोत्साहन योजना तथा अन्य राजभाषा पुरस्कार योजनाओं के विजेताओं की सूची 2021–22

प्रेमचंद पुरस्कार, कार्यपालक(श्री / श्रीमती / सुश्री)

जितेंद्रिय नायक
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

ऋतु लाम्बा
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

नीरज कुमार चड्ढा,
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

प्रेमचंद पुरस्कार, गैर–कार्यपालक (श्री / श्रीमती / सुश्री)

कविता के.पी.
सी.ओ., प्रथम पुरस्कार

आरती सी बुदप्पनवार
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

उषा एल
सी.ओ., द्वितीय पुरस्कार

संध्या पंत
क्षे.का., दिल्ली द्वितीय पुरस्कार

वाणिश्री जी
सी.ओ., तृतीय पुरस्कार

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, कार्यपालक (श्री / श्रीमती / सुश्री)

अनीता भद्रा
क्षे.का. मुंबई, प्रथम वर्ग

आयुषी गर्ग
सी.ओ., प्रथम वर्ग

रविशंकर सेठ
क्षे.का., दिल्ली प्रथम वर्ग

गोपाल
सी.ओ., प्रथम वर्ग

नितिन के पाटिल
क्षे.का. मुंबई, प्रथम वर्ग

अजीत सिंह
आई.एम.डी., प्रथम वर्ग

वीरेंद्र कुमार कुशवाहा
आई.एम.डी., द्वितीय वर्ग

बेबी शांता
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

अनिता रॉड्रिक्स
क्षे.का. मुंबई द्वितीय वर्ग

एच पी श्रीनिवासराव
आई.एम.डी., द्वितीय वर्ग

रविकुमार एम,
आई.एम.डी., द्वितीय वर्ग

अजय कुमार अग्रवाल,
आर.ओ.कोल., द्वितीय वर्ग

श्रीनिवास एस एस आर
सी.ओ., तृतीय वर्ग

मनोज कुमार नागवंशी
आई.एम.डी., तृतीय वर्ग

अरुणा के
सी.ओ., तृतीय वर्ग

श्रीनाथ बी टी
सी.ओ., तृतीय वर्ग

शशि कुमार पृथ्वी
आर.ओ. कोल. तृतीय वर्ग

शिवनाथ एम कणसे
आर.ओ. मुंबई, तृतीय वर्ग

कृष्णा सेवदा
आर.ओ. दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

तमलसेन गुप्ता
आर.ओ.कोल., चतुर्थ वर्ग

पिंकू दे,
आर.ओ.कोल., चतुर्थ वर्ग

डबल्यू सत्यनारायण वामन
आर.ओ.वैजाग, चतुर्थ वर्ग

साईवंशी कृष्णाबाबु वेदलम
आर.ओ. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

ए एस राव,
आर.ओ. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

के जॉनलूइस
आर.ओ. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

डी उदय सुभाष अरविंद
आर.ओ. वैजाग, विशेष प्रोत्साहन

ब्रजेश कुमार राय,
आर.ओ. वैजाग, विशेष प्रोत्साहन

सुब्रत सरकार
आर.ओ. कोल., विशेष प्रोत्साहन

शशिधर मंगलगी
आई.एम.डी., विशेष प्रोत्साहन

जयशंकर प्रसाद पुरस्कार, गैर–कार्यपालक (श्री / श्रीमती / सुश्री)

लालम रमणा
सी.ओ., प्रथम वर्ग

सुनीता आर
सी.ओ., प्रथम वर्ग

शर्मिला एन
सी.ओ., प्रथम वर्ग

देविका डी पी
क्षे.का. मुंबई प्रथम वर्ग

भार्गवी जे
सी.ओ., प्रथम वर्ग

रेखा एस हेरेंजल
सी.ओ., प्रथम वर्ग

राजेश्वरी बी
सी.ओ., प्रथम वर्ग

. शकुंतला वाई
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

अस्मा अंजुम कुसुगल
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

दीपु बी
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

किरण देठे
आर.ओ. मुंबई, द्वितीय वर्ग

प्रीता एम
सी.ओ., द्वितीय वर्ग

टी.वी. राव
आर.ओ.वैजाग, द्वितीय वर्ग

धीरज परमार
आर.ओ. मुंबई, तृतीय वर्ग

प्रसन्न कुमार जाधव
आर.ओ. मुंबई, तृतीय वर्ग

संजय मारुति बोंबे
आर.ओ. मुंबई, तृतीय वर्ग

स्वाति एम.एस.
सी.ओ., तृतीय वर्ग

शांतनु भट्टाचार्या
आर.ओ. कोलकाता, तृतीय वर्ग

सुमित्रा देवरानी
आर.ओ. दिल्ली, तृतीय वर्ग

वी वी एस एन राजु,
क्षे.का.वैजाग, चतुर्थ वर्ग

शारदा सी.एच
सी.ओ., चतुर्थ वर्ग

तंकला सूरी सत्यनारायण
आर.ओ. वैजाग, चतुर्थ वर्ग

मानसा आर एस
सी.ओ., चतुर्थ वर्ग

कुम्मी शर्मा,
आर.ओ. दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

प्रदीप बिजलवान
आर.ओ. दिल्ली, चतुर्थ वर्ग

ममता एस
सी.ओ., विशेष प्रोत्साहन

प्रेम कुमार
सी.ओ., विशेष प्रोत्साहन

पवन कुमार
आर.ओ., दिल्ली, विशेष प्रोत्साहन

कबीर पुरस्कार

श्री मानस रंजन मिश्रा
क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

नागार्जुन पुरस्कार (श्री / श्रीमती / सुश्री)

आकाश गर्ग
गा.बाद, प्रथम पुरस्कार

एनायतुर रहमान
गा.बाद, प्रथम पुरस्कार

हितांश माहेश्वरी
गा.बाद, प्रथम पुरस्कार

गौरव आनंद
पीडीआईसी, द्वितीय पुरस्कार

रोहित लाहिरी
पीडीआईसी, द्वितीय पुरस्कार

अस्मिता सिंघल
पीडीआईसी, द्वितीय पुरस्कार

वीरेंद्र कुमार मित्तल
सीआरएल, बेंगलूरु, तृतीय पुरस्कार

गुल्लीपल्ली राजेश कुमार
सीआरएल, बेंगलूरु, तृतीय पुरस्कार

आइए हिंदी माध्यम से कन्नड़ सीखें, कन्नड़ में बात करना सीखें...
ಬನ್ನಿ ಹಿಂದಿಯ ಮೂಲಕ ಕನ್ನಡ ಕಲತು ಮಾತಾಡೋಣ

1.	मुझे चलना चाहिए।	ನಾನು ಹೋಗಲೇ ಬೇಕು.	नानु होगले बेकु.
2.	यहाँ भी वही हाल है।	ಇಲ್ಲೂ ಅದೇ ಸ್ಥಿತಿ.	इल्लू अदे स्थिति.
3.	इसमें कोई कष्ट नहीं।	ಇದರಿಂದ ಏನೂ ತೊಂದರೆ ಇಲ್ಲ.	इदरिंद एनु तोंदरे इल्ला.
4.	कृपया थोड़ा समय और रुक जाइए।	ದಯವಿಟ್ಟು ಇನ್ನು ಸ್ವಲ್ಪ ಹೊತ್ತು ಇರಿ.	दयविट्टु इन्नु स्वल्प होत्तु इरि.
5.	हम आपकी अच्छी खातिरदारी नहीं कर सकें।	ನಿಮ್ಮನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡಿಕೊಳ್ಳಲು ಆಗಲಿಲ್ಲ.	निम्मन्नु सरियागि नोडिकोळ्ळलु आगलिल्ला.
6.	मुझे आपको कष्ट नहीं देना चाहिए।	ನನ್ನಿಂದ ನಿಮಗೆ ತೊಂದರೆ ಯಾಗಬಾರದು.	नन्निंद निमगे तोंदरे यागबारदु.
7.	संकोच न कीजिए।	ಸಂಕೋಚ ಬೇಡ.	संकोच बेडा.
8.	अपना ही समझिए।	ನಿಮ್ಮದೆಂದೆ ಭಾವಿಸಿ.	निम्मदेंदे भाविसि.
9.	कृपया अंदर आ जाएं।	ದಯವಿಟ್ಟು ಒಳಗೆ ಬನ್ನಿ.	दयविट्टु ओळगे बन्नि.
10.	कृपया हस्ताक्षर करें।	ದಯವಿಟ್ಟು ಇಲ್ಲಿ ಸಹಿ ಮಾಡಿ.	दयविट्टु इल्लि सहि माडि.
11.	कृपया शांत रहें।	ದಯವಿಟ್ಟು ಸುಮ್ಮನಿರಿ.	दयविट्टु सुम्मनिरि.
12.	कृपया फिर पधारें।	ದಯವಿಟ್ಟು ಪುನಃ ಬನ್ನಿ	दयविट्टु पुनः बन्नि
13.	कृपया फिर कहिए।	ದಯವಿಟ್ಟು ಇನ್ನೊಮ್ಮೆ ಹೇಳಿ.	दयविट्टु इन्नोम्मे हेळि.
14.	कृपया थोड़ा आराम कर लें।	ದಯವಿಟ್ಟು ಸ್ವಲ್ಪ ವಿಶ್ರಾಂತಿ ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಿ	दयविट्टु स्वल्पा विश्रांति तेगेदुकोळ्ळि.
15.	क्या मैं आपको थोडा कष्ट दे सकता हूँ?	ನಿಮಗೆ ನಾನು ಸ್ವಲ್ಪ ತೊಂದರೆ ಕೊಡಬಹುದ?	निमगे नानु स्वल्पा तोंदरे कोडबहुदा?
16.	क्या आप इससे सहमत है?	ಇದನ್ನು ನೀವು ಒಪ್ಪತ್ತೀರಾ?	इदन्नु नीवु ओप्पुत्तीरा?
17.	क्या मैं जा सकता हूँ?	ನಾನು ಹೋಗ ಬಹುದೆ?	नानु होग बहुदे?
18.	समझ में आया?	ಅರ್ಥವಾಯಿತ?	अर्थवायिता?
19.	क्या तुम्हें मालूम है?	ನಿನಗೆ ಗೊತ್ತೆ?	निनगे गोत्ते?
20.	झगडा किस बात का है?	ಜಗಳ ಏಕಾಗಿ?	जगळ एकागि?
21.	अधिक समय के लिए नहीं।	ಹೆಚ್ಚು ಕಾಲದವರೆಗೆ ಅಲ್ಲ	हेच्चु कालदवरेगे अल्ला
22.	कितनी अपमानजनक बात है।	ಎಷ್ಟು ಅವಮಾನದ ವಿಷಯ.	एष्टु अवमानद विषय.
23.	आश्चर्यजनक.	ಆಶ್ಚರ್ಯಕರ.	आश्चर्यकर.
24.	कितने दुःख की बात है।	ಎಷ್ಟು ದುಃಖದ ವಿಷಯ.	एष्टु दुःखद विषय.

25.	जरा भी नहीं।	ಸ್ವಲ್ಪವೂ ಇಲ್ಲ.	स्वल्पवू इल्ला.
26.	भाग्य आपका साथ दे।	ಅದೃಷ್ಟ ಒಲಿಯಲಿ.	अदृष्ट ओलियलि.
27.	तुम विश्वास करोगे?	ನೀವು ನಂಬುವಿರಾ?	नीवु नंबुविरा?
28.	यहीं इंतजार करते हैं।	ಇಲ್ಲೇ ಕಾದಿರಿ.	इल्ले कादिरि.
29.	इसे लीजिए।	ಇದನ್ನು ತೆಗೆದುಕೊಳ್ಳಿ.	इदन्नु तेगेदुकोळ्ळि
30.	फौरन जाओ।	ಕೂಡಲೆ ಹೋಗು.	.कूडले होगु.
31.	फिर कोशिश करो।	ಪುನಃ ಪ್ರಯತ್ನಿಸು.	पुनः प्रयत्निसु.
32.	असली बात कहो। / मुद्दे पर आओ।	ಮುಖ್ಯ ವಿಷಯಕ್ಕೆ ಬನ್ನಿ.	मुख्य विषयक्के बन्नि.
33.	मेरे पीछे आओ।	ನನ್ನ ಹಿಂದೆ ಬಾ.	नन्न हिंदे बा.
34.	कुछ भी न कहो।	ಏನನ್ನು ಹೇಳಬೇಡ.	एनन्नु हेळबेडा.
35.	मुझे सच–सच बताओ।	ನನಗೆ ನಿಜ ಹೇಳು.	ननगे निज हेळु.
36.	खाते का मिलान करो।	ಲೆಕ್ಕ ಪತ್ರಗಳನ್ನು ಸರಿಯಾಗಿ ನೋಡು.	लेक्क पत्रगळन्नु सरियागि नोडु.
37.	यहाँ गाड़ी खड़ी करना मना है।	ಇಲ್ಲಿ ವಾಹನಗಳನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಬಾರದು.	इल्लि वाहनगळन्नु निल्लिसबारदु.
38.	बाएं चलिए।	ಎಡ ಬದಿಯಲ್ಲೇ ನಡೆಯಿರಿ.	एड बदियल्ले नडेयिरि.
39.	मेहमान को अंदर बुलाओ।	ಅತಿಥಿಗಳನ್ನು ಒಳಗೆ ಕರಿ.	अतिथिगळन्नु ओळगे करि.
40.	सब तैयार रखना।	ಎಲ್ಲವನ್ನೂ ಸಿದ್ಧವಾಗಿಟ್ಟಿರು.	एल्लावन्नू सिद्धवागिट्टिरु.
41.	इसको लिख लो।	ಇದನ್ನು ಬರೆದು ಕೊ.	इदन्नु बरेदु को.
42.	मेरे आने तक यहां प्रतीक्षा करो।	ನಾನು ಬರುವವರೆಗೆ ಇಲ್ಲೇ ಇರು.	नानु बरुव वरेगे इल्ले इरु.
43.	अपना काम देखो।	ನಿನ್ನ ಕೆಲಸ ನೀನು ನೋಡಿಕೊ.	निन्न केलस नीनु नोडिको.
44.	जरा सब्र रखो।	ಸ್ವಲ್ಪ ತಾಳ್ಮೆ ಇರಲಿ.	स्वल्प ताळ्मे इरलि.
45.	देरी / विलंब मत करो।	ತಡ ಮಾಡ ಬೇಡ.	तड माड बेडा.
46.	दूसरों की नकल न करो।	ಬೇರೆಯವರನ್ನು ಅಣಕಿಸಬೇಡ.	बेरे यवरन्नु अणकिसबेडा.
47.	मुझे सूचित करना न भूलना।	ನನಗೆ ತಿಳಿಸಲು ಮರೆಯಬೇಡ.	ननगे तिळसिलु मरेयबेडा.
48.	पूर्ण विवरण सहित एक पत्र लिखो।	ವಿವರವಾದ ಪತ್ರ ಬರಿ.	विवरवाद पत्र बरि.
49.	फिर कभी ऐसा मत करो।	ಇನ್ನೆಂದು ಹೀಗೆ ಮಾಡಬೇಡ.	इन्नेंदु हीगे माडबेडा.
50.	बकवास मत करो।	ಹರಟ ಬೇಡ.	हरट बेडा.

जारी (अगले अंक में).... / ಮುಂದಿನ ಸಂಚಿಕೆಯಲ್ಲಿ ಮುಂದುವರೆಯುತ್ತದೆ

हिंदी पोस्टर प्रतियोगिता

नकुल गोयल, गाजियाबाद, प्रथम पुरस्कार

कृति गुप्ता, गाजियाबाद, द्वितीय पुरस्कार

किशोर कुमार, गाजियाबाद, तृतीय पुरस्कार

अनिल शर्मा, गाजियाबाद, चतुर्थ पुरस्कार

साहित्यकार परिचय – डॉ धर्मवीर भारती

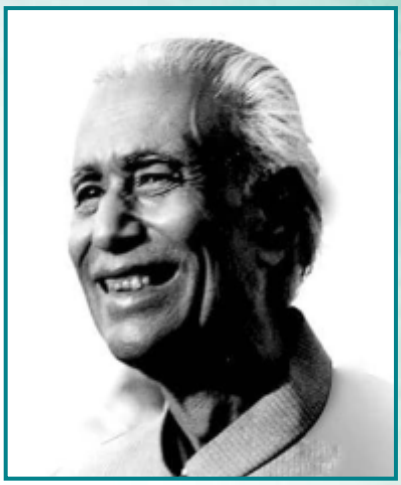

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसंबर 1926 को इलाहाबाद के अतर सुइया मुहल्ले में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का श्रीमती चंदादेवी था। स्कूली शिक्षा डी ए वी हाई स्कूल में हुई और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में। प्रथम श्रेणी में एम ए करने के बाद डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध–प्रबंध लिखकर उन्होंने पी–एच.डी. प्राप्त की।

घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद और विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट इन सबने उन्हें अतिसंवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे– अध्ययन और यात्रा। भारती के साहित्य में उनके विशद अध्ययन और यात्रा–अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है–

जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज़ जिन लोगों का है उनमें मैं अपने को पाता हूँ। – (ठेले पर हिमालय)

उन्हें आर्यसमाज की चिंतन और तर्कशैली भी प्रभावित करती है और रामायण, महाभारत और श्रीमद्भागवत भी। प्रसाद और शरतचंद्र का साहित्य उन्हें विशेष प्रिय था। आर्थिक विकास के लिए मार्क्स के सिद्धांत उनके आदर्श थे परंतु मार्क्सवादियों की अधीरता और मताग्रहता उन्हें अप्रिय थे। 'सिद्ध साहित्य' उनके शोध का विषय था, उनके सटजिया सिद्धांत से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। पश्चिमी साहित्यकारों में शीले और आस्करवाइल्ड उन्हें विशेष प्रिय थे। भारती को फूलों का बेहद शौक था। उनके साहित्य में भी फूलों से संबंधित बिंब प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

आलोचकों में भारती जी को प्रेम और रोमांस का रचनाकार माना है। उनकी कविताओं, कहानियों और उपन्यासों में प्रेम और रोमांस का यह तत्व स्पष्ट रूप से मौजूद है। परंतु उसके साथ–साथ इतिहास और समकालीन स्थितियों पर भी उनकी पैनी दृष्टि रही है जिसके संकेत उनकी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, आलोचना तथा संपादकीयों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानियों–उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ के चित्रा हैं। 'अंधा युग' में स्वातंत्रयोत्तर भारत में आई मूल्यहीनता के प्रति चिंता है। उनका बल पूर्व और पश्चिम के मूल्यों, जीवन–शैली और मानसिकता के संतुलन पर है। वे न तो किसी एक का अंधा विरोध करते हैं न अंधा समर्थन, परंतु क्या स्वीकार करना और क्या त्यागना है इसके लिए व्यक्ति और समाज की प्रगति को ही आधार बनाना होगा–

पश्चिम का अंधानुकरण करने की कोई जरूरत नहीं है, पर पश्चिम के विरोध के नाम पर मध्यकाल में तिरस्कृत मूल्यों को भी अपनाने की जरूरत नहीं है।

उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दुःख दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है। दुःख तो उन्हें इस बात का है कि आज 'जनतंत्र' में 'तंत्र' शक्तिशाली लोगों के हाथों में चला गया है और 'जन' की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी 'जन' की आशाओं, आकांक्षाओं, विवशताओं, कष्टों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास उन्होंने किया है।

डॉ धर्मवीर भारती को 1972 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनका उपन्यास 'गुनाहों का देवता' सदाबहार रचना मानी जाती है। सूरज का सातवां घोड़ा को कहानी कहने का अनुपम प्रयोग माना जाता है, जिस पर श्याम बेनेगल ने इसी नाम की फिल्म बनायी, अंधा युग उनका प्रसिद्ध नाटक है। इब्राहीम अलकाजी, राम गोपाल बजाज, अरविन्द गौड़, रतन थियम, एम के रैना, मोहन महर्षि और कई अन्य भारतीय रंगमंच निर्देशकों ने इसका मंचन किया है।

बी ई एल कथन गीत

देश की रक्षा अपना फर्ज़ है, भारत की है शान
बी ई एल ! बी ई एल !
भूमि जल हो या हो आसमान,
वीर जवानों के साथ खड़े हरदम,
अंधेरे में भी हम राह को रोशन करें
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !
दशा दिशा का पता बताएं शान से खड़ी रेडारें,
कंधों पर सजते हैं संचार यंत्र हमारे,
जहाज़ हो या अंतरिक्ष यान उनमें तंत्र हमारे,
शिक्षण हो या प्रसारण साथ हैं यंत्र हमारे,
जन जन का सहयोग करें हम,
मतदान को आसान करें हम,
नावू बी ई एल ! मेमू बी ई एल !
आपण बी ई एल ! नांगल बी ई एल !
आमरा बी ई एल ! हम हैं बी ई एल !
बी ई एल ! बी ई एल ! बी ई एल !

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स
BHARAT ELECTRONICS
QUALITY, TECHNOLOGY, INNOVATION

भूमि, समुद्र और आकाश को सुरक्षित बनाते हुए

अंतरिक्ष इलेक्ट्रानिकी

तटीय चौकसी प्रणाली

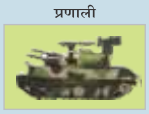
टैंक अपग्रेड

शस्त्र प्रणाली

डिजिटल मोबाइल रेसियो रिले के लिए सैटकॉम

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लि. (बीईएल), भारत की अग्रणी रक्षा इलेक्ट्रॉनिक कंपनी ने उत्पादों और प्रणालियों की व्यापक श्रृंखला के साथ देश के सशस्त्र बलों को सुसज्जित करने और सैनिकों को अपने निर्णायक मिशनों में सशक्त बनाने का लक्ष्य तय किया है। बहु-उत्पाद, बहु-यूनिट वाली कंपनी, बीईएल में अपनी सभी प्रक्रियाओं में विश्व-स्तरीय गुणता बनाए रखते हुए आद्योपांत, आवश्यकता के अनुरूप समाधान प्रदान करने की विशेषज्ञता है।

गृहभूमि सुरक्षा व स्मार्ट सिटी

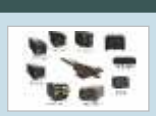
वैमानिकी

रेडार

इलेक्ट्रो ऑप्टिक्स

सैन्य संचार

असैनिक उत्पाद

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड

(रक्षा मंत्रालय के अधीन भारत सरकार का उद्यम)

पंजी. कार्यालय-आउटर रिंग रोड, नागवारा, बेंगलूरु-560 045, भारत

टॉल फ्री नं.-18·00 425 0433

सीआईएन नं.- L32309KA1954GOI000787

www.bel-india.in

राष्ट्र के रक्षा बलों को सशक्त बनाते हुए